SWĀMĪ RAMA TIRTHA

Last photo taken at Lucknow in 1905

ॐ

राम वर्षा.

द्वितीय भाग.

अर्थात

स्वामी राम तीर्थ जी महाराज के कुल भजन तथा कवितायें जो स्वामी जी के अपने लेखों तथा नोट बुकों में पाई गयीं

जिस को

स्वामी जी के परम शिष्य, आर, ऐस नारायण स्वामी ने उर्दू भाषा से हिन्दी टिप्पनी (अक्षरों) में उलथा कर के सर्व जनों के हित के लिये ९ अध्यायों में विभक्त कर विषयानुसार रचा

और

गोविन्द जी दाया भाई व अन्य केई प्रेमीजनों ने राजकोट (काठियावार) यन्त्रालय गणात्रा से छपवा कर प्रकाशित कीया

मुल्य प्रति जिल्द ०॥।)

सूचना.

राम वर्षा का मुल्य ०॥) प्रति भाग केवल मास फर वरी तक रहेगा। मास मार्च सन १९१२ से दाम ०॥=) प्रति भाग हो जायगा, अर्थात् दोनों भागों का मुल्य फिर १।) रूपय होगा ॥

प्रबन्ध कर्त्ता

विज्ञापन.

विदित हो कि स्वामी राम तीर्थ जी महाराज की अन्य पुस्तकें और उन के परम शिष्य स्वामी नारायण जी के अन्य संशोधित तथा रचित ग्रन्थ भी निम्न लिखित पते पर मिल सक्ते हैं:—

(१.) अंग्रेज़ी भाषा में स्वामी राम तीर्थ जी के कुल उपदेश सहित संक्षिप्त जीवन चरितके॥ पृष्ठ १६०० के लगभग। तीन भागों (जिल्दों) में विभक्त॥
मूल्य प्रति भाग विना जिल्द के १॥) १–८–०
„ सहित जिल्द के २) २–०–०

(२) श्री वेदानुवचन (उर्दू भाषा में) बाबा नगीना सिंह जी कृत और स्वामी नारायण जी से संशोधित॥ इस में उपनिषदो के गूढ़ रहस्य अति उत्तम तथा विचित्र रीति से स्पष्ट खोल कर वर्णित हैं
मूल्य विना जिल्द के १)....................१–०–०
„ सहित „ १॥)................१–८–०

(३) राम वर्षा उर्दू भाषा में भी छप रही है और स्वामी जी के कुल उपदेश अन्य भाषाओं में भी छपने वाले हैं। यह सब निम्न लिखित पते पर ही मिलेंगे॥

अमीरचंद

प्रेम धाम, बड़ा दरीबा—देहिली

४

NOTICE.

Books of special interest to brothers of religious trend :—

(1) Complete works of Swami Ramá Tirtha M. A. in 3 volumes, containing nearly 1600 pages and 6 photos (quite new publication)
Price cloth-bound each volume Rs. 2-0-0
" paper cover " 1-8-0

(1) Select teachings (lectures) of Swami Ráma with a brief sketch of life by Mr. Puran.
All those who cannot afford to purchase the above big work should read this small publication. Price paper cover—1-0-0

(3) Sri Shankaracharya's select works in English....................................1-8-0

(4) Aspects of the Vedànta..............0-12-0

For Catalogues &c, apply to

Amir Chand and sons

Premdhám

Bará Dareeba

DELHI.

शुद्धिपत्र.

शुद्धिपत्र. (प्रस्तावना का)

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	१२	२५। १५	२५। ५५
७	१६	(मौलवी महम्मद दीन जी)	(मौलवी महम्मद अली जी)
८	५	दश (१०)	सात (७)
९	१६	सर्वदा प्रथम	बहुधा प्रथम
१०	१	सारे पंजाब भर	अपने स्कूल भर
१०	१५	तमाम पंजाब भर	तमाम स्कूल भर
१८	९	नितान्त अपरिचित	अधिक परिचय नहीं रखते थे
१९	६	(संस्कृत) से तो हीन और बेखबर	संस्कृत से तो कम प्रेम और रुचि रखते हो
१९	९	यवन भाषा में तो चतुर	यवन भाषा में अधिक रुचि रखता हो.
१९	९	कुछ	अधिक
२१	७	संस्कृत से	संस्कृत-व्याकरण से
२१	९	संस्कृत भाषा से	संस्कृत व्याकरण से

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५७	७	मास मार्गशिर	मास पौष
७५	७	एक बड़े	एक बड़े
७५	नोट की पंक्ति २	केशो आश्रम	केश्याश्रम

———()———

शुद्धि पत्र भजनों का

४०४	१२	बज़ुर्ग	बु.ज़ुर्ग
४११	१२	घुनता	धुनना
४३२	८	* गेब से	* .रोब से
४३२	नोट की पंक्ति ३	* .गुस्सा	दबदबा
४३९	१०	मलिया भेट	मलिया मेट
४४१	३	* क़दर	क़दर
,,	६	क़दम	* क़दम रंजा
४४७	नोटकी पंक्ति २	१७ अबर	१७ अम्बर ६८
	११	ज़ात बेहत	ज़ात बेहत
४६८	३	कटल	कुटल

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४७८	६	अंजव	.अंजब

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४८०	नोट की पंक्ति २	प्रमाणु	परमाणु
४९८	नोट	समद्र	समुद्र
४९७	१	पर्दा	पर्दा
५०१	६	दो पंक्ति रह गयीं	हर दीदाः शोलाः बार है! बिजली है खारा .आम ‖ वह तालियों की गूंज में यक दिल हुए तमाम ।
५०२	नोट	१४ दिल...१५...	१३ दिल...नम्बर १५ सारा काट दो
५०४	१	चव रंग हो दिलखाह	जब रंग हो दिलख्वाह (२)
५०६	२	हवासे .आम	हवासे .आम
,,	६	शास्त्र,युक्ति	(१) शास्त्र, युक्ति
,,	नोट	ऐलो	ऐ लो
५०७	३	हैं आव	हैं आब
५०८	१०	मुसत्व्वरं	मुत्सव्वर
५०८	नोट, ४	अरु दर्या	और दरया

शुद्धिपत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५१०	८	१९ अमि	१९ केन्द्र
५१२	१३	सुली	सूली
५२४	१४	ओर ही	औंर हां
५२७	७	५ पनाह (आश्चर्य)	५ पनाह, आश्रय
५२८	११	पोपन	पोषण
५३५	९	जाक दर जौक़	जौक दर जौक़
५५५	९	क़ाब्र	क़ाबू
५५६	१४	५७ वाणि	७७ वाणि
५६१	९	बनीये	बंनिये
५७२	१६	२७ माप	२७ नखरे टखरे
५७५	१४	ज़ ॥ ने	ज़माने
५७६	९	९ राहत	१० राहत (सब के ऊपर १ : और बढ़ा दो)
५८०	१०	काक शास्त्र	कोक शास्त्र
५८९	१०	पौद पौदे	पौदे पौदें
५९०	११	३८ मुर्दें	३८ ज़र्दें

प्रस्तावना

अर्थात

स्वामी रामतीर्थजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र.

इस भजन पुस्तक में स्वामी राम तीर्थजी महाराज की अन्दरूनी ज़िन्दगी अर्थात आन्तरिक मानासिक अवस्था तो उन के मस्ती भरे भजनों से फूट २ कर स्वतः प्रकट हो रही है परन्तु उन की शारीरिक ज़िन्दगी अर्थात बाह्य जीवन चरित्र का इन (भजनों) से कुछ पता नहीं मिलता और न यह स्पष्ट होता है कि स्वामीजी को यह अंतिम दशा अर्थात निजानन्द का अनुभव किन २ अवस्थाओ के बीच में गुज़र कर अथवा किन २ उपायों से प्राप्त हुई ॥ इस त्रुटि को पूरा करने के अर्थ उचित समझा गया कि इस प्रस्ताव में स्वामी जी का संक्षेप से जीवन चरित भी दीया जाय जिस से राम वर्षा के पाठक कुछ शिक्षा ग्रहण कर के लाभ उठा सकें ॥

विक्रमीय संवत १९३०, कार्त्तिक शुक्ल १, बुधवार, तदनुसार

२२ अक्तूबर सन् १८७३ ईस्वी को स्वामी जी के शरीर का जन्म पञ्जाब देश, ज़िला गुजरां वाले के मुरारी वाले ग्राम में एक उत्तम गोस्वामी कुल में हुआ था। यह वही कुल है जिस में गोस्वामी तुलसीदासजी रामायण के कर्त्ता उत्पन्न हुए थे। स्वामी रामजी उन्हीं के वंशज थे। यह कुल पहले से ही अपनी प्राचीन पवित्रता के लिये प्रसिद्ध था मगर अब स्वामी राम तीर्थ जी ने इस में जन्म ले कर इस की प्रतिष्ठा और भी बढ़ा दी॥

स्वामी जी के पूज्य पिता का नाम गोस्वामी हीरानन्द जी था। स्वभाव से यह बहुत सरल सीधे सादे और कर थे। स्वामी जी के जन्म लेने के थोड़े ही दिन पश्चात् उन की परम सुशीला माता का देहान्त होगया। तदनन्तर उन के पिता की प्रेम भरी बहिन अर्थात स्वामी जी की बुआ ने उन का पालन पोषण किया॥ उत्पत्ति काल में माता का दुग्ध न पाने के कारण स्वामी जी बाल्यावस्था में बहुत दुर्बल और कृश शरीर थे, परन्तु पीछे से यही शारीरक शक्ति हीन बालक तीर्थराम जी जिस भान्ति आत्मिक बल में

प्रबल होगये उसी प्रकार शारीरक स्वास्थ्य और पुष्टता में भी इतनी उन्नति कर गये कि तीस (३०) मील दिन भर में पर्वतों पर चलना उन के लिये बालकों का सा खेल होगया ॥ और हिमालय तथा अन्य शीतल स्थानों में बिलकुल नग्न या केवल एक वस्त्र में रहना किञ्चित् मात्र भी उन्हें कष्ट न देसका ॥

स्वामी जी की बुवा (अर्थात उन के पिता की बहिन) बड़ी धार्मिक वृत्ति रखती थीं, और नित्य प्रति मन्दिरों, शिवालों और कथा स्थानों में जाया करती थीं ॥ जब जब उत्तम स्थानों में जातीं बालक तीर्थ रामजी को भी अपने साथ ले जाया करतीं ॥ बुवा जी के प्रेम भरे व धार्मिक सुभाव ने बालक तीर्थ रामजी के चित्त पर ऐसा उत्तम असर डाला कि वह अपनी बाल्यावस्था में ही उदार चित्त होगये, और नित्य मन्दिरों तथा कथा स्थानों में जाने से ईश्वर भजन और धर्म्म में लीन तथा युक्त होने लग पड़े। इतनी छोटी सी आयु में ही तीर्थ राम जी को शङ्ख ध्वनि अथवा प्रणव ध्वनि मोहने अर्थात आकर्षण करने लग पड़ी ॥ एक समय स्वामी जी ने अपने

मुखारविन्द से स्वयं यह वर्णन कीया कि:—" बाल्यावस्था में ही राम के चित्त को प्रणव या शंख की ध्वनि अपनी ओर बलपूर्वक खैंच लिया करती थी, वरन् यहां तक अपना असर डालती कि अगर राम रो भी रहा हो तो झट उस के सुनने से चुप होजाया करता था " ॥

अपने एक अङ्ग्रेज़ी भाषा के व्याख्यान में स्वामी जी ने अपने विषय में इस प्रकार वर्णन किया है कि:—" तीर्थ राम के दादा जी ज्योतिःशास्त्र में बड़े निपुण थे, जब राम (बालक तीर्थराम) का जन्म हुवा तो वह जन्म लग्न देखते ही रोये और हंसे ॥ जब इस हंसने और रोने का कारण पूछा गया, तो कहने लगे कि 'रोये हम इसलिये हैं कि यह बालक ऐसी घड़ी उत्पन्न हुवा है कि या तो यह स्वयं नहीं रहेगा और या अपनी माता पर भारी होने के कारण अपनी परम सुशीला जननी को हाथ से जल्द खो देगा। और हंसे हम इसलिये हैं कि यदि यह बालक जीता रहा तो ऐसा महात्मा और उपकारी होगा कि हमारे सारे कुल को तारेगा औ इस की

अपनी कीर्ति भी देश, देशांतर तथा लोक, परलोक में तीव्र वेग से फैलेगी ' ॥ ईश्वर की कुछ ऐसी ही इच्छा थी, या भारत वर्ष के कुछ भाग्य ही ऐसे थे कि राम की परम सुशीला माता तो एक, दो मास के भीतर ही भीतर परलोक सुधार गयीं और स्वयं राम अकेला रह गया। कुछ काल तक तो राम गाये के दूध (दुग्ध) से पला, और कुछ समय तक बुवा ने अपनी प्रेम भरी गोद में रख कर इस का पालण पोषण किया ॥ "

इस स्थान पर स्वामी जी का जन्म पत्र भी दिया जाता है, ताकि पाठकों को विदित होजाये कि स्वामीजी के पूर्व जन्म के संस्कार भी कैसे उत्तम और प्रबल थे कि जो बाल्यावस्था में ही अपना रंग दिखाने और जमाने लग पड़े ॥

विक्रमीय संवत् १९३०, शाके १७९५, कार्तिक शुक्ल १, प्रविष्टे ८, बुधवार २५। १९ स्वाति नक्षत्र मीन लग्न, तदनुसार सन १८७३ ईसवी, तारीख २२ अक्तूबर की शुभ घड़ी में गुसाई राम लालजी के लड़के गुसांई हीरानन्दजी के घर में बालक (तीर्थ राम)

का जन्म हुआ जिस का जन्म नाम स्वाति नक्षत्र में उत्प[illegible]

कारण ताराचंद रक्खा गया था ॥

मेष १ राहु	५ सिंह	९ धन्य मंगल
२ वृष	६ कन्या शुक्र, वृहस्पति	१० मकर शनि
३ मिथुन	७ तुला सूर्य, चन्द्रमा, बुध, केतु	११ कुम्भ
४ कर्क	८ वृश्चक	१२ मीन

(नोट) यह जन्म पत्र ज्योतिःशास्त्र के एक पूर्ण वेत्ता (पं० लाभ चन्द जी) को दिखलाया गया। उन्हों ने निम्न लिखित दश (१०) फल वर्णन कीये:—

(१) अति विद्वान हो।

(२) २१, या २२ वर्ष की आयु में परमार्थ का अधिक विचार हो।

(३) इष्ट अद्भूत हो, जैसें ओङ्कार।

(४) विन्यापत (देशान्तर) भी जावे।

(५) राज दरबार का नमस्कार होकर रहे नहीं।

(६) शरीर रोग ग्रस्त रहे या किसी अङ्ग में न्यूनता (नुक़्स) हो।

(७) पिछली अवस्थामें काम (विषय वृत्ति) नितान्त नष्ट हो, अर्थात काम रहित हो जावे।

(८) दो पुत्र अवश्य होने चाहियें।

(९) अल्प आयु हो, अर्थात २८ से ३५ वर्ष तक।

(१०) यदि ब्राह्मण हो तो मृत्यु जल में, और यदि क्षत्री हो तो मकान से गिर कर॥

मुराली वाले ग्राम में (जो स्वामी जी की जन्म भूमि है) एक प्राइमरी स्कूल बहुत दिनों से स्थापित था। तीर्थ राम जी बहुत ही छोटी अवस्थामें इस पाठशाला में प्रविष्ट हुए। शरीर के छोटे और पढ़ने तथा स्मरण शक्ति में अधिक चतुर देख कर पाठशाला (उस स्कूल) के बड़े अध्यापक (मौलवी महम्मददीन जी) इन पर बड़े प्रसन्न

रहते थे। स्कूल की पुस्तकों के अतिरिक्त तीर्थ राम जी ने प्राइमरी में ही गुलिस्तान् और बोंस्तान् फारसी ज़ुबान् में कण्ठाग्र करलीं। प्राइमरी स्कूल की परिक्षा पास करने के पश्चात् तीर्थ राम जी आगे पढ़ने के लिये अपने पिता जी के साथ कुजरां वाले नगर में गये। यह नगर मुराली वाला ग्राम से लग भग दश (१०) मील की दूरी पर है॥ यहां आकर तीर्थराम जी मिडल हाई स्कूल में प्रविष्ट हुए। इस समय इन की आयु लगभग दश वर्ष की थी॥ इतनी छोटी अवस्था में बालक को विना किसी संरक्षक के अकेला छोड़ना पिता जी से उचित न समझा गया, इसलिये पिता जी अपने एक परिचित मित्र भगत धन्ना राम जी के निरीक्षण (निगहबानी) में, उन के समीप एक छोटे से मकान में उन्हें आगे पढ़ने के लिये छोड़ आये॥

यह धन्ना भगत जी, उस नगर में बड़े सज्जन पुरुष और धर्मात्मा माने जाते थे। नित्य प्रति उन दिनों योग वासिष्ट की कथा किया करते थे। कथा ऐसे उदार चित्त और प्रेम में रंगे हुए हृदय से होती था कि सब श्रोतागण समाधिस्थ हो जाया करते थे॥

पढ़ने में कुछ समय निकाल कर तीर्थ राम जी भी उस कथा को दत्त चित्त हो सुना करते थे॥ स्कूल की पढ़ाई से अतिरिक्त जो भी समय मिलता, उसे तीर्थ राम जी उन्हीं महापुरुष के सत्संग में व्यतीत करदेते थे॥ भगत जी की प्रेम भरी और सुरीली कथा, उन की नित्य संङ्गति और उपदेशों ने बालक तीर्थ राम जी के चित्त पर कुछ ऐसा प्रभाव डाला कि कुछ समय के लिये वह सारे के सारे भगत जी के हो लिये। और तन, मन, धन से उन की सेवा प्रेम पूर्वक करने लगे॥ वह अपने हृदय में भगत जी की यहां तक प्रतिष्ठा करते थे कि कोई भी अपना काम बिना उन की आज्ञा के कदाचित न करते॥ भगत जी भी तीर्थ राम जी की श्रद्धा भक्ति और सेवा से इतने प्रसन्न रहते थे कि वह उन्हें अपना ही अङ्ग तथा रूप मानते और उन से अत्यन्त स्नेह करते थे॥

साथ इस धार्मिक उन्नति के तीर्थ राम जी अपनी पढ़ाई (अध्ययन) में भी बड़े चतुर और अद्वितीय रहते थे। स्कूल की सब श्रेणियों में सर्वदा प्रथम ही रहे। मिडिल और इन्स्ट्रैन्स की परीक्षा

में सारे पञ्जाब भर में प्रथम (अव्वल) रहे थे। इन्ट्रैन्स कक्षा (जमाऽत) के पास करने के पीछे तीर्थ राम जी के पिता उन्हें आगे पढ़ाना नहीं चाहते थे, अतः प्रति दिन उन को किसी दफ़तर में नौकरी करने के लिये विवश (मजबूर) करने लगे॥ तीर्थ राम जी इस छोटी (१९ वर्ष की) आयु में इतनी जल्दी किसी दफ़तर की नौकरी करने में अपनी वास्तविक उन्नति न देखते थे, इसलिये इस विषय में अपने पिता जी की एक न मानी॥ इस पर पिताजी बड़े क्रोध को प्राप्त हुए, और १९ वर्ष के युवक तीर्थ राम जी को घर से बाहर निकाल दीया, और आगे पढ़ाने के लिये एक कौड़ी भी न देने का सङ्कल्प कर लिया॥ इस तरह से असहाय (बेमदद) तीर्थ राम जी, केवल ईश्वर पर निश्चय और आश्रय (भरोसा) रखते हुए, शान्त चित्त से घर से निकलकर, आगे पढ़ाई आरम्भ करने के अर्थ लाहौर नगर में आ गये॥

तमाम पञ्जाब में इन्ट्रैन्स की परीक्षा में तो प्रथम रहे ही थे इस लिये अपनी श्रेणी के सब विद्यार्थियों से अधिक छात्र वेतन

(वज़ीफा) इन के भाग में आया हुआ था, इस वृत्ति (वज़ीफे) की सहायतासे युवक तीर्थ राम जी लाहौर के 'फोरमैन क्राश्चियन' (मिशन) कालज में भरती हो गये। और ऐफ़, ए, कक्षा की पढ़ाई पढ़ने लगे॥ शारीरक निर्वाहर्थ एक, दो प्राइवेट टयूशन (अध्यापक्ता का काम) भी कर लिये ताकि पढ़ने में कुछ विक्षेप न आ पड़े॥

अपनी ऐसी दशा में भी तीर्थ राम जी ऐफ़, ए की परीक्षा में प्रथम रहे, और अब पहिले से भी अधिक छात्र वृत्ति (वज़ीफा) पाने लगे॥ इस वृत्ति की सहायता से फिर आगे बी, ए की कक्षा में पढ़ने लगे॥ इस समय के लगभग तीर्थ राम जी के पिताजी लाहौर में आकर उन की अर्धङ्गी को भी उन के पास सौंप गये और उस के पालण पोषण का कुल ज़िम्मा तथा अधिकार उन के ऊपर ही छोड़ गये थे जिस से अब खर्च पहिले से भी विशेष बढ़ गया। अब केवल वृत्ति (वज़ीफे) से निर्वाह होना अति कठिन था, इस लीये राय बहादुर लाला मेला राम (लाहौर के रईस) के दोनो सुशील पुत्रों के पढाने की डियोटियां लेलीं। इन दिनों एसी अवस्था

के प्राप्त होने पर भी तीर्थ राम जी के चित्त की जो दशा तथा वृत्ति रहती थी वह उन के पत्रों से, जो उन्हों ने उन दिनों अपने पूजनीय भगत धन्ना राम जी के पास भेजे थे, स्पष्ट प्रकट हो रही है। दृष्टान्त के तौर पर एक या दो पत्रों का यहां उल्लेख कीया जाता है :—

९ फरवरी सन् १८९४ (११ बजे रात्रि)

भगवन्,

आप का एक कृपा पत्र इस समय और मिला! निहायत खुशी हुई! मैं आज कल पांच बजे सवेरे सो कर उठता हूं और सात बजे तक पढ़ता रहता हूं, फिर शौच आदि से निवृत्त होकर स्नान करता हूं, और व्यायाम (कसरत) करता हूं। उस के बाद पंडित जी की तर्फ जाता हूं! रास्ते में पढ़ता रहता हूं। वहां एक घंटे के बाद रोटी खा कर उन के साथ गाड़ी में कालिज से डेरे आते समय रास्ते में दूध पीता हूं। डेरे पर कुछ मिनट ठैहर कर नदी की ओर जाता हूं। वहां जाकर नदी किनारे पर कोई आध घंटे के

लगभग टहलता रहता हूं, वहां से वापस आती बार सारे शहर के गिर्द बाग में फिरता हूं। वहां से डेरे आन कर कोठे पर टहलता रहता हूं! इतने में अन्धेरा होजाता है। (मगर यह याद रहे कि मैं चलते फिरते पढ़ता बराबर रहता हूं), अन्धेरा होते कसरत करता हूं और लैम्प जला कर सात बजे तक पढ़ता हूं। फिर रोटी खाने जाता हूं और प्रेम तर्फ भी जाता हूं। वहां से आन कर कोई १० या १२ मिनट अपने मकान में कसरत करता हूं। फिर कोई १०॥ (साढे दस) बजे तक पढ़ता हूं। मेरे तजरुबे में यह आया है कि अगर हमारा मेदा ऐन सिहत की हालत में रहे तो हमें कमाल दर्जे का सरूर (आनन्द) फरहत (सुख) दिल का यक़सू होना (चितकि एकाग्रता) परमेश्वर की याद और पाक बातनी (अन्तःकरण की पवित्रता) हासिल होती है। और बुद्धिः और धारणा शक्ति निहायत तेज़ होती है! अव्वल तो मैं खाता ही बहुत कम हूं, दोयम जो खाता हूं खूब पचा लेता हूं॥

राम

दूसरा पत्र,

५ जुलाई सन् १८९४।

महाराज जी। परमेश्वर बड़ा ही चंगा है। मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। आप उस के साथ सुलह (मेल) रक्खा करो। आप के साथ जो कभी २ ज़रा सख़्ती से पेश आता है यह उस के विलास हैं। वह आप के साथ हंसी मखौल करना चाहता है। हमें चाहिये कि हंसने वालों से खफा न हो जायें। किसी और खत (पत्र) में मैं आप की खिदमत में उस की कई बातें .अर्ज़ करूंगा। यह खत मैं मेज़ पर रख कर लिख रहा हूं। यहां सुबह थोड़ी सी खांड गिर पड़ी थी। उस खांड के पास चार पांच कीड़ियां इकट्ठी हो रही हैं और वह सब मेरी क़लम की तर्फ और हर्फों की तर्फ तक रही हैं। और आपस में बड़ी बातें कर रही हैं॥ जितनी बात चीत मैं ने उन से सुनी है वह .अर्ज़ करता हूं। मगर पेहले मैं यह .अर्ज़ करना चाहता हूं कि गो मेरा खत (लिखना) बहुत ही खराब और नाक़िस है मगर उन कीड़ियां की निगाह में तो चीन के

नक़शो निगार से कम नहीं ॥ जो कीड़ी सब से पैहले बोली वह बड़ी अज्ञान थी । अभी वह नन्हीं (बहुत छोटी) ही थी । पैहिली कीड़ी कहती है :—देख बैहिन ! इस कलम की कारीगरी ! कागज़ पर क्या गोल २ घेरे डाल रही है । इस डाली हुई लकीरों यानी हरफों को सब लोग बड़ी प्रीति से अपनी आंखों के पास रखते हैं (यानी पढते हैं)। और जिस कागज़ पर कलम निशानियां करे (यानी लिख दे है) उस कागज़ को लोग हाथों में लिये फिरते हैं। (यह कलम) कागज़ पर गोया मोती डाल रही है। क्या रंगामेजियां हैं ?। य . बाजे २ हरफ तो खास हमारे बेटों (यानी कीड़ीयां) की तसवीरों की तरह मालूम होते हैं। क्या ही खूबसूरत हैं।

कलम गोयद कि मन शाहे जहानम् ।

कलमकश रा बदौलत मी रसानम ॥

(अर्थ :—कलम कहती है कि मैं जहान की बादशाह हूं और कलम के चलाने वाले को दौलत तक पहुंचा देता हूं ॥)

इस क़लम में जान नहीं है, मगर हमारे जैसे जानदारों को बीसियों दफ़ा पैदा कर सक्ती है"। इतना कह कर पहिली कीड़ी ख़ामोश (चुप) होगयी ॥ अब दूसरी बोली। यह कीड़ी पहिले से कुछ बड़ी थी और उस से ज़ियादह बसारत (दृष्टि) रखती थी, यानी उस की आंखें तेज़ थीं ॥ दूसरी कीड़ी:—"मेरी भोली बहिन! तू देखती नहीं है कि क़लम तो बिलकुल मुर्दाः चीज़ है। वह तो बिलकुल कुछ काम नहीं कर सक्ती। दो उंगलियां उसे चला रही हैं। जितनी सिफ़त तू ने की है यह सब उंगलियों पर आयद होनी चाहिये" ॥ अब एक इन दोनों से बड़ी कीड़ी बोली:— "यह तुम दोनो अभी अनजान हो, उंगलियां तो पतली २ रस्सियों की तरह हैं। वह क्या कर सक्ती हैं। यह मोटी बांह इन सब से काम ले रही है" ॥ अब इन कीड़ियों की मां बोली:—यह सब क़लम, उंगलियां, बांह, बाज़ू, वग़ैराः इस बड़े मोटे धड़ के आश्रय से काम कर रहे हैं। यह सब तारीफ़ इस धड़ को मौज़ूं है" ॥ इतना कह कर कीड़ीयां जब चुपकी हुई तो मैं ने इन से यह कहा:—

"ऐ मेरे दूसरे स्वरूपों ! यह धड़ भी जड़ रूप है। इस को भी एक और चीज़ का आश्रय है, यानी जान (प्राण) का। इस लिये तारीफ़ उस जान की शान में वाजिब है" ॥ मैं ने इतना कहा, तो मेरे दिल में आप की तर्फ़ से आवाज़ आई। वे आप के वचन भी मैं ने उन कीड़ियों को सुनाये ॥ उन का खुलासा दर्ज करता हूं। "आदमी की जान से परे भी एक वस्तु है, अर्थात परमात्मा। उस वस्तु के आश्रय सब भूत चेष्टा करते हैं, दुन्या में जो कुछ होता है उसी की मरज़ी से होता है। पुतलियां बग़ैर तार वाले के नहीं नाच सक्तीं। बांसुरी बग़ैर बजाने वाले के नहीं बज सक्ती। इसी तरह से दुन्या के लोग बग़ैर उस के हुक्म के कोई काम नहीं कर सक्ते ॥ जैसे तल्वार का काम गो मारना है मगर वह तल्वार बग़ैर चलाने वाले के नहीं चलसक्ती। इसी तरह से गो बाज़ लोगों के स्वभाव बहुत ही खराब क्यों न हों जब तक उन्हें परमेश्वर न उकसाये वह हमें तकलीफ़ नहीं पहुंचा सक्ते ॥ जैसे बादशाह के साथ सुलाह करने से तमाम अमला हमारा दोस्त बन जाता है, इसी तरह से परमात्मा को राज़ी रखने से तमाम खल्क़

हमारी अपनी होजाती है" ॥ (फक्त)=राम

इन्ही दिनों में युवक तीर्थरामजी बी. ए. में पढ़ते थे। अपनी श्रेणि (जमाअत) में सर्वदा प्रथम रहते थे ॥ सहपाठी (अपनी श्रेणि के लड़के) इन को गोस्वामी तीर्थ रामजी करके प्रतिष्ठा से पुकारा करते थे। थोड़े काल पश्चात् विशेष मेल मिलाप के कारण इन के मित्र इन्हें गोंस्वामी तीर्थ राम के स्थान पर केवल गुसाईं जी करकें पुकारने लगे ॥ इस से इन का नाम गुसाईं जी ही पड़ गया ॥ इस समय तक तीर्थ रामजी संस्कृत भाषा से नितान्त अपरिचित थे, केवल थोड़ी हिन्दी जानते थे। मगर फारसी ज़ुबान में अति निपुण थे, इसलिये कालेज के मौलवी साहिब इन पर सर्वदा अति प्रसन्न रहते और इन की स्तुति में घंटों व्यतीत कर देते थे॥ मौलवी जी (फारसी भाषा के प्रोफेसर जी) की यह नित्य स्तुति और तीर्थ राम जी की फारसी की योग्यता (जो कालेज में अति प्रसिद्ध अर्थात मशहूर हो रही थी) कालेज के कुछ लड़कों को जो कि संस्कृत भाषामें निपुण और संस्कृत की उन्नति के बड़े इच्छुक

(ख्वाहा) थे, बड़ा दुःख दिया करती थी॥ उन में से कुछ एक प्यारों से तो, एक समय बिलकुल रहा न गया और वह तीर्थ राम जी के पास आकर यूं कटाक्षों और बोली तानों से बातें करने लगे:— "देखीये! आप हो तो ब्राह्मण और गोस्वामी (यानी श्री तुलसी दास जी के वंश से उत्पन्न हुए २) परन्तु कितने खेद की बात है कि आप अपनी कुल की असली भाषा (संस्कृत) से तो हीन और बेखबर हो और यवन भाषामें दिन रात यत्न करते और नाम पा रहे हो। क्या ब्राह्मण के वास्ते यह मरण तुल्य नहीं कि वह यवन भाषा में तो चतुर हो और अपनी असली मात्रि भाषा का कुछ ज्ञान न रखता हो?। अगर उत्तम कुल ब्राह्मणों में भी केवल यवन भाषा (फारसी) का प्रचार और संस्कृत भाषा का अभाव होने लग पड़ेगा, तो ब्राह्मण कुल का नाश जल्द होने लग जायगा। और अपने कुल नाशक आप जैसे ही ब्राह्मण होंगे, जो संस्कृत भाषा के सीखने में तो कुछ समय और चित्त न दें और सारी जिन्दगी और बल केवल यवन भाषा के ही सिखने में लगावें"॥ इस प्रकार के सखत कटाक्षों और अपने मित्र प्यारों की बोली तानों ने तीर्थ

राम जी के दिल को अत्यन्त ज़खमी (घायल) कर दीया। और घायल हुआ दिल अपने ज़खमों को धोने और मिटाने की खातर तीर्थ राम जी से अपने मित्रों के साहने यूं प्रणय कराने लगा:—"कि: अच्छा मैं ब्राह्मण का पुत्र नहीं हूंगा यदि मैं फारसी भाषा को बी. ए. की परिक्षामें लूं, और यदि इसी श्रेणीमें कल से ही संस्कृत सीखने न लग पड़ूं॥ पस कल से तीर्थराम संस्कृत भाषा का ही अध्ययन आरम्भ कर देगा और इस साल बी. ए. की परिक्षा में फारसी के स्थान पर संस्कृत ही दूसरी भाषा (Second Language) लेगा"॥ यह प्रणय कीया जाना ही था कि दूसरे दिन गोस्वामी तीर्थ राम जी ने फारसी भाषा को छोड़ने की अर्ज़ी और संस्कृत भाषा की श्रेणी (फरीक़) में दाखल होने की दरख्वास्त झट अपने कालेज के परिन्सिपल साहिब के पास भेज दी॥ यह खबर सुनते ही कालेज में एक कुलाहल (बड़ा शोर) सा मच गया, और खासकर फारसी भाषा के प्रोफेसर साहिब (मौलवीजी) के चित्त पर बड़ी सखत चोट वज्रवत पड़ी। मौलवी साहिब ने तीर्थ राम जी को इस चेष्टा से मुड़ने के लिये बहुत समझाया बुझाया, परन्तु उन्हों ने मौलवी साहिब की

एक न सुनी। अपनी ज़िद पर स्थायी (क़ायम) रहे ॥ तीर्थ राम जी तो संस्कृत पढ़ने की ओर झुके, पर संस्कृत की श्रेणी में पंडित जी महाराज उन्हें प्रविष्ट करने को तय्यार न हुए ॥ पंडितजी ने तो उलटा परिन्सिपल साहिब के पास जाकर यह शकायत की:—
"कि इस लड़के (तीर्थ राम) ने अभी तक अक्षर भी संस्कृत व्याकरण का नहीं पढ़ा है, और शुरु से आज तक फारसी भाषा ही पढ़ता आया है, भला ऐसे संस्कृत से बिलकुल न खबर रखने वाले विद्यार्थी को मैं अपने हाँ कैसे प्रवेश (दाखल) कर लूं, और न ऐसा संस्कृत भाषा से हीन विद्यार्थी बी. ए. की संस्कृत श्रेणीमें प्रविष्ट किया जाना चाहिये। इस से तो अन्त में मेरी बहुत अपकीर्ति (बदनामी) होगी" एसा सुनने पर परिन्सिपल साहिब ने अपनी कोई राये प्रकट न की और पंडित जी महाराजा के ऊपर ही इस मुआमले का फैसला छोड़ दीया ॥

पंडित जी के ऐसे तकरार और फैसलों से तीर्थ राम जी एक बड़े उलझन में फंस गये। इधर से तो पंडित जी अपनी संस्कृत श्रेणी (जमाऽत) में उन को प्रविष्ट होने न दें, और उधर अपने

प्रणय के कारण अपनी पैहली फारसी भाषा की श्रेणी में जाने को तीर्थ राम जी का दिल तय्यार न हो, और वहां जाते भी वह शरमावें ॥ इस प्रकार एक दो सताहा तक तो तीर्थ राम जी न फारसी की श्रेणी में जा सके और न संस्कृत श्रेणी में ही प्रविष्ट हो सके। अपने उन्ही मित्रों से, कि जिन्हों ने संस्कृत पढ़ने के लिये उकसाया था, उनसे घर पर खूब मन चित्त से संस्कृत पढ़ने लगे॥ इस संस्कृत अध्ययन में तो कुछ दिन तक तीर्थरामजी अपना सारा समय खर्च करने लगे। और अपने मित्रों से संस्कृत का बी. ए. कोर्स (रघु-वंश) और अन्य छोटी व्याकरण की पुस्तकें पढ़ कर दृढ़ चित्त से याद करने लगे॥ थोड़े समय पश्चात जब तीर्थरामजी ने रघुवंश का कुछ भाग कण्ठस्थ कर लिया और संस्कृत के प्रोफैस्सर साहिब को जा कर अपने आप सुनाया, तो पंडित जी अति विस्मित और आश्चर्यमय होगये, और कहने लगे–"कि हमें नितान्त (बिल्कुल) पता नहीं था कि तुम इस क़दर ..... शक्ति वाले (ज़हीन) हो, जो थोड़े ही दिनों में रघुवंश को इतना याद कर के ले आये कि जितना विद्यार्थियों ने अपनी बी. ए. की श्रेणी में आज तक कंई

मास के भीतर पढ़ा है। शाबाश !, आज ही मैं परिन्सिपल साहिब को आप की विद्वत्ता (काबलीयत) की स्तुति (तारीफ) करता हूं और अपनी भूल दर्शा कर आप को संस्कृत श्रेणि में प्रवेश करने की आज्ञा ले आता हूं" इस तरह से कुछ समय पीछे तीर्थ राम जी का नाम संस्कृत श्रेणिमें दर्ज होगया और वह बड़ी लग्न से संस्कृत को पढ़ने लगे। वरन अन्य भाषाओं की निस्बत अपना बहुत सा समय उन्हों ने केवल इसी (नवीन भाषा) के अध्ययन में अर्पण करना आरम्भ कीया ॥

उस साल बी-ए-की परीक्षा बहुत ही कठिन हुई थी। विशेष करके अंग्रेजी का परचा इतना कठिन था कि सैंकड़ों उत्तम २ विद्यार्थी परीक्षा पास न कर सके ॥ तीर्थ राम जी को अपना प्रण निभाने के अर्थ बहुत सा समय केवल संस्कृत भाषा की तय्यारी में खर्च करना पड़ाथा जिस से अन्य भाषाओं (विषयों) में शायद पूरी २ तय्यारी न होसकी। इसलिये वह भी इस समय केवल चार नम्बरों की खातर शायद अङ्ग्रेजी में रह गये ॥

पंजाब विश्व विद्यालय (यूनिवर्सिटी) के कुछ मैम्बरों ने जब

तीर्थ राम जी के सब परचों के नम्बरों को जोड़ करके देखा, तो बड़े आश्चर्य होकर कहने लगे कि "अगर इस विद्यार्थी को अंग्रेजी के परचे में केवल चार नम्बर और मिल जाते तो यह फिर पंजाब भर में प्रथम रहता" ॥ परीक्षा पास न होने का दुःख तो तीर्थ राम जी को हो ही रहा था, परन्तु इस खबर के सुनते ही उन के दिल पर और सखत चोट लगी। जिस किसी अन्य ने भी यह सुना, वह भी अति दुःख को प्राप्त हुवा ॥

जब विश्व विद्यालय (यूनीवर्सटी) के चन्द पुरुषों के दिल पर तीर्थ राम जी जैसे चतुर और कुल परीक्षा के परचों में सब से अधिक नम्बर रखने वाले विद्यार्थी के फेल होने से सखत चोट लगी तो उन सब ने अकट्ठे मिलकर भविष्यत काल के लिये यह नियम यूनीवर्स्टी से पास करा दीया कि " जिस किसी विद्यार्थी के किसी परचे में नियत नम्बरों से पांच नम्बर घट हों अथवा कुल परचों के नम्बरों के जोड़ (aggregate) में पांच नम्बर कम हों, तो वह विद्यार्थी झट फेल न कीया जाये। बलकि: उसे दुबारा विचार के लिये: (Under consideration अंडर कन्सिडरेशन) रक्खा जाये।"

ऐसा नियम पास होजाने से भविष्य काल के लिये तो विद्यार्थियों को कुछ सुगमता होगयी, परन्तु वर्तमान काल के लिये कोई नियम ऐसा मुकर्रर होने न पाया कि जिस से थोड़े नम्बरों से फ़ेल हुए २ विद्यार्थी अभी ही पास कीये जा सकें। इस तरह से तीर्थ राम जी को उसी श्रेणि (बी-ए) में रहना पड़ा और अपने छात्र वेतन (वज़ीफ़े) से भी रहित होना पड़ा ॥ उस समय में जो कुछ उन के दिल में गुज़रता होगा उस का अन्दाज़ा पाठक अपने दिल में खुद लगा सक्ते हैं या तीर्थ राम जी ही स्वयं पूर्ण रीति से बता सक्ते हैं। लेखक की लेखनी तो भला कैसे पूरा २ दर्शा सक्ती है॥ परन्तु जो कुछ इस विषयमें स्वामीजीने अपने मुखारविन्द से अपनी संन्यास अवस्था में लेखक को वर्णन कीया था वह पाठकों के लिये नीचे दर्ज कीया जाता है:—

"बी-ए फ़ेल होने की खबर जब राम को मिली तो दिल पर वज्र वत चोट लगी। मानो कि अभी दिल टूटा कि टूटा। आंसूवों का तार बन्ध गया (अश्रुपात तीव्र वेग से होनेलगे), मानो शोक का एक पहाड़ टूट पड़ा॥ पिता जी तो पहले ही से एक कौड़ी की

मदद नहीं देते थे। सहायता तो क्या, उल्टा राम की अर्धांगी (बीवी) को राम के पास (छोटी अवस्था में ही) लाहौर सौंप गये थे, जिस से ऐफ़-ए श्रेणि में ही गृहस्थ का बोझ राम पर डाल दीया गया था, सिर्फ़ मासिक छात्र वेतन से यह सब बोझ सहारा जा रहा था, पर जब बी- ए फेल होजाने से छात्र वेतन (वज़ीफा) सरकारी) भी बन्द होगया, किसी प्रकार की सहायता बाहर से आती दीख न पड़ी, तो उस समय चित्त भी धैर्य को छोड़ने लग पड़ा॥ ऐसी व्याकुल अवस्था में चित्त को अगर कोई ठौर शान्ति दायक मिलती थी तो वह निज स्वरूप का ध्यान तथा प्यारे कृष्ण का प्रेम भरा स्मरण था। उस समय अन्तः हृदय (हृदय की तैः) से बड़े ज़ोर से अश्रुवों के साथ यह श्लोक लगातार निकलते रहते थे :—

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्व, मम देव देव"

प्रति दिन ईश्वर से यह प्रणय राम लिख कर करता था कि "बस

"प्रभो! अब राम तुम्हारा और तुम राम के होलिये। राम का काम तो नित्य आप का स्मरण और आप की मर्ज़ी पर राज़ी रहना होगा और आप का काम अब राम की सर्व प्रकार की सहायता करना होगा॥ राम का शरीर उस का अपना नहीं रहा, बल्कि सारा का सारा आप का होगया, होगया, होगया!!! अब चाहे रक्खो और चाहे मारो।"

"कुंदन के हम डले हैं जब चाहे तू गला ले
बावर न हो तो हम को ले आज आज़माले
जैसे तेरी खुशी हो सब नाच तू नचा ले
सब छान बीन करले हर तौर दिल जमाले
राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है और यूं भी वाह वा है॥
या दिल से अब खुश होकर कर हम को प्यार, प्यारे!
ख्वाह तेग़ खैंच, ज़ालम! टुकड़े उड़ा हमारे
जीता रक्खे तू हम को या तन से सिर उतारे
अब तो फ़क़ीर आशक़ कहते हैं यूं पुकारे

राज़ी हैं हम उसी में जिस में तेरी रज़ा है।
यहां यूं भी वाह वा है, और यूं भी वाह वा है॥"

इस प्रकार राम ईश्वर ध्यान में नित्य युक्त रहते, और उन कि चित्त वृत्ति एक दिन ऐसे युक्त हो ही रही थी कि झट एक पत्र उन के अपने मासड़, डाक्टर रघुनाथ दास असिस्टंट सर्जिन से निम्न लिखित शब्दों मे आया :—"ऐ बेटा तीर्थ राम! तुम घबराओ नहीं। धैर्य का आश्रय लो, अध्ययन को मत छोड़ो। कालेज में फिर दाखल होजाओ। २५) या २०) रुपये मासिक मैं खुद तुम्हारी सहायता के लिये भेजा करूंगा। एक या दो प्राईवेट डियोटियां भी ले लो, और आगे पढ़ने से हिम्मत व हौंसला मत छोड़ो॥" इस प्रकार अपने मौसे व अन्य कई प्यारों की सहायता से तीर्थ राम जी ने पुनः बी-ए. की तिय्यारी की, और इस समय सारे पंजाब भर में (परीक्षा में) प्रथम निकले, और आगे ऐम, ए, श्रेणि में पढ़ने के लिये बहुत बड़ी रक़म. का छात्र वेतन (वज़ीफ़ा) पाया॥

बी-ए, पास करने के पश्चात अपना नाम तो गुसांई (तीर्थ

राम) जी ने गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर में ऐम--ए पढ़ने के लिये दाखल करा लीया, और आप कुछ समय तक फोरमैन कालेज लाहौर में बी--ए श्रेणि को विना कुछ वेतन लिये गणित पढ़ाते रहे ॥ इस परोपकार में युक्त होते हुए भी गुसांई जी ऐम--ए की गणित परीक्षा में प्रथम रहे । इस समय इन की आयुः २२ वर्ष के लगभग थी ॥

ऐम--ए की परीक्षा में प्रथम निकलने के कुछ काल पीछे लाहौर नगर मे यह खबर उड़ी कि गुसाई तीर्थ राम जी पंजाब यूनिवर्स्टी की ओर से इस साल लंडन भेजे जायेंगे ॥ जब ऐसी खबर दूर २ तक फैल गयी, और लोगों ने गुसाई जी से पूछा, कि आप वाहर देशों (विलायत) में जा कर क्या पठन पाठन करेंगे, तो उनहों ने हर एक को यही जवाब दीया कि (I shall either become teacher or preacher) " मैं वहां जाकर या तो उस्ताद (आचर्य) बनूंगा और या उपदेशक, मगर किसी तरह की अन्य नौकरी (सिविल सरविस इत्यादि) के लिये किञ्चित मात्र कोशश नहीं करूंगा " ॥ दैवयोग से गुसांई जी को वाहर (विलायतों में) जाने का अवसर न मिला और उन का अपना हृदयस्थ ख्याल यहां

ही पूर्ण रीति से परिपूर्ण हो गया॥ कुछ काल तक तो वह स्यालकोट में हाई स्कूल के हैडमास्टर रहे, तत् पश्चात् गवरनमेन्ट कालेज मे कुछ समय तक प्रोफ़ैसर हुए। और अन्त में जब चित्त की धार्मिक अवस्था और उदारता इतनी बढ़ गयी कि छे घंटे तक बराबर व्यवहारिक काम में लगे रहना उन के लिये कुछ कठिन तथा दुभर हो गया, तो सिर्फ १ या दो घंटे तक गणित और वेदान्त पढ़ाने की खातर ओर्येन्टल कालेज की (नौकरी) प्रोफ़ैसरी स्वीकार कर ली॥ और जब दो घंटे तक भी व्यवहारिक कर्मों में दिल न लगने पाया, बल्कि चित्त कुल का कुल परमार्थ का हो लिया, तो जुलाई सन १९०० में यह प्रोफ़ैसरी भी आखर को छोड़ दी गयी॥

ऐम-ए पास करने के पश्चात् कुछ समय तक गुसांई तीर्थ राम जी कृष्ण भगवान के बड़े भक्त रहे॥ यद्यपि वेदान्त शास्त्र में खूब प्रीति रखते थे, परन्तु दिल नित्य कृष्ण महाराज की अनन्य भक्ति में डूबा रहता था, इस लिये कृष्णगीता और कृष्ण लीला उन के दिल पर सब से अधिक चोट लगाया करती थीं॥ जब कालिज में

तीन मास के लिये ग्रीष्म ऋतु में छुटियें (अनध्यायें) मिलतीं तो गुसाईं जी अपना सारा काल (रुखसतों का) मथुरा वृन्दावन में रासलीला के देखने में काट देते। कृष्ण लीला तो विशेष करके इन के चित पर बहुत चुटिकियें भरा करती थी॥ इस तीव्र भक्ति का यह फल मिला, कि गुसाईं जी को समय २ पर कृष्ण महाराज के साक्षात दर्शन होते थे॥ गृहस्थाश्रम में एक समय गुसाईं जी ने लेखक को इस प्रकार वर्णन कीया कि "आज हमारे गोल्ड यार अर्थात कृष्ण महाराज ने स्नान करते समय खूब दर्शन दीयें, और आपस में खूब मुटभीर हुई (अर्थात गले लगा खूब घुट कर मिले), मगर मिलने के थोडे ही समय पीछे हाथ पर हाथ मार कर तिरोधान हो गये"॥ यह दशा गुसाईं जी पर बहुत वार आया करती थी। और वह भक्ति में ऐसे रते हुए थे कि अपना सर्वस्व कृष्णार्पण कीया हुआ था। हर एक आशा और हर एक कार्य को कृष्ण महाराज की आज्ञा और इच्छा पर छोड़ रक्खा था॥

इस कृष्णभक्ति के ज़माने (काल) में गुसाईंजी लाहौर सनातन धर्म सभा के मन्त्री (सैक्रटरी) नियत हुए॥ उस समय सनातन

धर्म सभा के प्लैटफौर्म पर जब गुसाईं जी कृष्ण महाराज के विषय में व्याख्यान देते तो तीव्र वेगसे उन के अश्रुपात होजाते, कपड़े सब प्रेमांसुवों से भीग जाते, और अपनी भक्ति के ज़ोर से सब श्रोता-गणों के हृदयों में कूट २ कर कृष्ण भक्ति भर दीया करते थे ॥ यह लेखक का अपना अनुभव (तजरुबा) है कि अमृतसर नगरमें सनातन धर्म सभा के वार्षिक उत्सव पर जो असर श्रोतागण के चित्त पर गुसाईं तीर्थरामजी के भक्ति भरे उपदेशों ने डाला था वह अन्य वक्ता के उपदेशों से नहीं हुवा था। खासकर गुसाईंजी के कृष्ण-गीता और कृष्णलीला पर के व्याख्यानोंमें जो असर विशेष कर के लेखक के हृदय पर पड़ा था वह तो अकथनीय है ॥ यद्यपि उन दिनों लेखक कृष्ण महाराज का आचरण प्रशंसनीय नहीं समझता था, और न उन की रासलीला से कुछ भी लग्न (रगबत) रखता था, और न भगवद्गीतामें विशेष कर के श्रद्धा थी, तथापि गुसाईंजी के अति प्रेम भरे व्याख्यानों ने चित्त पर कुछ एसा जादूभरा असर डाला कि लेखक (नारायण) जैसा अश्रद्धालु भी कृष्ण गीता के पढ़ने और भगवान की कोई लीला के लक्ष्यार्थ समझने में तत्पर हो गया ॥ इस तीव्र भक्ति के कारण

में जो दशा गुसाईं जी के चित्त की रहती थी वह उन के निम्न लिखित पत्र से जो उन्हों ने दीपमाला के दिन पिता जी को भेजा था स्पष्ट प्रकट हो रही है :—

लाहौर २८ अक्टूबर सन १८९७

महाराज जी,

चरण वन्दना! नाज़िशनामा सामीशर्फ़ सिदूर लाया, अज़हद आनन्द हुवा। आप के लड़के तीर्थ राम का शरीर तो अब विक गया, विक गया। राम के आगे उस का अपना नहीं रहा। आज दिवाली को अपना शरीर हार दीया और महाराज (भगवान) को जीत लीया। आप को मुबारक (धन्यवाद)॥ अब जिस चीज़ की ज़रुरत हो मेरे मालिक से मांगो, वह फ़ौरन खुद दे देंगे, या मुझ से भिजवा देंगे। मगर एक दफ़ा निश्चय के साथ आप उन से मांगो तो सही॥ उन्नीस बीस दिन के मेरे कुल काम बड़ी हुश्यारी से अब वह खुद करने लग पड़े हैं। आप के क्यों न करेंगे? घबराना ठीक नहीं। जैसी उन की आज्ञा होगी .अमल होता जायेगा। महाराज (राम भगवान) ही हम गुसाइयों का धन हैं। अपने निज

के सर्व धन को त्याग कर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हम को मुनासब नहीं। और उन कौड़ियों के न मिलने पर अफसोस करना तो बहुत ही बुरा है। अपने असली माल और दौलत का मजा एक दफ़ा ले तो देखो॥

इस आत्म समर्पण काल के लग भग द्वारका मठ के मठधारी अर्थात द्वारकाधीश श्री १०८ स्वामी शंकराचार्य जी महाराज दैव योग से लाहौर में पधारे। आप ब्रह्म सूत्रों, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य प्रकरण ग्रन्थों में अति निपुण थे। आप की विद्वत्ता और स्वरूप में निष्ठा अति प्रसिद्ध थी। दिन के समय भी आप के संहासन के आगे दो ज्वाला (मिशालें) नित्य प्रति जला करती थीं॥ गुसांई जी को इन दिनों सनातन धर्म सभा में मन्त्री होने के कारण सभा का बहुत सा काम स्वयं करना पड़ता था, इसलिये श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य की भी सेवा का बहुत सा भाग स्वतः उन के हिस्से में आ गया। जिस को गुसांई जी ने अति प्रसन्न चित से प्रेम पूर्वक निभाया॥ गुसांई जी की अति प्रेम भरी सेवा से वह वृद्ध महात्मा (परम गुरु श्री शङ्करा चार्य जी महाराज) इतने प्रसन्न हुए

कि गुसाईं जी को अपनें साथ कुछ समय तक अपनी संगति में रखना उचित समझने लगे। बलकि: एक दिन हर्ष में आकर वह ऐसे कहने लगे " कि हम को इस सारे सफर (देशाटन) में गुसांई तीर्थराम जी जैसा भक्त और ब्रह्म विद्या का जिज्ञासु अभी तक नहीं मिला। अगर यह कुछ काल हमारें साथ रहें तो हमें भी बड़ी खुशी हो और यह भी शायद शीघ्र अपने निजानन्द में रंगे जायें॥

यह खुशखबरी जब गुसाईं जी के कान तक पहुंची तो वह झट श्री १०८ स्वामी शङ्कराचार्य जी के साथ चलने को तय्यार होने लगे। कुछ छुट्टियां तो कालेज से पैहिले ही मिली हुई थीं कुछ और ले कर उन के साथ होलिये। और उन की कशमीर यात्रा में गुसाईं जी उन (परम गुरु) के मंत्री का काम करते रहे, और बड़े प्रेम भरे, प्रसन्न चित्त से सारे रास्ते भर उन की सेवा की इस सेवा और संगत का यह फल मिला कि गुसाईं जी ने परम गुरु शङ्कराचार्य से बड़ी उत्तमरीति से प्रेम पूर्वक ब्रह्म सूत्र और उपनिषदों के भाष्य पढ़े और सुने॥

यह पैंहिले ही वर्णन होचुका है कि परम गुरु श्रीशङ्कराचार्य

जी ब्रह्म सूत्र, उपनिषदों और वेदान्त के अन्य ग्रन्थों में अति निपुण थे और सर्व शास्त्रों तथा संस्कृत भाषा के पूर्ण वेत्ता थे। बलकि भारत वर्ष में यह प्रसिद्ध हो रहा था, कि: वह अपने काल के वेदान्त और संस्कृत में अद्वतीय महात्मा हैं। और यह भी दर्शाया जा चुका है कि गुसाईं तीर्थ राम जी प्रेम और श्रद्धा से भरे हुवे और धुले हुए चित्त वाले थे। इसलिये परम गुरु शङ्कराचार्य जी के मस्ती भरे उपदेशों, ब्रह्मसूत्र और उपनिषदों की कथाओं ने गुसाईं जी के शुद्ध: अन्तःकरण पर कुछ ऐसा असर डाला कि: वहां अब वेदान्त पूर्ण रीति से अपना परिग्रह (कबजा) जमाने लग गया। और प्रेम की जरदी ज्ञान की लाली में बदलने लगपड़ी ॥ ज्ञान का मस्ती भरा रंग चढ़ते ही गुसाईं जी अपने चित्त से वशी भूत हुए परम गुरु शङ्कराचार्य जी के अर्पण होगये, और पूर्ण श्रद्धा व भक्ति से उन्हें परम गुरु मान कर उन की आज्ञानुसार चलने लगे ॥ ऐसी अवस्था में जब गुसाईं जी परम गुरु जी से जुदा हो लाहौर आने लगे तो उन्हें उपदेश मिला कि: "देखो यह ज्ञान की लाली और मस्ती अब घटने न पाये, बलकिः दिन प्रति दिन वृद्धि को प्राप्त होती रहे।

और इस लली का यहां तक गूढ़ा रंग चढ़े कि अन्दर बाहर फूटने लग पड़े (अर्थात संन्यासावस्था प्राप्त हो जाये) । जब तक यह अन्तिमावस्था पूरी २ प्राप्त न हो तब तक बस न की जाये ॥"

इस अन्तिम उपदेश को लेकर जब गुसाईंजी लाहौर वापस आये तो अहोरात्र (दिन रात) वेदान्त के श्रवण मनन में तन मन से युक्त होगये । अब तो हर घड़ी उपनिषदें और ब्रह्मसूत्र हाथ में रहने लगे, और बजाये मथुरा और वृन्दावन जाने के अब ऋषिकेश तथा हरिद्वार में एकान्त सेवनार्थ जाना आरम्भ होगया। चित्त प्रति दिन व्यवहारिक दशा (जिन्दगी) से उपराम होने लग पड़ा ॥ प्रति वर्ष ग्रीष्म ऋतु की छुट्टियों (अनध्यायों) में गुसांई जी ऋषीकेश तथा तपोवन के जंगलो में इस निश्चय से जाते कि वहां .जरूर आत्मानुभव अर्थात आत्म साक्षात्कार होजायेगा ॥ जब दो बार वहां जाकर एकान्त सेवन से आत्म साक्षात्कार न हुवा तो तीसरी बार इस पक्के निश्चय तथा प्रण से तपोवन गये कि:—"अब विना आत्मसाक्षात्कार किये लाहौर वापस आना कदाचिद् न होगा ॥ या तो वहीं मरना होगा या उपनिषदों का सार (ब्रह्मानन्द)

अनुभव कीया जायेगा" ॥ इस निश्चय से युक्त होकर गुसाईंजी जब लहौर से हरिद्वार पहुंचे तो वहां एक सप्ताह के भीतर २ ही अपनी कुल (तीन मास की) तनख्वाह (वेतन) महात्माओं व .गरीबों के भोजन में खर्च करदी, और बिलकुल पैसा रहित हुए, नंगे शिर, नंगे पाओं, उपनिषदें हाथ में लिये आत्मसाक्षात्कार करने के पक्के निश्चय से वह ऋषिकेश चले। एक दो दिन ऋषीकेश रह कर वहां से लगभग दस (१०) मील की दूरी पर तपोवन में ब्रह्मपुरि के मंदिर के निकट जा पहुंचे और गंगा के तट पर इस प्रण से आसन जमा दीये कि:—

"आसन जमाये बैठे हैं दर (द्वार) से न जायेंगे।
मजनूं बनेंगे हम तुम्हें* लैली बनायेंगे॥
कफन बान्धे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे
न उठेंगे सिवाय× तेरे उठा ले जिस का जी चाहे"

* तुम्हें से यहां मुराद ब्रह्म साक्षात्कार से है
× तेरे से मुराद भी ब्रह्म साक्षात्कार से ही है
अब ऐ ब्रह्मानन्द!

बैठे हैं तेरे दर (द्वार) पे तो कुछ करके उठेंगे।
या वस्ल ही होजायेगी या मर के उठेंगे॥"

अपने इस पक्के प्रण को गुसाईं जी ने अपनी लेखनी से यूं वर्णन कीया है:—

"अब तख़्त या तख़्तः। बाल्दैन! तुम्हारा लड़का अब (घर) वापस नहीं आयेगा। विद्यार्थी लोगो! तुम्हारा विद्यागुरु अब वापस नहीं आयेगा। पेहले खानाः (घर के लोगो)! तुम्हारा रिश्तः (संबन्ध) कब तक निभेगा। बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी? या तो सब तअल्लुक़ात (संबन्धों) से बरतर (रहित) होगा, या तुम्हारी सब उमेदों के सिर यक क़लम पानी फिर जायेगा। या तो राम की आनन्द घन तरंगों में कूनो मकान् (देश काल वस्तु) ग़रक़ाब होगा (तुर्यातीत), और या राम का जिस्म गंगा की लैहरों के हवाले होगा, तन बदन का खातमा होगा॥ मर कर तो हर एक की हड्डियां गंगा में पड़ती ही हैं अगर जल्वः ए-उर्यानी (अपरोऽक्ष) न हुआ और अगर जिस्मानियत (शारीरिक अध्यास) की बू बाक़ी रह गयी तो राम की हड्डियां और मांस जीते जी

मछलियों की भेंट होंगे ॥ अगर राम के चरणों में गंगा न रहीं (करे रथांगं शयने भुजंगं याने विहंगं चरणेऽम्बुगांगम्) तो राम का जिस्म (शरीर) गंगा पर .जरूर रहेगा ॥" इस भीष्म प्रण के पश्चात् गुसाईंजी आगे अपनी अन्तरदशा को अपनी लेखनी से ऐसे वर्णन करते हैं:—

"आंखें जल बरसा रही है। ठंडे और लम्बे सांस (श्वास) गोया तेज़ हवा की तरह मेंह (वर्षा) का साथ दे रहे हैं। अन्दर झड़ी लग रही है, बाहर भी बरसात .जोर पर है। अल्हाह्-ओ-.जारी (रुदन अरु पुकार) के साथ राम के तैः दिल (अन्तःहृदय) से यह नाला (पुकार) निकल रहा है:—

गंगा! तेथों सद् बलहारे जाऊं (टेक)

हाड चाम सब वार के फेंकूं, यही फूल पताशे लाऊं ॥ गंगा० १
मन तेरे बन्दरन को देदूं, बुद्धि धारा में बहाऊं ॥ गंगा० २
चित्त तेरी मछली चब जावें, अहङ्क गिर गुहा में दबाऊं ॥ गंगा० ३
पाप पुण्य सभी भुलाकर, यह तेरी जोत जगाऊं ॥ गंगा० ४
तुझ में पड़ूं. तो तू बन जाऊं, एसी डुबकी लगाऊं ॥ गंगा०-५

पण्डे, जल थल, पवन दशोंदिक्, अपने रूप बनाऊं॥ गंगा० ६
रमन कहे सतधारा मांहि, नहीं तो नाम न राम धराऊं॥ गंगा० ७

आगे चल कर गुसाईं जी अपनी अन्तरावस्था को इस प्रकार लिखते हैं कि:—" शाम पड़ने को है। एक छोटी सी पहाड़ी पर राम बैठा है। अजब हालत है। न तो इसे उदासी नाम दे सक्ते हैं, न रंजो ग़म ही है, दुन्या दारों वाली खुशी भी यह नहीं। उसे जागता नहीं कह सक्ते, सोया भी नहीं॥ क्या मालूम, मख़मूर हो! पर यह कोई दुन्या का नशाः नहीं। क्या रसभीनी अवस्था है"?

उन दिनों उस समय राम की तलाश करता २ एक खत वहां (पहाड़ों में) आमिला जिस में घर आने की तरग़ीब (प्रेरणा) थी। यह खत फौरन परम धाम को रवाना कर दिया गया, अर्थात श्री गंगा जी में प्रवाह दिया गया॥ उस का जो जवाब उस समय लिखा गया, वह पाठकों की खातर नीचे दिया जाता है:—

(१)* रे=रंग नहीं मेरा कतने दा, जोरीं बन्न के भेरे न घत्त माये
पीड़ां पीड़ के जान नपीड़ लीती, मासा मांस नाहिं रत्ती रत्त माये

चर्खा वेख के रंग कुरंग होया, सय्यां विच बाहां केंद्दे वत्त मार्ये
मर्त्ती इशक़ हुसैन न मत्त मुझे, मर्त्ती देंदियां दी मारी मत्त मार्यें

---

(२) लोगों के गिले उलाहनों का डर दिखाया था। सो भगवन्!
अब तो हम हैं और गंगा जी
कफ़न बांधे हुए सिर पर किनारे तेरे आ बैठे।
हज़ारों ताने अब हम पर लगा ले जिस का जी चाहे॥
तोरे जैसे अल्ज़ाम यहां कुछ नहीं असर कर सक्ते

* संक्षेप मतलब यह है:—कि मेरा हाल अब गृहस्थ करने का नहीं रहा है, इसलिये ज़बरदस्ती से मुझे गृहस्थाश्रम में युक्त मत कराओ॥ मेरा लहु मांस तो ईश्वरप्राप्ति के शोक में सूख गया है बलकि: गृहस्थाश्रम चलाने के बिलकुल अयोग्य (नाक़ाबिल) हो गया है, इसवास्ते मैं गृहस्थियों के बीच कैसे बैठूं? मेरे जैसे ईश्वर परायण पुरुष को जो लोग गृहस्थ करने की सिक्षा देते हैं उन की अपनी बुद्धिः खुद मारी होती है॥

---

*(क) गर नमानद दर दिलम पैकाँ गुनाहे तीर नेस्त।
आतशे सोज़ाने मन आहन गदाज़ उफ़तादह अस्त॥

(ख) ता नख्वाहद सोख्त अज़ मा बर नख्वाहद दाश्त दस्त ।
.इश्क़ बस मारा चो आतश दर क़फ़ा उफ़तादह् अस्त ॥

........तुम्हारा राम तो अब पूरा हो गया पूरा, न घर का न घाट का (गो मालक मल्कः लाट का)

(३) किसी खानगी मुआमले के अफ़सोस की बाबत पूछो तो सख़्त हैरत है कि तुम्हें अपने असली घर से ग़ाफ़ल रहने का कुछ अफ़सोस नहीं आता ॥

(४) आप ने सब लोगों के दुन्यवी काम काज में हमः तन मसरूफ़ होने का इशारह करके बुलाया चाहा है ॥ अच्छा, अगर लोगों की कसरत राये पर ही हक़ीक़त का फ़ैसला करना

* अर्थः-(क) अगर मेरे दिल में नोक नहीं लगती, तो तीर का क़सूर नहीं है क्योंकिः मेरे (प्रेम तथा .इश्क़रूपी) जलाने वाली आग का यह स्वभाव है कि वह लोहे को पिघला देती है ॥

(ख) जब तक (यह प्रेम या .इश्क़) हम को जला नहीं लेता तब तक यह हम पर से हाथ नहीं हटाता (अर्थात हम को नहीं छोड़ता) क्योंकि हमारा .इश्क़ (प्रेम) ही आग की तरह हमारे पीछे पड़ा हुवा है ॥

मंज़ूर हो, तो बताइये, आदम से लेकर इदम तक कसरत (majority) उन लोगों की है जो मौजूदह ज़िन्दगी के कारोबार को ज़ुबाने अमाल में सब कहने वाले हैं, या उन की जो रूए ज़मीन की ख़ाक के तक़ीबन हर ज़र्रे में ज़ुबाने हाल से बोल रहे हैं कि दुन्या मादूमी-अज़-मालूम है ॥

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्त मध्यानि भारत ।
अव्यक्त निधनान्येव तत्र का परि देवना ॥ (गीता)

(९) भगवन्! आप ही की आज्ञा पालन हो रही है। यानी आप से बहुत जल्दी मिलने की कोशश हो रही है ॥ अज़ रूए जिस्म तो जुदाई हरगिज़ दूर नहीं हो सक्ती। ख़्वाह कितने नज़दीक हो जायें। फिर भी जहां एक बदन (शरीर) है वहां दूसरा बदन नहीं आ सक्ता, वरनाः तदाख़ले अजसाम लाज़म आता ॥ फ़िल्वाक़्या जुदाई को दूर करने के राम रात दिन दरपै (पीछे लगा हुवा) है। गैरीयत (द्वैत भावना) का नामो निशान् नहीं रहने देगा ॥ आप का अन्तरात्मा, आप के सीने में, आप की आंखों में, बल्किः सब के दिल जिगर में राम

अपना घर (क़ियाम) देखे बिना चैन नहीं लेगा ॥ आओ, आप भी पांच नदियां (ख़ून, बोल, पसीना, वीर्य, राल) के कीचड़ यानी जिस्म से अपने निज धाम (असल स्वरूप) की तरफ़ मुराजअत करो (लौटो) । इस पंजाब से उठ कर हक़ीक़ी धाम की पहाड़ियों पर कशां २ (शनैः शनैः) तशरीफ़ लाइयेगा ॥ मिलना अब मरकज़ (केन्द्र) ही पर मुनासब है । जहां पर मिले फिर जुदाई नहीं हो सक्ती । मुहीत (वृत्त) पर छिपन लुकन (hide and seek) खेलते २ कहां तक निभेगी ॥ राम ने तो अगर ख़ुद गंगा को अपने चरणों से निकलती हुई न देखा तो लोग उस का जिस्म (शरीर) गंगा के ऊपर रवां (बैहता) ज़रूर देखेंगे ॥

* मैं कुश्तगाने इश्क़ में सरदार ही रहा ।
सिर भी जुदा कीया तो सरदार ही रहा ॥

* मतलब:—प्रेम से घायल हुए पुरुषों में मैं ही प्रथम रहा । यद्यपि मेरा शिर भी जुदा कीया गया, तथापि मैं वास्तव में शूलि का सिरा अर्थात शूली के ऊपर उस की चोटी ही बना रहा ॥ यानी अपने को सर्वशा ईश्वरार्पण करने से यद्यपि ऊपर से

सीप से मोती निकला हुवा फिर सीप में वापस नहीं आता ॥

....

गंगा में पड़ी हुई हड्डियां वारसों (सबन्धीयों) को वापस कैसे मिल सक्ती हैं? अलबत्ता मिलने के ख्वाहश मंद अपनी हड्डियां भी हवाले गंगा कर दें तो शायद मेल होजाये ॥ कुछ मुशकल तो नहीं, नित्य प्राप्त की प्राप्ति है, नित्य तृप्त की तृप्ति ॥

....

नहीं कुछ ग़र्ज़ दुन्या की, न मतलब लाज से मेरा ।
जो चाहो सो कहो कोई, बसा अब तो वुही मन में ॥

इस तमाम पूर्व लिखित पत्र से स्पष्ट प्रतीत हो रहा है कि उस समय तपोवन में गुसाईं जी के चित्त की अवस्था कैसी उदारता और वैराग्य से भरी हुई थी, और इस अति उपरामावस्था में जिस समय और जिस स्थान पर गुसाईं जी को आत्म साक्षात्कार हुवा, वह कुल का कुल गुसाईं जी आगे चलकर अपनी लेखनी से यूं (इस प्रकार) वर्णन करते हैं :—

मृत्यु नज़र आती है परन्तु वास्तव में जी उठना और सब का मालक (ईश्वर) बन जाना होता है ॥

नोट (सन १८९८, मास सैतेम्बर के लगभग अर्थात संवत् १९५५ भाद्रपद की पूर्णिमा के एक या दो दिन पूर्व ऋषीकेश के तपोवन में ब्रह्मपुरि मंदर के समीप का यह वृत्तान्त है) (लेखक)

(अपरोक्ष) "घना जंगल, जल का किनारा, जंगली गुलज़ार शगुफ़तः (वन पुष्पों से खिड़ा हुवा), तखलिया (एकान्त स्थान में), चंद उपनिषदें खतम। ....

ऐ नुतक़ (वाणी)! तुझ में है ताक़त (शक्ति) उस सरूर (आनन्द) को बियान करने की?। धन्य हूं मैं! मुबारक हूं मैं! जिस प्यारे का घुंघट में से कभी पैर, कभी हाथ कभी आंख, कभी कान मुशकल के साथ नज़र पड़ता था, आज दिल खोल कर उस दुलारे का वसाल (मिलाप) नसीब हुवा। हम नंगे, वह नङ्गा, छाती, छाती पर है॥

ऐ हाड चाम के जिगर कलेजे! तुम बीच में से उठ जाओ॥ तफावत (भेद दृष्टि)! हट, फासले! भाग, दूरी! दूर, हम यार, यार हम॥

यह शादी (खुशी) है, कि शादी मर्ग? आंसू क्यों छमा छम

बरस रहे हैं ? ....
क्या (वह) साहा (विवाह) के मौक़्या (समय) पर की झड़ी है कि मन के मरजाने का मातम है ? | संस्कारो का आखरी संस्कार हो गया | ख्वाहशों पर मरी पड़ी | दुःख दारिद्र उजाला आते ही अन्धेरे की तरह उड़ गये | भले बुरे कर्मों का बेड़ा डूब गया ||

बड़ा शोर सुनते थे पैहलु में दिल का |
जो चीड़ा, तो इक क़तरेह ख़ून न निकला ||
शुकर है, आई खबर यार के आजाने की
अब कोई राह नहीं है मेरे तरसाने की
आप ही यार हूं मैं खत्तो किताबत कैसा
मस्ती-ए-मुल्क हूं मैं हाजत नहीं मैं खाने की

वह तुर्या जो .उन्क़ा [पक्षी] की तरह मादूम [गुम] थी, हम खुद ही निकले | जिस को सीग़ा ग़ायब (Third person, तृतीया) से याद करते थे, वह मुतकल्लम (प्रथमा, First person) ही निकला || सीग़ा ग़ायब अब ग़ायब [गुम] | ॐ हम, हम ओम् | हम न तुम, दफ़तर गुम || ॐ | ॐ !! ॐ !!! ....

आंसुवों की झड़ी है कि वसल (दर्शन) का मज़ा दिलाने वाली बरसात (वर्षा समय)! ऐ सिर! तेरा होना भी आज सफल है। आँखों! तुम भी मुबारक होगयीं॥ कानों! तुम्हारा पुरुषार्थ भी पूरा हुवा। यह शादी मुबारक हो! मुबारक हो!! मुबारक हो!!! मुबारक का लफ़ज़ भी आज मुबारक (कृतार्थ) होगया.... ....

अहङ्कार का गुड्डा और बुद्धि गुडिया जल गये। अरे आँखों! तुम्हारा यह काला बादल बरसाना मुबारक हो! यह मस्ती भरे नैनों का सावन स.ईद (मुबारक) है॥"

इस आत्मानुभव के पश्चात गुसांई तीर्थ राम जी जब लाहौर वापस आये, तो उन के मुख पर अलौकिक (.अजब तरह की) हंसी परोई रहती दिखाई देने लगी। उन के दर्शन मात्र से वाञ्छें खिड़ने लगीं, मुर्दह दिल भी उन को देख कर जिन्दः और मस्त होने लगा। उन के स्थान पर अब बहुत लोग प्रति दिन दर्शनार्थ एकत्र होने लगे। गुसांई जी की मस्ती भरी दृष्टि ने कई पुरुषों के हृदयों को घायल कर दीया। भक्तों की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। व्यवहारिक जीवन की ओर रुचि कम होने लगी॥ धन, दौलत से

गुसाईं जी की वृत्ति ऐसे उदार और उपराम हो पड़ी कि जब मासिक दक्षिणा (वेतन) आती तो उसी दिन या दूसरे दिन तक नितान्त (बिल्कुल) खर्च की जाती। तीसरे दिन एक कौड़ी भी पास रखने न पाती॥

इस उदार और मस्तावस्था में गुसाईंजी ग्रीष्म ऋतु की छुटियों (अवकाश) में सन १८९९ में अमर नाथ की यात्रा के लिये कश्मीर गये। श्रीनगर से अमर नाथ तक का सारा रस्ता केवल एक धोतीसे चले। अमर नाथ मंदिर की गुहा में कई घंटे नग्न व्यतीत कीये॥ जब इस यात्रा से वापस लाहौर आये तो निजानन्द तथा शान्तिमें इतने भरपूर तथा पूर्ण पाये गये कि लिखने में नहीं आ सक्ता॥

इन्हीं दिनों में उत्तम भाग्य से लेखक को भी गत दिन संन्तुष्ट चित्तसे (दिल भर कर) गुसाईंजी की संगत करने का अवसर मिल गया। लेखक यद्यपि उन दिनों किसी सभा अथवा समाज का मेम्बर नहीं था, और न वेदान्त की ओर जरा सी भी रुचि रखता था। तथापि गुसाईं जी के पूर्व काल के उपदेशों से गीता का

अध्ययन कुछ ज़रूर करा करता था और अन्य पुस्तकों के लक्ष्यार्थ समझने की लग्न भी अधिक रखता था, जिन को ठीक न समझने से हृदय में हज़ारों शङ्कायें भरी पड़ी थीं ॥ जिस किसी पंडित के पास शंङ्का निवारणार्थ जाता, या तो कुछ कहीं ज़रा सी तसल्ली मिलती, और या नितान्त (बिलकुल) खाली हाथ वापस आता । शान्ति ठीक एक के पास चल कर भी न मिलती, और न पूरी तरह से संशय मिटते ॥ परन्तु यह मस्ती भरे गुसाईं तीरथ राम जी की ही प्रेम भरी संगति थी कि जिस ने दो दिन के भीतर लेखक की कुल शंङ्कायें निवारण कर दीं । सब संशय मिट गये । और अन्य कई एक भ्रम मलिया मेट होगये ॥ तदपश्चात कुछ उपानिषदों और वेदान्त के प्रकरण ग्रन्थों का अध्ययन गुसाईं जी की सहायता से आरम्भ कीया गया॥ जब हृदय के सर्व संशय निर्वृत्त होगये, और गुसाईं जी महाराज की प्रेम भरी संगति से चित्त निश्चयात्मक और गद् गद् होगया, तो वहीं ग्रहस्थ आश्रम में ही लेखक ने अपने आप को गुसाईं जी के अर्पण कर दीया और सर्वदा के लिये लेखक उन (गुसाईं जी) का ही हो लिया ॥

इस काल के थोड़ेही पीछे गुसाईंजी बहुत बीमार हो गये, और उदर की दर्द से इतने शिथिल और दुःखित हुए कि शरीर पर एक दो वार अति भयानक मूर्छा भी तारी (आछादित) हुई। इस कठोर बीमारी के समय लेखक को दिन रात सेवा करनेका अधिक अवसर मिला था॥ रात के दो २ बजे तक पीड़ा के कारण गुसाईं जी को नींद नहीं आती थी। एक दिन अर्ध रात्रि के समय जब कुछ आरोग्यता प्राप्त हुई तो गुसाईं जी उठ कर फरमाने लगे कि:—"देखो, नारायण! भारतवर्ष के शायद उत्तम भाग्य कुछ फलीभूत होने वाले हैं जो राम का शरीर आरोग्यता को प्राप्त होने लग पड़ा है॥" जब पूर्ण आरोग्यवस्था (सिहित) पा ली तो गुसाईंजी को उर्दू भाषा में एक अलफ़ नाम का मासीक रिसाला: (पत्र) जारी करने की तरंग उठी॥ उन की आज्ञा पर सरकारी नौकरी छोड़ लेखक उस रिसाले का प्रबन्धकर्त्ता बना। इस तमाम कार्य में धन से सहायता देने वाले गुसाईं जी के एक प्रेमी भक्त लाला हर लाल साहिब कायस्थ लाहौर निवासी थे॥ केवल इस रिसाले की खातर गुसाईंजी ने एक लिथो यन्त्रालयभी हम लोगों से खुलवाया, उसका प्रबन्ध

भी लेखक के हाथही दीया गया ॥ इस तरहसे शुरु जन्वरी सन् १९०० अर्थात सम्वत १९५७ के अन्त में यह रिसाला : प्रकाशित हुआ। इसमें कुल लेख गुसांईजी की अपनी लेखनी (कलम) से होते थे। जो जो विषय गुसांईजी के अनान्द स्रोतसे वेह कर इस रिसालेमें छपे उनका असर जैसा पाठकों के हृदय पर हुआ उसका अन्दाज : नारायण की लेखनी नहीं वर्णन कर सक्ती। पर इतना कहा जा सक्ता है कि इन लेखों से गुसांई जी के अपने चित्त पर कुछ ऐसी चोट लगी, कि अभी तीन नम्बर (प्रति) भी रिसाले के निकलनें न पाये थे कि गुसांईजी झट नौकरी छोड़ परिवार समेत जंगलों की ओर पधारे॥ लेखक तो उन की आज्ञासे रिसाले के प्रबन्ध करने के अर्थ कई मास पेहिले से ही नौकरी छोड़े बैठा था, और रात दिन गुसांई जी के मस्ती भरे लेख रिसाले में छापने को साफ नक़ल करा करता था। पर जब गुसांई जी अपनी अर्धाङ्गी और दो पुत्रों समेत बिलकुल लाहौर को छोड़ने लगे तो लेखक भी उन की आज्ञा से रिसाले के लिये लेख (मज़मून) साफ नक़ल करने के अर्थ, उन के परिवार की सेवार्थ, और विशेष करके उनकी मस्ती भरी संगत से लाभ

उठाने की खातर उन के साथ होलीया ॥ मास जुलाई सन १९०० में हम सब लाहौर से चले । लेखक तो सिर्फ सेवा करने की खातर और आत्मक लाभ उठाने के अर्थ साथ हुआ था, पर गुसांई जी और उन की अर्धङ्गी फिर वापस गृहस्थ में न आने के विचार (ख्याल) से जंगलों को पधारे थे ॥ उस दिन रेल्वे स्टेशन के प्लैट फौर्म पर जो समा बंधा था, और घर से स्टेशन तक रास्ते में भजन मंडालियों के हृदय वेधक भजनों से जो श्रोतागण के दिलों पर असर पड़ा था वह सब अकथनीय है ॥ नंगे शिर और नंगे पाओं, केवल आधी धोती नीचे और आधी कान्धे पर, दीवानः वार (मस्त पुरुषों की तरह) राम बाजारों में गुजर रहे हैं और हर एक भजन मंडली वैराग्य और त्याग के भजन ज़ोर शोर से आगे आगे गाती चली जा रही है । अश्रूपात तीव्र वेग से सब के हो रहे हैं । पुष्पों के हारों से कणठ तो पैहले भरा पड़ा था, मगर फिर भी रास्ते में जगह २ पर पुष्पों की वर्षा हो रही है । प्लैट फौरम पर पहुंचते २ अनगणित पुरुष एकत्र होगये । आध घंटे तक प्लैट फौर्म पर भी बड़े प्रेम और वैराग्य भरे चित्त से भजन कीर्तन होता

रहा। गाड़ी में स्वार होते समय सब के प्रेमाश्रु थामे नहीं जाते थे। गाडी के चलने पर निम्न लिखित भजन लेखक से राम की ओर (तरफ) से पंचम सुर में गाया गया:—

अल्वदा मेरी रयाज़ी ! अल्वदा
अल्वदा ऐ प्यारी रावी ! अल्वदा
अल्वदा ऐ एहलेखान: ! अल्वदा
अल्वदा मासूमे नादां ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दोस्तो दुशमन ! अल्वदा
अल्वदा ऐ शीत ऊष्ण ! अल्वदा
अल्वदा ऐ कुतॅबो तदरीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ खुबॅसो तकदीस ! अल्वदा
अल्वदा ऐ दिल !, खुदा ! ले अल्वदा
अल्वदा राम ! अल्वदा, ऐ अल्वदा !

राम महाराज, उन की अर्धङ्गी, बालकों और लेखक के अतिरिक्त

(१) रुखसत हो (२) घर के लोगो (३) नादान (भोले भाले) बच्चे (४) पुस्तकें और पाठशाला (५) शुद्ध: और मलीन या अच्छा बुरा

अन्य कई महाशय भी साथ होलिये थे, किन्तु हरिद्वार से आगे चलकर रास्ते में शनैः २ सब झड़ते गये। अन्त में वे परवाह राम जी सहित अर्धङ्गी, बच्चों, लेखक और एक अन्य महाशय (गुरु दास) के रयासत टिहरी गढ़वाल में पहुंचे॥ खास टिहरी नगर से दो मील के फासले पर एक सुन्दर बागीचाः सेठ मुरलीधर का गंगा तट पर है उस में राम एक वर्ष के लगभग लगातार ऐकान्त सेवन करते रहे॥ राम जी की अर्धङ्गी कुछ काल के पश्चात बीमार हो गयीं और देर तक कष्ट न उठा सकीं, इसलिये तीन मास के पीछे उन्हें घर वापस आना पड़ा। अन्तमें लेखक और तुलाराम जी सारा काल पर्वतों में राम जी के साथ रहे॥ यद्यपि एक, दो वार रसाला अलफ के आन्तिम (आखरी) दो वड़े नम्बरों (१. गंगा तरंग, सुल्ह कि जंग २. जरव-ए-कोहसार) के छपाने को कुछ काल के लिये लेखक को नीचे [illegible] में आना पड़ा, तथापि अन्त समय तक स्वामी जी के साथ रहना उत्तम भाग्य से केवल लेखक को ही नसीब हुआ॥

द्वारका मठ के परम गुरु श्री शङ्कराचार्य जी महाराज से यह

उपदेश तो गुसाईं जी को गृहस्थाश्रम में ही मिल चुका था कि "चित्त की पूर्ण निरासक्तावस्था के प्राप्त होने पर विद्वत संन्यास शीघ्र (फौरन) धारण कीया जाये" ॥ अब जंगलों में लगातार एकान्त सेवन से राम जी का चित्त संसारिक पदार्थों से नितान्त (बिलकुल) निरासक्त और अपने निजानन्द में अति मग्न होने लग पड़ा, इस समय गुरु जी की पूर्व वर्णित आज्ञानुसार राम महाराज से मास मार्गशिरस (मंगसर) संवत १९५७ अर्थात सन १९०१ के लगभग वहीं टिहरी नगर के समीप सेठ मुरलीधर वाले बागीचे में गंगा तट पर विद्वत् संन्यास धारण कीया गया ॥ यह परम गुरु द्वारकाधीश शङ्कराचार्य जी तीर्थ संन्यासी थे इसलिये राम का संन्यास नाम भी राम तीर्थ प्रसिद्ध हुवा ॥ और वैसे पूर्व (गृहस्थाश्रम के) नाम का उलट भी यह नाम था जिस समय यह संन्यासाश्रम लिया गया उस समय लेखक और एक अन्य भक्त समीपावस्थित थे। उत्तम भाग्य से कपड़े रंगने की सेवा उस समय लेखक को ही मिली थी ॥ संन्यासाश्रम धारन कीये जाने के पीछे षण मास तक स्वामी जी उसी स्थान पर एकान्त सेवन करते रहे। तद्पश्चात

जुलाई सन् १९०१ में उन्हों ने उत्राखंड की यात्रा आरम्भ की। पहले यमनोत्री पहुंचे। (वह समय भादो संवत १९५८ का था) वहां एक मास तक रहने के पीछे यमनोत्री मंदिर से १५ या १६ मील ऊपर जा कर बन्दर पूंछ नामी समेरू पर्वत की यात्रा की। वहां से नीचे उतर कर वामसरू तथा छायां के रास्ते से गंगोत्री मंदिर की ओर चले। एक या दो दिन के अन्दर वहां पहुंच गये *। वहां पहुंच कर पूरा एक मास आश्विन (असोज) का काट कर बूंढे केदार और त्रिजुगी नारायण के रास्ते से बड़े केदारनाथ और फिर बदरीनारायण तक यात्रा (रटन) की। फिर दसम्बर १९०१ में अल्मोरा नगर के रास्ते स्वामी जी नीचे देश में उतरे॥ उस समय मथुरा में धर्म महोत्सव पर स्वामी जी वहां प्रधान चुने गये थे इसलिये मथुरा गये॥

स्वामी जी ने यद्यपि भारत खंड में जन्म लीया था पर वह सब

* इस रास्ते की यात्रा का कुल हाल अंग्रेज़ी भाषा में स्वामीजीने अपनी लेखनी से विस्तार पूर्वक वर्णन कीया है। पाठकों को देखने की इच्छा उपजे तो राम (Rama) नाम का एक छोटा सारिसाला पढ़ लें॥

देशों, सब जातियों, सब धर्मों के मनुष्यों, हर जीव जन्तु वरन (बल्कि:) कुल सृष्टि मात्र को प्यार करते थे। उन के शरीर से सब को सुख और लाभ मिलता था॥ वह आनन्द और शान्ति की मूर्ति थे। बड़े से बड़े दुःखी और उदासी भरे दिल को पल के पल में शान्त और प्रसन्न कर देते थे। उन से मिलने वाले का दिल अपने छिपे हुए रहस्यों और पापों को भी प्रकट कर देता था, मृतक चित (मुर्दा दिल) भी उन के दर्शन से जीवन (जिन्दः) होजाया करता था। उपदेश करते २ वह प्रेम में ऐसे मग्न और आनन्द स्वरूप होजाते थे कि सुनने वाले का जी (चित्त) न उठने को करता और न सुनते २ किञ्चित मात्र उकताता था॥ जिस किसी को स्वामी जी की भोली भाली, मस्त और तेजोमयी मूर्त्ति के दर्शन और उन के मुखारविन्द से कुछ सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है वह ही स्वयं इस असर को ठीक जान सक्ते हैं। अन्य को पूरा २ दर्शाना कुछ कठिन सा ही है॥ मथुरा में महोत्सव के समय जब लोग दिन भर बहुत से लैक्चरों तथा उपदेशों को सुनते २ थक भी गये थे, तो भी स्वामी जी के उपदेश की बाट

ताकते थे ॥ स्वामी जी के उपदेश का जब समय आया तो खड़े होकर उन्हों ने यह कह सुनाया कि राम अब इस तम्बू के नीचे कुछ नहीं बोलेगा, क्योंकि उत्सव का समय अब व्यतीत होचुका है, अलबत्ता जिसकिसीने राम को सुनना हो, वह इस तम्बू के बाहर यमुना नदी के तट पर कुदरतके (ऐश्वर्य) शामियाना (आकाश) के तले बैठ कर सुनलें ॥ यह कह कर स्वामी जी उधर (यमुना तट की ओर) चल दीये और तमाम लोग उसी समय कुर्सियां छोड़ कर उनके पीछे हो लिये। मैदान में पहुंच कर थोड़ी देर के लिये राम यमुनाजी की तरफ से उलट चलने लगे, तो तमाम लोग भी बिना सोचे समझे (कि राम कहांजा रहे हैं, व्याख्यान तो कहा था यमुना किनारे होगा, पर जा रहे हैं जङ्गल की तर्फ) उन्हीं के पीछे चलदिये ॥ जब राम ने देखा कि यह प्रेमवश, पागल तथा बेखुद होकर पीछे आरहे हैं तो ठेहर कर कहा "प्यारो! राम लघुशङ्का करने जा रहा है। फिर यमुना किनारे आता है, आप चलिये, व्याख्यान वहीं होगा"। यह सुन कर सब के सब जैसे थे वैसे ही खड़े रहे और फिर जब राम लौटे तो उन के पीछे २ चले ॥ जिस तरह कहा

जाता है कि कृष्ण के साथ रहने को हर एक गोपी इच्छा करती थी वही हाल यहां दिखाई दीया। राम के साथ चलने को लोग व्याकुल थे। कोई २ झाड़ियों में उलझ २ गिरते थे। साथियों का साथ छूटा जाता था पर उन्हें कुछ परवाह नहीं॥ जब राम यमुना किनारे पहुंचे, रात्रिका समय हो चला था और पौष मास की शरद् ऋतु के दिन थे, तट पर का रेतला फर्श नर्म और शीतलपड़ गया था। महोत्सव केवल दिन भर रहना था, इसलिये लोग बहुत कम गर्म वस्त्र साथ लाये थे, तौ भी श्रोतागण अपने आप में न रहे॥ जिस समय राम ने कहा कि 'आप बैठ जाइये,' लोग झट अपने बड़े २ कीमती दुशाले शीतल रेतले आसन (फर्श) पर बिछा कर बैठ गये। और प्रेम के साथ रात के ८ बजे तक राम के मनोहर वचन सुनते रहे। किसी ने शीत की परवाह तक न की॥ महोत्सव में और भी बहुत से साधु महात्मा उपस्थित थे, परन्तु राम जी के तेज और कान्ति के आगे ऐसे दिखाई देते थे जैसे चन्द्रमा के सामने तारे॥ उस समय की दशा देखकर यही याद आता था कि जैसे श्रीकृष्ण चन्द्र जीके मनोहर वचन, मनोहर वंसुरी और मनोहर तथा

सुंदर स्वरूप से गोपियों और गवालों ने सुधबुध खोदी थी, वही हाल आज प्रत्यक्ष वहां हो रहा है ॥

इस महोत्सव के पीछे अर्थात सन् १९०२ के प्रारम्भ में कुछ काल तक स्वामी जी आगरा, लखनौ इत्यादि नगरों में उपदेशार्थ भ्रमण करते रहे। उन्हीं दिनों लेखक को स्वामी जी ने संन्यास धारण करने की आज्ञा दी, जिस आज्ञा को पाते ही ततक्षण (फौरन) सन्यासाश्रम लीया गया ॥ लेखक को संन्यास धारण करा कर आप तो पर्वतों को वापस चल दीये, और उसे सिन्ध देश की ओर उपदेशार्थ भेज दीया ॥ चार मास पश्चात जब बुलाया गया, तो फिर पर्वतों में स्वामी जी महाराज के दर्शनार्थ आया। ऐसे टिहरी में स्वामी जी की सेवा और संगत में रहने का लेखक को फिर अवसर मिल गया ॥ उन्हीं दिनों स्वामी जी महाराज की महाराजा साहिब टिहरी से भेंट हुई ॥

जुलाई, सन् १९०२ में यह खबर अनेक पत्रों में छपी, कि जापान देश में एक अद्वितीय धर्म महोत्सव होगा। जिस को पढ़ कर महाराजा साहिब बहादुर टिहरी ने चाहा कि स्वामी राम तीर्थ जी

जैसे रंगे हुवे महात्मा वहां अवश्य उपस्थित हों। महाराजा साहिब की ऐसी इच्छा को सुन कर स्वामी जी झट चलने को उद्यत हो गये। और उत्तम प्रारब्ध से लेखक भी आज्ञा पा कर साथ चला॥ अगस्त १९०२ में कलकत्ते से (हम लोग कुम्सैन नामी जहाज़ में बैठे; और मास अक्तूबर के आरम्भ में जापान पहुंचे। टोकियो नगर में पहुंचते ही पता लगा कि धर्म महोत्सव की सूचना बिलकुल झूठी और ग़लत है॥ इस लिये थोड़े दिवस जापान में रहकर स्वामी जी तो कालजों में एक, दो उपदेश देने के पश्चात् फिर अमरीका देश को चलदिये। और लेखक को अन्य प्रान्त (योरप और अफरीका देशों) में घूमने की आज्ञा दी, और साथ ही यह भी ताकीद करदी कि "जबतक राम भारत वर्ष को वापस न लौटे तब तक नारायण (लेखक) भी बाहर प्रान्त में ही घूमता वेदान्त परिचार करता रहे।" इस आज्ञानुसार लेखक भी यूरप, अफरीका, लङ्का, ब्रह्मा और चीन इत्यादि देशों में भ्रमण करता रहा॥ और स्वामी जी महाराज उतने काल तक अमरीका देश के प्रसिद्ध नगरों में ज़ोर शोर से वेदान्त का परिचार करते रहे॥ उन के मस्ती भरे

ऊपर लिया हुआ था जो उन्होंने अति उत्तम रीति से निभाया। किसी प्रकार का शारीरक खेद उन के उत्तम प्रबन्ध (बन्दोबस्त) से किसी को होने न पाया॥ पांच मास के लग भग हम लोग उस घने वन में रहे। इतने थोड़े काल के अन्दर स्वामी जी ने पातञ्जल भाष्य और निरुक्त की पुनरावृत्ति अति उत्तम रीति से कर लीं ओर साम वेद का पाठ (अध्ययन) भी संम्पूर्ण कर लीया। इस प्रकार सारा शीत काल व्यासाश्रम में काटने के पश्चात स्वामी जी के अन्दर (तरंग) लैहर उठी कि अब इस वन को छोड़ कर वासिष्ठाश्रम के वन में एकान्त सेवन कीया जाये और आने वाली ग्रीष्म ऋतु सब उसी ऊंचे स्थान में व्यतीत की जाये॥ यह वन टिहंरी नगर से कोइ ५० मील की दूरी पर है और कोई १२००० अथवा १३००० फुट की उंचाई पर स्थित हुआ नाना प्रकार के दिव्य वृक्षों और लता से संशोभित हो रहा है। इस का ठीक और सीधा मार्ग टीहरी नगर से आरम्भ होता है, जब फरवरी सन १९०६ में स्वामी जी व्यासाश्रम से

वासिष्ठाश्रम की ओर चले तो प्रथम टिहरी नगर पहुंचे और वहां स्वामी जी अपने भक्त जनों से टिहरी नरेश के बागीचे (सिमलास,) में उतारे गये ॥ शारीरक सेवा सर्व प्रकार की महाराजा साहिब की ओर से होने लगी। बल्कि टिहरी नगर से आगे चलने का प्रबन्ध और वासिष्ठाश्रम में रहने का कुल प्रबन्ध महाराजा साहिब ने ही अपने ऊपर प्रेम पूर्वक ले लीया, इसलिये काली कम्बली वाले बाबा रामनाथ जी को अपना उत्तम प्रबन्ध छोड़ना पड़ा, किन्तु उन की ओर से एक सेवक (रसोया) स्वामी जी के साथ जरूर रहा ॥

टिहरी से वसिष्ठाश्रम को चलने के कुछ दिन पहले स्वामी जी को धर्म के उत्सवों पर उपदेश करने के लिये एक दो निमन्त्रण की तारें आईं ॥ पर एकान्त सेवन ने स्वामी जी की चित्त वृत्ति को कुछ ऐसा आकर्षित कीया हुवा था, और दुन्या से कुछ ऐसा उपराम कर रक्खा था कि उन का चित्त नीचे देश में जाने को उद्यत न हुवा। इस लिये लेखक को ही अपने स्थान पर (जहां २ से बुलावे आये थे) वहां भेज दिया, और आप एक नौकर साथ लिये वासिष्ठाश्रम को चलदिये ॥

भारत वर्ष के मन्द भाग्य से स्वामी जी की भिक्षा का वहां वासिष्ठाश्रम में कुछ ऐसा बुरा प्रबन्ध हुआ कि वहां पहुंचने के थोड़े ही काल पीछे स्वामी जी दारुण (सख्त) बीमार होगये, और ग़रीब नौकर भी बिस्तरे पर लिट गया ॥ लेखक को देश में आये अभी दो मास भी न हुए थे, कि पत्र आया "स्वामी जी दारुण (सख्त) बीमार हैं और भोजन (भिक्षा) का प्रबन्ध अति बुरा तथा निन्दनीय है"। इस पत्र के पाने के पीछे स्वामी जी के विषय में कुछ और अफवाहें (अन्य चर्चा) भी उड़ती सुनाई दीं जिस से लेखक को झट वापस पर्वतों में जाना पड़ा ॥ वासिष्ठाश्रम पहुंचते ही स्वामी जी को कुछ थोड़ा अरोग (तन्दुरुस्त) बैठे तो पाया, परन्तु शरीर से बहुत शिथिल, कृश और दुर्बल देखा ॥ भिक्षा में कुछ इस प्रकार का अन्न आता था कि जो खाता कुछ दिन पश्चात् शय्या (बिस्तरे) पर ज़रूर लिट जाता ॥ उस अन्न के खाने से लेखक भी पहुंचने के दो दिन पीछे वहां चित् लिट गया॥ जब होश आई, तो यह समझ कर, "कि शायद कहीं यहां की वायु जल (आबो हवा) ही खराब हों और भिक्षा में कोई ख़राबी

न हो " हम सब ने वह स्थान छोड़दिया, और छे या सात मील की दूरी पर जाकर आपस में एक दूसरे से कुछ फासले पर भिन्न २ स्थानों में रहने लगे ॥ जो अन्न प्रबन्ध कर्त्ता की ओर से स्वामी जी को आता था उस में नित्य खराबी देखकर लेखक ने तो उसे खाना छोड़ रक्खाथा, और अपनी कुटिया से दो या तीन मील की दूरी पर के ग्रामों से ताज़ी भिक्षा (अन्न तथा मधुकरी) ला कर खाता था जिस से शरीर बिलकुल-अरोग रहने लगा। मगर स्वामी जी ग्राम और लेखक की कुटिया से बहुत दूर होने के कारण वुहां सर्व प्रकार से अपथ्य अन्न को खाते रहे जिस से शरीर ठीक अरोग (तन्दुरुस्त) होने न पाया। बलकि वैसा का वैसा ही रहा ॥ जब शरीर पैहिले से भी अधिक बीमार और दुर्बल होने लगा तो उस अन्न को खाना स्वामी जी ने भी बन्द करदिया, और केवल दुग्धाहार पर निर्वाह करना आरम्भ कीया अगर कभी अन्न खानें की ओर रुचि भी होती तो इस ख्याल से कि " वह अन्न फिर बीमार न डाल दे " स्वामी जी उसे न खाते और रुचि तथा क्षुदा को ऐसें ही मार दिया करते थे, जिस से शरीरतो बेशक बीमार होने न पाया,

परन्तु दुर्बल और शिथिल वैसे का वैसा ही रहा ॥

जब प्रेम मूर्ति प्यारे पूर्ण सिंह जी, सुशील पंडित जगत राम जी, और पं० हरि शर्मा जी वासिष्ठाश्रम में स्वामी जी के पास दर्शनार्थ आये, उन दिनों स्वामी जी ने अन्न खाना छोड़ रक्खा था। मगर इन प्यारों को इस का कारण ठीक विदित न था। इसलिये इन से यह हठ हो गया कि:–"पैहिले राम कुछ अन्न भिक्षा पालें फिर हम कुछ भोजन करेंगे," जिस पर थोड़ा सा अन्न स्वामी जी ने फिर खाना आरम्भ कीया। इस प्रकार सच्चे प्रेम के वशीभूत हुए २ स्वामी जी फिर प्रति दिन थोड़ा २ अन्न खाने लग पड़े, जिस से थोड़े काल पीछे फिर शारीरक बदहज़मी (रोग) होने लगी॥ जब ऐसे अन्नाहार से स्वामी जी का शरीर बीमार पड़ने लगा तो उन प्यारों को स्वामी जी के अन्न छोड़ने का कारण प्रतक्ष मालूम हो गया, फिर उन्हों ने स्वामी जी को अन्न खाने के लिये विवश (मजबूर) न कीया ॥

लेखक स्वामी जी की कुटिया से कोई छे या सात मील की दूरी (फासले) पर रहता था और उन की आज्ञानुसार प्रति

आदितवार उन के पास प्रायः आया करता था, मगर जब पूर्ण जी वहां आये, तो अपना दूत भेजकर स्वामी जी ने तत काल बुलवा-लिया, और आज्ञा दी कि "जब तक पूर्ण जी यहां रहें तब तक नारायण भी यहां उन के पास ठैहरे।" स्वामी जी की इस आज्ञा पर नारायण (लेखक) को कुछ काल के लिये फिर स्वामी जी के समीप डेरा जमाना पड़ा॥

पं० हरि शर्मा जी अपने मन्द भाग्य से प्रथम तो रास्ते में ही तीन वार घर लौटने को उद्यत हुए। जूं २ रास्ते में ज़रा दुःख देखते, फौरन वापस लौटने पर कमर बान्ध लेते थे, और प्यारे पूर्ण जी की ज़बरदस्ती व मदद और उन के घड़ी २ शरमिन्दह करने से वह बड़ी मशकुल से (नितान्त कठिन्ता से) वासिष्ठाश्रम तक पहुंचे थे, और वह भी पूर्ण जी के पहुंचने के एक दिन पीछे। परन्तु स्वामी जी के पास आये उन्हें अभी एक दिन ही व्यतीत हुवा था कि वह झट उदास होने लग पड़े और अपने घर के धंधे सब के आगे फोलने लगे॥ हम सब को घड़ी २ यही कह सुनाते कि "मेरी स्त्री ११ मास के लग भग से गर्भवति है, मुझे उस

का अत्यन्त शोक (फिकर) लगा हुवा है, मेरे से अब यहां अधिक नहीं ठैहरा जाता! मैं तो कभी का रास्ते से ही मुड़ जाता मगर पूर्ण जी की जबरदस्ती से यहां (वसिष्ठाश्रम) तक आया हूं इत्यादि"॥ प्यारे पूर्ण जी ने और लेखक ने पंडित जी को बहुधा समझाया और बुझाया और अनेक बार उन्हें यूं भी कहा" कि देखो! आप को यद्यपि पूर्ण जी की ज़बरदस्ती और मदद से ही यहां तक आना नसीब हुआ है, परन्तु जब आप अपने उत्तम भाग्य से यहां पहुंच गये हैं तो यहां स्वामी जी की संगति में कुछ दिन तो काटिये और उन के मस्ती भरे उपदेशों को सुन कर कुछ लाभ उठाइये, जिस से आप का आना सफल हो और इतना कष्ट उठाना भी आप को लाभकारी हो॥" बहुत कहा पर उन्हों ने एक न सुनी॥ पंडित जी का चित्त शायद जंगलों को देख कर कुछ ऐसा घबराया नज़र आता था कि वहां एक पल ठहरना भी उन को पर्वत तुल्य भारी हो गया था। अथवा अपनी गर्भवति स्त्री का फिकर उन के दिल को कुछ ऐसे घेरे रखता था कि बात २ में वह उसी का ज़िकर छेड़ते रहते॥ जब चित्त उनके वश में न रहा तो उन्हों ने सीधा स्वामी जी के पास जाकर भी

यही अपनी स्त्री का रोना रोया, जिस पर स्वामी जी ने उन को शीघ्र स्त्री के पास जाने की सलाह दी ॥ इस प्रकार से पं० हरि शर्मा जी शायद दूसरे या तीसरे दिन ही वासिष्ठाश्रम से वापस घर को लौट गये ॥ प्यारे पूर्ण जी और उनके दूसरे साथी बड़े सुशील पंडित जगत राम जी पूरे एक मास के लग भग वहां (वासिष्ठाश्रम में) रहे, और स्वामी जी की आज्ञानुसार एक मास तक लेखक भी वहां ही उन के पास रहा ॥ इतना थोड़ा सा काल तो पं० हरि शर्मा जी स्वामी जी के पास ठैहरे (और वह काल भी उन्हों ने वहां बड़ी बेचैनी और घर के फिक्र अर्थात शोक में काटा), तिस पर आश्चर्य यह, कि स्वामी जी के शरीर छोड़ने के थोड़े ही काल पीछे पंडित जी ने झट लोगों में अपने आप को स्वामी जी का शिष्य अपने ही मुख से प्रसिद्ध करना आरम्भ कर दीया, और इस तरीके से अन्य बहुत से अनुचित और निन्दनीय काम भी कीये जो किसी धार्मिक पुरुष से होने की आशा नहीं दिलाते ॥ और न कोई सच्चा भक्त राम का ऐसे बुरे काम कर सक्ता है ॥

कुछ काल तक वासिष्ठाश्रम में रहने के पश्चात् जब हम सब

भी उस विचित्र अन्न से घड़ी घड़ी बीमार होने लगे और स्वामी जी की अपनी दुर्बलता और शिथिलता दूर न होने पाई तो हम सब ने स्वामी जी के आगे यह प्रार्थना की " कि या तो इस अपथ्य भिक्षा के प्रबन्ध को रोक दीया जाये, और हमें नीचे दूर ग्रामों से लाने की आज्ञा दी जायें, और या आप नीचे टिहरी नगर अथवा किसी और नगर में चलें, जहां हम अपनी और आप की भिक्षा का उत्तम रीति से प्रबन्ध कर सकें, जिस से सब के शरीर अरोग होजावें ॥ " सब के कहने पर स्वामी जी ने टिहरी नगर तक उतरने को स्वीकार कर लीया, और अपने अस्बाब (पुस्तकों के सदूकों) को नीचे ले जाने का प्रबन्ध (बन्दोबस्त) करने के लिये हम सब को पहले टिहरी में भेज दीया ॥ पूर्ण जी की छुटियां खतम होने वाली थीं, इस लिये वह और उन के साथी एक मास के लगभग वासिष्ठाश्रम में रह कर अब लाहौर वापस जाने को टिहरी चले परन्तु लेखक (नारायण) सर्व प्रकार के बन्दोबस्त कर ने के लिये उन के साथ टिहरी आया ॥ जब पूर्ण जी वासिष्ठाश्रम को छोड टिहरी चलने लगे तो स्वामी जी मील

के लगभग तक उन्हें छोड़ने आये। रास्ते में (मन्दम) आहिस्तः से स्वामी जी ने कहा कि "राम शायद अब शीघ्र गुंगा (तूष्णी) हो जाये, अब आप लोग ही राम बनें। शायद राम का आप लोगों से पत्र विहार करना तथा बोलना या मिलना इत्यादि भी अब नितान्त (बिलकूल) बन्द पड़ जाये॥" इतना सुनना था कि पूर्ण जी की आंखां से प्रेमाश्रु तीव्र वेग से बहने लग पड़े। प्रेम आंसुवां का टपकना था कि स्वामी जी ततक्षण (फौरन) भाग कर तिरोधान होगये। तिस पर पूर्ण जी का रुदन और अधिक बढ़ गया और बहुत काल तक आंसुवों का तीव्र वेग उन से थामा ना गया, पूर्ण जी घण्टो तक ऐसे घायल चित्त से मार्ग चलते रहे। और बड़ी देर पश्चात धैर्यता को प्राप्त हुए॥

जब हम सब टिहरी पहुंचे, पूर्ण जी ने एक व्याख्यान टिहरी स्कूल में दीया, और दूसरे दिन वह मसूरी को चल दिये॥ लेखक स्वामी जी के असबाब (पुस्तकों के सन्दूक) उठाने का कुल प्रबन्ध करके वापस वासिष्ठाश्रम चला आया॥ स्वामी जी महाराज एक सप्ताह के भीतर २ टिहरी नगर आगये और लेखक कुल

पुस्तकों के सन्दूक इत्यादि भेज कर चार या पांच दिन पीछे टिहरी आया और दो सप्ताह तक स्वामी जी की सेवा में उन के पास सिमलासू बाग में ही रहा ॥ तदपश्चात स्वामी जी के शुद्धः चित्त में तरंग उठी कि 'अब फिर (हम) दोनों कुछ काल तक लगातार इस टिहरी नगर के समीप ज़रा एक दूसरे से दूर भागीर्थी गंगा के तट पर जुदा २ कुटिया में एकान्त निवास करें' ॥ टिहरी नगर से क्रीब ५ मील की दूरी पर मालिदेवल ग्राम के समीप एक बडे खुले मैदान में गंगा तट पर स्वामी जी ने अपने निवास के लिये स्थान चुना* और उस स्थान पर उन के लिये एक पक्की कुटिया बनवाई जाने लगपड़ी ॥ उसी स्थान से कुछ आगे तीन मील चल कर ठीक गंगा तट पर एक विशाल दैविक गुहा बमरोगी नाम से प्रसिद्ध है उस एकान्त स्थान को लेखक ने चुन लीया। और उस

---

* नोटः—यह ऐसा उत्तम स्थान है कि पूर्व भी एक बड़े प्रसिद्ध संन्यासी महात्मा "केशो आश्रम" जी ने (६०) साठ वर्ष के लगभग यहां एकान्त निवास कीया और एक सौ वर्ष से अधिक आयू पाकर उन्हों ने यहां शरीर छोड़ा था.

की सफाई और दुरुस्ती इत्यादि भी की जाने लग पड़ी ॥ वह विशाल कुद्रती (दैविक) गुहा पत्थरीली होने के कारण शीघ्र साफ और निवास योग्य हो गयी, परन्तु कुटिया नवीन बनाई जाने के कारण उतनी जल्दी तय्यार न होसकी ॥ जब गुहा की दुरुस्ती और सफाई की सूचना स्वामी जी के कान तक पहुंची तो लेखक को बुला कर कहा कि "देखो, नारायण! जब गुहा तय्यार तथा निवास योग्य हो गयी है, तो आप अभी ही वहां जाकर एकान्त सेवन करिये, राम भी कुटिया के बन जाने पर झट आप के समीप माल्दिवल आ जायेगा और एकान्त सेवन करेगा" ॥ ऐसी अनुत्त व अनिवर्तक आज्ञा (नादर हुक्म) सुनते ही लेखक ने चलने के लिये अपने बिस्तर बान्ध लीये, अर्थात कूल पुस्तकें इत्यादि संदूकों में बन्द करके चलने को उद्यत हो गया ॥ जब गुहा की ओर नारायण (लेखक) चलने लगा तो स्वामी जी नङ्गे शिर नंगे पाओं अपना सैर करने का मनशा (संकल्प) प्रकट करके साथ हो लिये। और एक मील से अधिक तक साथ गये ॥ रास्ते में इस प्रकार उपदेश करने लगे कि :—"देखो, बेटा! राम अब शायद

शीघ्र गूंगा (तूष्णी) हो जाये। शरीर तो तुम देखते हो शिथिल' कृश और दुर्बल होगया है, और प्रति दिन अधिक (कमज़ोर) होता जारहा है, और चित्त वृत्ति भी अब दुन्या से इतनी उपराम होती जाती है कि: किसी काम को भी हाथ लगाने का चित्त नहीं करता, ऐसा प्रतीत (भान) होरहा है कि शायद थोड़े ही दिनों में राम की लेखनी नितान्त बन्द हो जाये, और रामका शरीर शायद शीघ्र जड मूक आलसी हो जाये (अर्थात लिखना, पढ़ना और बोलना राम से बिलकुल छूट जाये)॥ राम का शरीर अब कदाचित नीचे (देशों में) नहीं जासकेगा। अब राम को प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है कि गंगा (भागीर्थी) तट कभी नहीं छूटेगा, जहां कहीं सें राम को बुलावा (निमन्त्रण) आवेगा वहां सब जगह तुम्हें ही जाना पड़ेगा क्योंकि पूर्व वत तुम्हें ही फिर सब स्थानों पर भेजा जायेगा॥ इसलिये ऐ प्यारे! जाओ, गुहा में खूब एकान्त सेवन करो, प्रति दिन असल राम (निज स्वरूप) में रह कर ऐन राम बनो, और वेदान्त की सच्ची मूर्त्ति (पक्की तस्वीर) बन कर निकलो, किसी प्रकार का शोक

तथा भय मत करो, नित्यशः अपने में और अपने साथ राम स्थित समझो, नित्यशः उसी का तन मन धन अपने को जानो...." यह हृदय वेधक उपदेश सुनते ही लेखक के नेत्रों से अश्रुपात होने लग पड़े। और अलग होने को नारायण (लेखक) स्वामी जी के चरणों पर गिरा हि था कि स्वामी जी के अपने अश्रु जारी हो गये। लेखक को ऊपर उठा कर घुट कर बगलगीर हुए (अर्थात प्रेम से घुट कर अपने अङ्ग लगाया) और कहा:—"बेटा! घबराना नहीं, गुहा में एकान्त रह कर खूब अध्ययन करना, नित्य आत्मचिन्तन में लगे रहना, और स्वरूप में खूब स्थिति रखना। जो लेख अभी लिखा जा रहा है जब संपूर्ण खतम होगा, राम तुम्हें तत्क्षण बुला लेगा। और जब कुटिया के बन जाने पर राम मालिदेवल में आजावेगा, तो तुम बेशक आठ २ दिन के पीछे राम के पास वहां आते रहना। राम की शारीरक जुदाई का ख्याल अधिक मत करना, और न राम की शारीरिक सेवा का अधिक शोक करना॥ राम का शरीर तो अब बे हिस्सो हर्कत (जड वत) जल्द होने वाला है, तुम अब केवल अपनी वास्तव उन्नति का

ख्याल रक्खो, किसी का सहारा (आश्रय) मत लो, अपने पाओं पर आप खड़े होना सीखो। सर्व प्रकार से पूर्ण वेदान्त की मूर्त्ति बनो, (अर्थात वेदान्त मुजस्सम हो जाओ) ॥"

लेखक को बमरोगी गुहा में आये अभी केवल पांच दिन ही हुए थे कि स्वामी जी से एक दूत यह संदेश ले कर आया कि :—

> "जो लेख (अर्थात खुद मस्ती व तमस्सके .अरूज नाम का मज़मून) लिखा जा रहा था वह शीघ्र खतम होने वाला है, इसलिये आदितवार के दिन आप आवश्य आजाना और उसे साफ़ नक़ल कर देना, ताकि उस की साफ़ नक़ल रिसाला ज़माना या किसी अन्य उत्तम पत्र में छपाने को भेजी जावे ॥"

इस संदेश के पाने पर लेखक ने आदित वार को स्वामी जी के पास स्वयं आना ही था कि उस से एक दिन .पैहले अर्थात शनिवार की शाम को महाराजा साहिब के चपरासी ने आ कर यह सूचना दी कि "स्वामी जी का शरीर गंगा में वैह गया है,

और सब लोगों ने खबर देने के लिये मुझे आप के पास भेजा है॥"
इतना सुनना था कि लेखक अपने सब कार्य बन्द करके उसी दम टिहरी की ओर दौड़ा, और रात के आठ बजे से पहिले २ टिहरी नगर पहुंचा। सब लोग रुदन व शोक कर रहे थे। स्वामी जी के रसोया (भोला दत्त) को मिलने से निम्न लिखित हाल विदित हुआ:—

स्वामी जी और मैं (रसोया) दोनों अकट्ठे गंगा स्नान करने गये थे। मैं (रसोया) तो झट स्नान करके गंगा तट पर बैठ गया, और स्वामी जी व्यायाम (वरज़श) करके फिर गंगा में स्नानार्थ घुसे॥ बड़े तीव्र वेग वाले स्थान पर जा कर स्नान करने लगे। जल स्वामी जी की गर्दन से कुछ नीचे था, पहिले एक डुबकी लगाई, तद पश्चात बहुत काल तक उसी तीव्र वेग में खड़े रहे और बदन (देह) मलते रहे। जब दूसरी टुब्बी (डुबकी) लगाने लगे, तो पाओं के नीचे से एक बड़ा पत्थर फिसल गया, और स्वामी जी बड़े गेहरे (गम्भीर) जल में जा धसे। जब उस गम्भीर जल में खड़े न होसके, तो जल का तीव्र वेग उन को बहा ले गया, और आगे बहे जाकर स्वामी जी जल के एक भारी घूम (भंवर,

whirlpool) में फंस गये । वह (रसोया) बेचारह आदमियों की मदद के लिये इधर उधर भाग कर बलपूर्वक पुकारा, मगर मंदभाग्य से उस समय कोई पुरुष बाग में न पाया ॥ उस समय टिहरी के महाराजा साहिब गंगोत्री की तर्फ से वापस अपनी राजधानी को आ रहे थे, और बाग के सब लोग महाराजा साहिब को स्वागत (इस्तक़्बाल) करने के लिये बाग छोड़ कर टिहरी नगर से भी बाहर गये हुए थे, इसलिये देर तक चिल्लाने पर भी रसोया को कोई पुरुष मदद के लिये न मिल सका ॥ जब वह (रसोया) घबरा कर इधर उधर दौड़ कर बड़े ज़ोर से चिल्लाने लगा, तो स्वामी जी ने घूम के बीच में से ही उसे यह अवाज़ दी कि :—" प्यारे ! घबराओ नहीं, हम आने का यत्न कर रहे हैं, अभी तेरे पास आये कि आये " ॥ स्वामी जी ने (१०) दश या १५ (पंद्रह) मिनट तक बाहर तट पर पहुंचने की कोशश की, मगर घूम से बाहार निकलने न पाये ॥ जब बाहार निकलने के बहुत से यत्न ठीक न बैठे तो फिर स्वामी जी ने उसी घूम के अन्दर बड़े ज़ोर की डुबकी लगाई, जिसकी सहायता से वह घूम

से वीस क़दम (३० फ़ुट) के फ़ासले पर बाहर हो धारा के ठीक मध्य में जा निकले ॥ चूंकि जल में देर से यत्न कर रहे थे, भंवर (घूम) के ज़ोर ने उन का बल बहुत सा खर्च कर दीया था और शरीर भी पैहिले से शिथिल और दुर्बल था, इस लिये घूम से निकलते ही वहीं धारा के मध्य में उन का दम टूट गया। मुख में पानी भरने लग पड़ा। ना वरले किनारे और ना परले किनारे लग सके, बलकि तीव्र वेग के वश में आ कर धारा में बहे जाने लगे॥ जब शरीर परवश होगया तो स्वामी जी से एक दो बार ज़ोर से ॐ (ओम्) उच्चारण हुवा और बैह गये, और साथ २ हाथ पाओं को समेटते गये, अन्त में कोई (२००) दो सो गज़ की दूरी पर एक पर्वत की गुहा में जल ने दबा दीये। इधर से स्वामी जी का शरीर जल के तले बैठा ही था कि उधर से झट तोपें दगती सुनाई दीं ॥ यह तोपें वैसे तो महाराजा साहिब टिहरी की सलामी (स्वागत) में दगी थीं, परन्तु ठीक स्वामी जी के तिरोधान होने के समय पर दगने से द्विगुण (दो चंद) मतलब सिद्ध कर गयीं ॥ इसतरह से स्वामी जी का शरीर जल में समा गया अर्थात्

तिरोभान होगया ॥

रसोया के मुख से ऐसा शोचनीय (दर्द नाक) वृतान्त सुन कर चित्त पर अति ठेस (चोट) लगी। यह सब वृत्तान्त नारायण की अनुपस्थाति काल (ग़ैर हाज़री) में हुवा था, इसलिये कुछ तो इस कारण से दिल को पछतावा होता था और कुछ जलका राम के शरीर को विवश करके वहा लेजाना चित्त को दुःख देता था॥ नाना प्रकार के ख्याल उमंड २ कर चित्त को घेरने लगे॥ कभी अपने मनसे एसे पूछता, "कि राम तो अपनी इच्छा विना शरीर त्याग नहीं सक्ते थे अब पानी भला कैसे विना इच्छा (मर्जी) राम के उन के शरीर को वहा ले गया? आया, राम की इच्छा तथा आज्ञा अनर्व, प्रबल तथा अनटल है या मुर्दाः जल का वेग?। राम तो सर्वदा यह कहा करते थे कि 'मौत को मौत न आजायगी, यदि राम का संकल्प (क़सद) कर के आयेगी'। परन्तु अब यह सब उस के उलट ही दिखाई दीया"॥ इधर तो अनेक प्रकार के ख्याल और वैह्म अपना रंग दिखाते थे और उधर लेखक जब स्वामी जी के निवास स्थान में जाता तो स्वामी जी की पुस्तकों के संदूकों पर नज़र

पड़ते ही आंसुओं से भीग जाता, और दिल रो रो कर यूं (ऐसे) पुकारता कि "हाये ! इन (अनन्त) नोटों, अत्यन्त लाभदायक असंशोधित लेखों, उपदेशों और उत्तम २ पुस्तकों का संशोधन तथा उनकी उत्कृष्ट तरतीव और तशरीह (भाष्य) राम जैसी अब कौन करेगा ?"॥ चित्त न तो स्वामी जी के निवास स्थान को जाने देता और न उन की किसी पुस्तक को देखने तथा पढ़ने को उद्यत होता॥ नगर में जाता तो लोग शोक चर्चा ले बैठते जिस से ख्वाह मख्वाह चित्त शोकातुर होजाता। इस लिये कई दिन तक पागलों की तरह नारायण (लेखक) स्वामी जी के निवासाश्रम के बाहर गंगातट पर और जंगल में घूमता रहा॥ लेखक को स्वामी जी के तिरोधान होने से इतना दुःख और पछतावा नहीं होता था जितना कि स्वामी जी की वाणियों तथा वाक्यों के ग़लत प्रतीत होने से हो रहा था। क्योंकि संन्यासावस्था प्राप्त होन के पश्चात् स्वामी जी सारी जिन्दगी (जीवन) भर लेखक को ऐसे ही कहते रहे और पत्रों द्वारा लिखते रहे कि:—"जब तक राम स्वयं नहीं चाहेगा शरीर को मौत (मृत्यु) कदाचित

नहीं आयगी इत्यादि।"

जब ऐसे पागल, उपराम और शोकातुर हुआ २ लेखक सर्व कामों को छोड़ बेकार घूमता २ टिहरी नगर में आनिकला तो प्यारे पूर्ण जी उधर प्रकट हुए॥ यह प्यारे लेखक से भी अधिक इस शोक में डूबे हुए थे और कहने लगे कि "राम का इसतरह जल के वश में आकर शरीर छोड़ना राम के कई वाक्यों और लेखों को झूठा और ग़लत साबत कर रहा है, इसलिये राम की अन्य वाणियों पर भी चित्त अब निश्चय करने में उद्यत नहीं होता। वरन (बलकि) रहा सहा निश्चय भी मलिया मेट हुए जा रहा है।" इस तरह परस्पर बात चीत होते २ जब पूर्ण जी को यह विदित हुआ कि नारायण (लेखक) मारे उपरामता के अभी तक राम की पुस्तकों और कागज़ों को भी नहीं छूआ, और ना ही वह उस लेख (मज़मून) को कि जिस की नक़ल करने के लिये राम महाराज ने बुला भेजा था नज़र भर कर देख सका, तो उन्हों ने लेखक को राम के निवास स्थान पर जाने के लिये उकसाया। जिस से उसी रात्रि को हम दोनों राम जी के आश्रम पर गये और रात्रि भर वहां आराम

कीया। दिन चढ़ते ही संन्दूकों और बाहर खुले कागजों को दत्त चित्त हो देखना प्रारम्भ कीया। एक दो खुले पत्रों (कागज़ों) को देखने के पश्चात् वह लेख* (मज़मून खुद मस्ती–व–तमस्सके .अल्ज़) जिस की खातर नारायण बुलाया गया था हम दोनों के हाथ पड़ गया। आदि से पढ़ा जाने लगा। अभी तक किसी पत्रे पर पृष्ठे का नम्बर नहीं दिया हुआ था। इस लिये उसका जो भी पन्ना (पत्रां) हाथ में पड़ा उसी को देखना आरम्भ कीया। इस प्रकार केवल एक दो वर्क़ (पत्रे) ही देखे थे कि एक वर्क़ाः (पत्रः) ऐसा हाथ में आया, जिस के एक तर्फ़ बहुत साफ निम्न लिखित लेख (मज़मून) लिखा हुवा था।

" **ब्रह्मा, विष्णु, शिव, इन्द्र, गंगा, भारत !**

ऐ मौत (मृत्यु)! बेशक उड़ा दे इस एक जिस्म (शरीर)

---

* यह कुल लेख राम की क़लम (लेखनी) से लिखा हुवा नारायण ने राम मठमें सम्भाल कर रक्खा हुवा है ताकि जो राम भक्त इस असल को देखकर, या पढ़ कर आनन्द लेना चाहें वह सुगमता से ले सकें॥

को, मेरे और अजसाम (अनेक शरीर) ही मुझे कुछ कम नहीं। सिर्फ चांद की किरणें, चान्दी की तारें पैहन कर चैन से काट सक्ता हूं। पहाड़ी नदी नालों के भेस (वेष) में गीत गाता फिरूंगा। बहरे मव्वाज (लेहरें मारता हुवा समुद्र) के लिबास (पोशाक वस्त्र) में मैं ही लैहराता फिरूंगा। मैं ही बादे खुश खराम, नसीमे मस्ताना गाम हूं (अर्थात मैं ही आनन्द मय मंद स्पन्द तथा शीतल और सुगन्ध भरी वायु हूं) मेरी यह सूरते सैलानी (सैर करने वाली अथवा जलमय मूर्ति) हर वक्त रवानी (अस्थिर या चलायमान) में रहेती है। इस रूप में पहाड़ों से उतरा, मुरझाते पौदों को ताज़ाः कीया। गुलों (पुष्पों) को हंसाया, बुलबुल को रूलाया, दरवाज़ों (द्वार) को खट खटाया, सोतों को जगाया, किसी का आंसू पोंछा, किसी का घुंघट उड़ाया। इस को छेड़, उस को छेड़, तुझ को छेड़। वह गया, वह गया। न कुछ साथ रक्खा न किसी के हाथ आया॥ ”

आखरी पङ्क्ति के नीचे एक लम्बी और मोटी रेखा (लकीर) खिची हुई थी

इस कुल लेख को पढ़ते ही हम दोनों के कुल वैहम, शक, ग़म और फ़िकर सब काफ़ूर (दूर) हो गये और सब हृदयस्थ दुःख मलिया मेट हो गये। चित टिकाने पर आ गया, बलकिः राम के शरीर छोड़ने का वृत (वाक्या) भी भूल गया॥ फिर तो सब सन्दूक खोले। प्रत्येक कागज़ और पुस्तक संदूकोंसे नकाल कर दतचित से पढ़े गये। जितने नवीन उपदेश और लेख अंग्रेज़ी भाषा में लिखे हुए पाये वह सब के सब एक स्थान पर एकत्र कीये गये। और फिर शनैः २ विषयानुसार सात भागों में बांटे गये॥ जो तीन जिल्दों में छापे गये हैं और लाला अमीर चंद प्रेम धाम बड़ा दरीबा देहिली के पते से मिलते हैं॥

यह उर्दू भाषा का लेख जिस में स्वामी जी ने अपनी लेखनी से (काल भगवान) मृत्यु को बुलाया था, वह सारा का सारा खुले पत्रों में स्वामी जी की मेज़ पर पाया गया था। जब उन के रसोया से पूछा गया कि यह लेख कब और किस से मेज़ पर रखा गया था तो उस ने यह जवाब दीयाः

"स्नान करने से कइ घंटे पैहिले स्वामी जी इन कागज़ों पर

कुछ लिख रहे थे। जिस समय यह कागज़ स्वामी जी के हाथ में थे, मुख उन का लाल, मस्त और जगमगाता था। आंखों से मोतियों के सदृश अश्रू (आंसू) टपकते थे। शरीर इस लेख के लिखने में ऐसा युक्त था कि हिलता भी नहीं था। उस काल स्वामी जी अपने ध्यान में ऐसे मेह्व (युक्त चित्त) थे कि दुन्या से बिल्कुल बेखबर प्रतीत होते थे। मैं कितनी देर पास खड़ा रहा मगर मेरी ओर दृष्टि तक न की॥ ग्यारह बजने लगे थे, मैं खबर देने आया कि भिक्षा त्यार है। आप उस काल भी बिल्कुल समाधिस्थ थे। लेखनी और कागज़ हाथ से छूटे पड़े थे। दबे लबों से (मन्द आवाज़ से) मैं ने कहा " कि भगवन! भिक्षा तय्यार है, " मगर कुछ न जवाब मिला। थोड़े काल पीछे फिर बोला, " कि महाराज! भिक्षा आप की बाट ताक रही है "॥ इस बार ज़रा ज़ोर से बोला था, स्वामी जी ने मेरी आवाज़ सुनकर आंखें खोलीं और पूछा 'बेटा! क्या कहता है?' मैं ने प्रार्थना की कि 'महाराज! भिक्षा त्यार हो-गयी है आप आज्ञा करिये, आप के स्नान की खातर जल ऊपर

लाऊं या आप गंगा तट पर जाकर स्नान करेंगे' ॥ हंस कर बोले कि 'तुम ने खाना अभी तक कुछ खाया है या नहीं'। मैं ने उत्त्र दीया कि 'महाराज! मैं ने अभी तक कुछ नहीं खाया, मैं भी आज गंगा स्नान करके खाऊंगा' ॥ मेरे इस उत्त्र पर स्वामी जी बहुत हँसे और मुझे आश्चर्यवत (हैरान* होकर) पूछा, 'कि आज, प्यारे! तुम्हारे स्नान का क्या कारण है, तुम क्यों आज गंगा स्नान करके भोजन पाओगे!' मैं ने उत्तर दीया कि 'महाराज! आज भारी पर्व का दिन है:—प्रथम तो दीपमाला है, द्वितीय संक्रान्त, और तीसरे अमावस्या है। इस लिये मैं भी आज गंगा स्नान करके ही भोजन पाऊंगा' ॥ स्वामी जी के पाओं पर व्यायाम करते समय किञ्चित् चोट लग गयी थी, दो चार दिन से वह ऊपर गंगा जल मंगवार कर स्नान करा करते थे, मेरे इस

---

* टिहरी पर्वत में द्विज लोग प्रति दिन गंगा स्नान नहीं करते। खास कर शीत काला में तो कई दिनों तथा मास के पीछे किसी खास पर्व के दिन गंगा स्नान करते हैं। इस लिये रसोया के गंगा स्नान की खबर ने स्वामी जी को आश्चर्य मय कर दीया ॥

उत्तर के सुनने पर उन्हों ने भी अपनी कुटी में स्नान करना उचित न समझा, और कहा कि अच्छा, प्यारे ! आज राम भी नीचे गंगा तट पर जाकर स्नान करेगा ! चलो हम दोनों अकट्ठे ही चलें" ॥ इस प्रकार से स्वामी जी और मैं दोनों अकट्ठे गंगा स्नान करने चले गये ॥ स्वामी जी तो तट पर पहुंच कर व्यायाम करने लग पड़े। और मैं कपड़े उतार कर स्नान करने लग पड़ा। मैं स्नान करके तट पर बैठ गया, और स्वामी जी फिर स्नान करने गंगा में प्रविष्ट (दाखल) हुए, जिस के उपरान्त उन के बह जाने का वृत्त (वाक्या) हुआ" ॥

रसोया के कुल कथन से स्पष्ट प्रतीत होता है कि लेख को लिखते समय स्वामी जी का चित्त या तो शरीर के अति दुर्बल, शिथिल, रोगी और बिलकुल बेकार होने के कारण शारीरक जीवन (जिन्दगी) से अति उपराम हुआ २ था जिस से कि उन्हों ने मृत्यु को बुलाया और उसे शरीर के लेजाने की आज्ञा दी। या उन का चित्त अपने आनन्द स्वरूप में इतना अति मग्न, तृप्त, मस्त और डूब गया था कि उस अत्यन्तानन्द को पा कर फिर शरीर

को उठाये फिरना या उस की रक्षा में ज़रा सी वृत्ति देना उन्हें विषम (बोझल) और हानिकारक महसूस हुआ था जिस से कि मृत्यु को बुला कर इस को उड़ाना चाहा। और या जैसे श्री स्वामी शंकराचार्य जी ने उचित समझ कर अपने शरीर को जान बूझ कर हिमालय में जाकर वर्फों में गिला दीया था इसीतरह स्वामी जी ने भी शरीर को शिथिल, दुर्बल और बेकार समझ कर उचित अवसर पा उसे जान बूझ कर गंगा में बहा दीया। परन्तु जल में शरीर के बचाने की खातर उन का देर तक लगातार यत्न करना इस अन्तम नतीजे को ठीक सिद्ध नहीं करता॥ खैर, पाठक ख़्वाह कुछ ही नतीजा निकालें, राम महाराज का यह उपकारक शरीर ठीक दीपमाला (दिवाली) के दिन अर्थात् १७ अक्टूबर सन १९०६ तदनुसार संवत १९६३ कार्तिक की अमावस्या को दुपैहर के समय महाराजा साहिब टिहरी के बाग़ीचे (सिमलासू) के नीचे भृगु गंगा में बैह गया और नित्य के लिये सब को अपनी जुदाई दे गया॥

एक सप्ताह के पीछे स्वामी जी का शरीर फूल कर जल से

बाहर निकल आया। फूला हुवा शरीर जब किनारे पर लगा, तो उस समय भी समाधि अवस्था में स्थित पाया गया। दोनों हाथ और बाज़ू (बाहें) अपनी छाती पर एक दूसरे के उपर रक्खे पालती लगाये नज़र आते थे। आखें बन्ध थीं मानो अभी भी समाधिस्थ हैं। गर्दन सीधी खड़ी हुई। मुंह ॐ कहते २ खुला हुवा, ऐसे स्पष्ट खुला हुवा था मानों अभी ॐ उच्चारण हो रहा है। आठ दिन तक जल के जीवों से शरीर जल में बचा रहा। बाहर आने पर एक सन्दूक में बन्ध रख कर संन्यासविध्यानुसार भागीर्थी गंगा में परवाहा दीया गया, और श्री गंगा जी ने अपने प्यारे को नित्य के लिये अपने में मला लिया॥

महाराज साहिब टिहरी जिन को कि स्वामी जी से अति प्रेम था और जिन्हों ने स्वामी जी के बहे जाने का समाचार सुनते ही कैई घंटों तक अपने महल में उस रात्रि दीपमाला बन्द कर रक्खी थी जब स्वामी जी का शरीर बाहर निकल आया और अर्थी में रख कर गंगा ओर लेजाया जाने लगा तो उन्हों ने अपने सब दफतर बन्ध कर दीये॥ इसी प्रकार जहां कहीं यह शोक समाचार

पहुंचा वहां शोक प्रकट करने अर्थ सभायें की गयीं ॥

स्वामी जी के शरीर का यह अति संक्षेप जीवन चरित सरल हिन्दी में दीया गया है, विस्तार पूर्वक चरित अंग्रेजी भाषा में प्यारे पूर्ण जी से लिखा जा रहा है जिस का अभी कुछ पता नहीं कि कब तिय्यार हो ॥ अपने विषय में जो कुछ स्वामी जी ने आप स्वतः लिखा हुवा था या जो उन से लेखक ने स्वयं सुना था या जो समय २ पर लेखक ने खुद देखा था या जो थोड़ा सा स्वामी जी के देह के संबन्धियों से सुना था वह कुल का कुल इस संक्षिप्त जीवन चरित में बहुत सरल भाषा में दीया गया है, इस से अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं ॥ इस जीवन चरित के छप जाने के पीछे स्वामी जी की लेखनी से लिखे हुए ११०० ग्यारह सौ पत्र लेखक के हाथ लगे हैं। यह सर्व पत्र (खत) स्वामी जी ने कालिज के दिनों में अपने गृहस्थाश्रम के गुरु (भक्त धन्ना राम) जी को लिखे थे। पत्र व्यवहार स्वामी जी ने अपने गुरु जी के साथ ऐसे समय आरम्भ करा था जब उन की आयु लग भग १५ (पंद्रह) वर्ष के थी, और कालज में अभी नहीं गये थे ॥ इस लिये इन

पत्रों द्वारा स्वामी जी की बाल्यावस्था का हाल भी उन की अपनी लेखनी से पूरा २ प्रकट हो रहा है ॥ इन पत्रों के पढ़ने से मालूम हुआ कि जो वृत्तान्त स्वामी जी के विषय में उन के संबन्धियों इत्यादि से सुन कर (पृष्ठ १०, ११ व १८ से लेकर ३० तक और पृष्ठ ३४ से लेकर ३७ तक लेखक ने) दिया है वह वृत्तान्त यदि मतलब (तात्पर्य) रूप से तो कुछ ठीक उतरता है परन्तु एक २ शब्द करके बिलकुल पूरा नहीं बैठता । इस लिये यद्यपि विरुद्ध तथा ग़लत शब्दों को शुद्धिः पत्र में संशोधन करके दे दिया है तथापि प्रत्येक शब्द से वह वृत्तान्त मानने योग्य नहीं ॥ अब यह हिन्दी राम वर्षा अपनी असली भाषा (उर्दू) में छपने लगी है, आशा है कि उस उर्दू राम वर्षा के प्रस्ताव में यह वृत्तान्त ठीक रीति से दिया जायगा ॥

पृष्ठ ३८ से लेकर अन्तिम तक कुल वृत्तान्त लेखक का अपना देखा हुआ है या स्वामी जी से सुना हुआ है इस लिये वह सम्पूर्ण रीति से मानने योग्य है ॥

स्वामी जी के संक्षिप्त पत्र भी उर्दू भाषा में छप रहे हैं, आशा

है कि दो या तीन मास के अन्दर २ एक पुस्तकाकार में वह निकलेंगे। और लाला अमीर चन्द प्रेम धाम बड़ा दरीवा देहिली के पते से मिलेंगे, अन्य भाषा में स्वामी जी की पुस्तकें भी इन ही से मिलेंगी ॥

नारायण स्वामी
शिष्य श्रीमान मुक्त पुरुष स्वामी राम तीर्थ जी
महाराज

विषय सूचि.

नम्बर | विषय वार भजन | पृष्ठ

वेदान्त.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
२४	उत्तरा खंड में निवास स्थान का वर्णन	४७०
२५	चांद की कानून (लाजम सुनते २ राम को)	४८१
२६	आरसी (दुल्हन को जानु से बढ़ कर भाती है आरसी)	४८४
२७	तस्वीरे यार (इस लिये तस्वीरे यार हमने खिचवाई नहीं)	४८६
२८	ख्याल दुन्या दार का (जे न मिलदा धन मिलीयां अमीर है)	४८७
२९	राम का एक प्यारे के नाम खत (आ देखले बहार कि....)	४८८
३०	बदले हैं कोई आन में अब रंगे जमाना	४९२

माया और उस की हकीकत.

तीन शरीर और वर्ण.

नम्बर	विषय वार भजन	पृष्ठ
३	सूक्ष्म शरीर	५२१
४	स्थूल शरीर	५२३
५	आज्ञा गगन	५२४
६	आत्मा	५२५
७	तीन वर्ण (असल को अपने भूल कर इन्सान्)	५२६
८	शूदर (क्षुद्र) वर्ण	५२७
९	वैश्य वर्ण	५२९
१०	क्षत्रिय वर्ण	५३१
११	ब्राह्मण वर्ण	५३८
१२	दुन्या की हक़ीक़त	५४१
१३	जाते बारी	५४९
१४	जवाब	५४९
१५	आदमी क्या है ?	५६१

नम्बर | विषय वार भजन | पृष्ठ

भारत वर्ष.

राम वर्षा

दूसरा भाग.

राम की विविध लीला.

वेदान्त.

आज़ादी.

(१) सोहनी ताल दीपचन्दी

चल वे आज़ादी खुशी की रूह उम्मीदों की जां ।
बुल्बुलामां दम से तेरे पेच खाता है जहां ॥
मुल्क दुन्या के तेरे बस इक कृशमा पर लड़े ।
खून के दर्या बहाये नाम पर तेरे मरे ॥
हाय मुक्ति, रस्तगारी, हाय आज़ादी नजात ।

१ नाज़, नगह २ छुटकारा ३ मुक्ति

मक़सदे[4] जुमला[5] मज़ाहब[6] है फक़त तेरी ही ज़ात ॥
उंगलयों पर बच्चे गिन्ते रहते हैं हफ़तः के रोज़ ।
कितने दिन को आयेगा यकशंबः[7] आज़ादी[8] फरोज़ ॥
रम ब्रांडी के मुकैयद[9] सच्ची आज़ादी से दूर ।
हो गये नशे पै लट्टू, बैहरे आज़ादी[10] सरूर ॥
साहबो! यह नींद भी मीठी न लगती इस क़दर ।
क़ैदे तन से दो घड़ी देती न आज़ादी अगर ॥
क़ैदे में फंस कर तड़पता मुर्ग़ है हैरान हो ।
काश[11]! आज़ादी मिले तन को नहीं तो जान को ॥
लम्हा[12] जो लज़्ज़त मज़े का था वह आज़ादी का था ।
सच कहें, लज़्ज़त मज़ा जो था वह आज़ादी ही था ॥
क्या है आज़ादी? जहां जब जैसा जी चाहें करें ।
खाना पीना ऐश[13] गुलछर्रों में सब दिन काट दें? ॥

४ नतीजा (असली गर्ज़) ५ सब ६ मज़हब, धर्म ७ आदित वार ८ आज़ादी देने वाला ९ क़ैदी १० आज़ादी के आनन्द की खातर ११ ईश्वर करे १२ एक पल १३ विषय भोग

राग शादी नाच .इशरत जल्से रंगा रंग के।
बंगले बाग़ात आली....योरोपीयन ढंग के? ॥
वज़ा टोपी की नयी फैशन निराला बूटका।
दिलकशो बेदाग़ खुलना बदन पर यह सूट का? ॥
दिलको रंगन जिस की भाये शादी बेखटके करें।
धर्म की आयीन चुपके ताक पर ले कर धरें? ॥
बग्घें फ़िटन के आगे कोचवान का पोश पोश।
अबलकों का वह निकलना, हिनहिना जोश जोश? ॥
कोट पैहनाता है नोकर, जूता पैहनाये .ग़ुलाम।
नाक चढ़ाता है आक़ा, जल्द बेनुलफा ह़राम! ॥
मुंह में घट घट सोडावाटर और सिगारों का धूंवा।
ज़ोफ़ की दिल में शकायत, राम की अब जा: कहां? ॥
क्या यह आज़ादी है? हाय! यह तो आज़ादी नहीं।

१४ विषयानन्द १५ अंग्रेज़ों की तर्ज़ के मकान १६ वज़ा तर्ज़ १७ दिल को खैंचने वाला १८ खुशी १९ क़ानून (आज्ञा) २० घोड़े २१ कमज़ोरी

गोये[२२] चौगां की परेशानी है-आज़दी नहीं ॥
अस्प[२३] हो आज़ाद सरपट, क़ैद होता है स्वार ।
अस्प हो मुतलक़[२४] .इनां, हैरान रोता है स्वार ॥
इंद्रियों के घोड़े छूटे बाग डोरी तोड़ कर ।
वह मरा वह गिर पड़ा, स्वार सिर मुंह फोड़ कर ॥
ताज़ी[२६] तौसन तुंद[२७]खो पर दस्तो पॉ जकड़े कड़े ।
ले उड़ा घोड़ा मिज़प्पा[२९] जान के लाले पड़े ॥
जाने मन[३०] आज़ाद करना चाहते हो आप को ।
कर रहे आज़ाद क्यों हो आस्तीं[३१] के सांप को ? ॥
हां वह है आज़ाद जो क़ादिर[३२] है दिल पर जिस्म पर ।
जिसका मन काबू में है, .कुदरत[३३] है शकलो इस्म पर ॥

२२ खेलने वाले गेंद २३ घोड़ा २४ विलकुल २५ लगाम डोरी से क़ावू कीया हुवा २६ .अर्बी घोड़ा २७ बदमज़ाज़ तेज़ २८ हाथ पांवों जकड़े हूवे २९ .अर्बी घोड़ेका नाम है ३० ऐ मरी जान (प्यारे) ३१ बगल, कखारियाली ३२ बलवान ३३ ताक़त, वल

ज्ञान से मिलती है आज़ादी यह राहत[34] सर बसर[35]।
वार के फेंकूं मैं इसपर दो जहां का माल[36] ज़र॥

३४ आराम ३५ लगातार ३६ धन, दौलत

---

२ वेदान्त आलमगीर

(१) गर कमिश्नर हो लाट साहब हो।
या कोई और गैर साहब हो॥
हर कोई उस तलक नहीं जाता।
अधिकारी ही है दखल पाता॥
लैक[1] जब अपने घरमें आना हो।
कौन है उस वक़्त जो मानि[2] हो॥
जब कोई अपने घर को आता है।
हैफ उस पर है, रोकता जो है॥
हो जो वेदान्त गैर से यारी।

१ लेकन २ मना करने वाला

तब तो कहना बजा था अधिकारी ॥
यह तो जी! अपने घरकी विद्या है।
पाना इस को फर्ज सब का है ॥
"मैं हूं खुद ब्रह्म" यह करो अभ्यास।
मैं नहीं जिस्मो इस्मो[3] नौकर दास ॥
"मैं हूं बेलौस[4] पाक आला ज़ात"।
जेहल की हो कभी न जिस में रात ॥
मैं हूं खुर्शीद[5] तेज़ अनवर[6] आप।
मैं था ब्रह्मा का बाप सब का बाप ॥
वेद है मेरा एक खर्राटा।
भेद दुन्या का मेरा खर्राटा ॥
राम कहता नहीं है सैकंडहैंड[7]।
वह तो खुद है श्रुति, न सैकण्डहैंड ॥
वह जो कमज़ोर आप होते हैं।

३ शरीर और नाम ४ बग़ैर कलंक, बेदाग़ ५ सूरज ६ प्रकाशों का प्रकाश ७ दूसरे से सुनी सुनाई

लुक़्माये तीन ताप होते हैं ॥
दों न पढ़ाने के जो अधिकारी ।
उन को मिलना नहीं है अधिकारी ॥

(२) एक दफा देव ऋषि नारद ने ।
देख कर खूक से कहा उस ने ॥
"चल तुझे ले चलेंगे हम वैकुंठ ।
लीला अद्भुत विचित्र है वैकुंठ" ॥
खूक बोला ग़ज़ब से तब नादां ।
"क्या मुझे मिल सकेगा कीचड़ वाँ? ॥
जब ऋषी ने कहा "नहीं यह तो" ।
खूक बोला "मैं जाऊं काहे को?" ॥
यह न समझा वहां जो जाऊंगा ।
जिस्म भी तो नया ही पाऊंगा ॥
हवसे दुंन्या के प्यारे शहतीरां ! ।

८ ग्रास ९ लायक़ १० वराह, सूवर ११ वहां से मुराद है १२ दुन्या के लालची

ऐ सतूनहाये दुन्या या बोहतान[13]! ॥
तुम न जी में ज़रा भी घबराओ ।
खटका मुतलक़ न दिलमें तुम लाओ ॥
"हाये! वेदान्त क्या ही कर देगा ।
ज़ेर[14] कर देगा, ज़बर[15] कर देगा ॥
तुम रखो अपने जी में इतमीनान[16] ।
शक नहीं इस में इक रत्ती भर जान ॥
गर अवारज़[17] तेरे वदल देगा ।
साथ तुम को भी और कर देगा ॥
लोटना छोड़ियेगा कीचड़ में ।
ज़ालसाज़ी में झूठ की जड़ में ॥
खाक दुन्या की मत उड़ायेगा ।
असल अपना न भूल जायेगा ॥

१३ झूटे १४ नीचा १५ ऊंचा १६ हौंसला, तसली
१७ इर्दगिर्द, दुःख

"मैं हूं यह जिस्म", फोहश बोली है।
स्वांग छोड़ो, सितम यह होली है॥

(३) मिसर की खोद लें जो मीनारें।
हाये मुर्दों भरी वह मीनारें॥
ममी मुर्दे उन्हों में रखे थे।
ऐसी तरकीबो अक़लमन्दी से॥
गो हज़ारों बरस भी हों बीते।
मुर्दे आते नज़र हैं जूं जीते॥
प्यारे भारत के हिन्दू बाशन्दो!।
गुस्सा मत करना, ज़ोहदो रिन्दो!॥
जी रहे हो कि मर गये हो तुम?।
ममी मीनार बन गये हो तुम?॥
जीते तुम थे ऋषी मुनी थे जब।
ममी क्यों हो हज़ार साल के अब!॥

१८ गज़ब की होली १९ कर्मकाण्डी २० मस्त

क्यों हो ज़िन्दा* बदस्ते मुर्दा आप ।
नाम रौशन डबोया उन का आप ॥
वह तो जीते थे तुम भी जी उट्ठो ।
मुर्दा बच्चे न उन के हो बैठो ॥
नाम तो ले रहे हो व्यास का तुम ।
काम करते हो अदना दास का तुम ॥
बेटा वही सपूत होता है ।
बाप से बढ़ के जो पूत होता है ॥
छोड़ दो नाम लेना ऋषीयों का ।
खुद ऋषी हो अगर न अब बनना ।
जब यह कहना है एक नालायक़ ॥
"भृगू मेरा बज़ुर्ग था लायक़"
भृगू मनंसूब[२१] उन से होता है ।
शर्म से [1]अर्क़ [2] रोना है ॥

२१ नसल से निसबत रखना * जीते जी मौत के हाथ होना [1] पसीना २ रोना

दुःख मत दो उन्हें सताओ मत ।
शर्म से सर नँगू बनाओ मत ॥

नाम *लेवे, अजब मिले ऐसे ।
धब्बे यह नाम को लगे कैसे? ॥

मूछ दाढ़ी लगा के बुड्ढे की ।
बच्चा बूढ़ा नहीं कभी होगा ॥

उस को वाजब है तरबीयत पाये ।
वक़्त पर यूं बज़ुर्ग ही होगा ॥

उन की डाढ़ी लगाया चाहते हो ।
तरबीयत[23] से गुरेज़[24] करते हो ॥

है मुनासब बज़ुर्ग की ताज़ीम ।
खंदः[25] और न, चाहे तकरीम[26] ॥

बूढा खाता है खिचड़ी पतली रोज़ ।

२२ नीचे सिर २३ पालन पोसन, तालीम पाना २४ भागना २५ हंसी २६ .इज्ज़त * नाम लेने वाले

नकल से कब जवां हो पीरोज़[27] ॥
प्यारे! बनियेगा आप ज़िन्दाः पीर।
उन बज़ुर्गों की मत बनो तस्वीर ॥
नक़श जब है उतारता नक्काश ।
तकता रहता है असल को नक्काश ॥
नक़श यह गरचिः बादशाह का हो ।
फिर भी मुर्दा है, ख्वाह किसी का हो ॥
फ़ेल अर्तवार[28] ऋषीयों मुनीयों के ।
ऋषी तुम को नहीं बना सकते ॥
अमल ज़ाहर जो उन को ज़ेबा थे ।
वक़त था और, और ही दिन थे ॥
जिस्म उन के थे जो, उन्हीं के थे ।
वह तुम्हारे नहीं कभी होंगे ॥
करके तक़लीद[29] तुम बना ही लो ।

२७ बुड्ढा २८ तरीके, कर्म २९ उपर की देखा देखी, बग़ैर दर्याफत के किसी की पैरवी करना, या नक़ल करना

सूरते शेर, नारंह[30] क्योंकर हो ॥
आओ तजवीज़ एक बतलायें ।
ऋषी बनने की बात जतलायें ॥
देह सूक्ष्म को और कारण को ।
चीर कर चढ़िये मिहरे[31] रौशन को ॥
चढ़िये ऊपर को असल अपने को ।
ज़िंदगी तुम में भी ऋषी की हो ॥
मिहरे रौशन जो आत्मा है तेरा ।
यहं ही वासिष्ट कृष्ण राम का था ॥
उस में निष्ठा नशस्त कर मुख्तार ।
छोड़िये ज़िकरो फिकर सब बेकार ॥
नक़ल मत कीजीये फेले बेरूनी[32] ।
आत्मा एक ही है अन्दरूनी ॥

३० गर्ज . ३१ प्रकाश स्वरूप सूरज (आत्मा) ३२ बाहर के कर्मों की

ब्राह्मणो! आप सीख लो विद्या।
फिर यह घर घर फिरो पढ़ाते जा॥
और क़ौमें तुम्हारे बच्चे हैं।
गर शक़ायत करें, वह सच्चे हैं॥
जब्र से, क़ैह्‌र[23] से, महब्बत से।
ज्ञान दीजे उन्हें मुरव्वत[24] से॥
वक़्त उपदेश को अगर दोगे।
तो ही क़ायम स्वरूप में होगे॥
गंगा हर वक़्त बैहती रहती है।
साफ निर्मल जभी तो रहती है॥
कांटे बोता है, झूट हो जिस में।
याद रखना, है मौत ही उस में॥

२३ गुस्से २४ मरदानगी से

(३) ज्ञान के बिना शुद्धि नामुमकन

पिदरे[1] मजनू ने पिदरे[2] लैली से।
गिरया[3] ज़ारी से आ कहा उसने ॥
मेरी सारी रियास्तें लीजे।
.उमर भर तक .गुलाम कर लीजे ॥
मेरे लड़के को लैली जादू चशम।
दीजे छोड़ दीजे आखर खशम[4] ॥
पिदरे लैली ने फिर महब्बत से।
यूं कहा प्यार ही का दम भर के ॥
मैं तो हाज़र हूं लैली देने को।
.उज़र कोई भी है नहीं मुझ को ॥
पर वह आखर जिगर का टुकड़ा है।
न वह पत्थर शजर[5] का टुकड़ा है ॥

१ मजनू (एक आशक़ हूवा है) का पिता २ लैली (माशुक़ाः) का पिता ३ रोते रोते ४ .गुस्सा, खफगी ५ वृक्ष, दरखत

वह भी इन्सान शिकम से आयी है।
आस्मां से तो गिर न आयी है॥
क़ैस तुम को अज़ीज़ बेशक है।
पर वह *मजनूं है, इस में क्या शक है॥
ऐसी हालत में लड़की क्योंकर दूं।
इक जनूनी के मैं गले मढ़ दूं?॥
मर्ज़ मजनूं का पहले दूर करो।
सिर से सौदा अगर काफ़ूर करो॥
शौक़ से लीजे, तब तुम्हारी है।
लैली दौलत यह सब तुम्हारी है॥
हाय ज़ालिम सितमगर बेरह्म!।
वाये नादां गुरूर मूरते ज़हम!॥
देता लैली को वाये आज नहीं।
और मजनूं का तो इलाज नहीं॥

६ मजनूं ७ पागल पन ८ दुःखरूप (तकलीफ़ देने की सूरत वाला) * पागल

और तो सब इलाज कर हारा ।
बचता मजनूं नहीं वह बेचारा ॥
मारा मजनूं बग़ैर लैली के ।
था न *चारा बग़ैर लैली के ॥
हिन्दू पंडित महात्मा साधो ! ।
जी कड़ा क्यों है ? रैह्म को राह दो ॥
जीव मजनूं बना है दीवाना ।
दशते ग़म छानता है वीराना ॥
दशते दुन्या में वैहशी आवारह ।
लैली "आनन्द" के लीये पारा ॥
लैली समझे गुलों को चुनता है ।
फिर पड़ा सिर को अपने धुनता है ॥
सरु को जान कर यह लैली है ।
वैहम से जान अपनी खो दी है ॥

*.इलाज ९ दुन्या के जंगल १० वेक़रार ११ एक वृक्ष का नाम है.

चश्मे आँहू[12] को चश्मे लैली मान।
पीछे भटका फिरे है हो हैरान[18] ॥
असली आनन्दे .जात से महरूम[15]।
खारो खँस[14] में मचा रहा है धूम ॥
गाह आनन्द ज़र को माने है।
बौलें[16] में गाह खाक छाने है ॥
लोग कहते न हों बुरा मुझ को।
नंग रह जावे, नाक हाथी को ॥
राये लोगों की, अहो मुँतग़य्यर[17]।
इस के पीछे फिरे है मुतहय्यर[18] ॥
सारी वहशत[19], यह वादियों गर्दी।
लैली खातर है, जुमेला सिरदर्दी ॥

१२ मृग की आंख १३ वेखबर १४ खाक मट्टी में १५ कमी १६ मूत, पेशाब (पेशाब की जगह) १७ बदलने वाली १८ हैरान हुए २ १९ हैवान पना, पशुपन २० जंगलों में घूमना २१ सब, कुल

लैली मिलते जुनूं[22] जायेगा।
ब्रह्म विद्या बेदूं[23] न जायेगा॥
शम दम आयेंगे ब्रह्म विद्या से।
फ़िकर जायेंगे ब्रह्म विद्या से॥
शम हो पैहले, ज्ञान पीछे हो।
सेर[24] होजें, तुआंम पीछे हो॥
हाये! पंडित ग़ज़ब यह ढ़ाते हो।
उल्टी गंगा पड़े बहाते हो॥
यह इसी पाप का नतीजा है।
डूबे दुःखों में आज जाते हो॥
वेद दानों! यह मौत मत रखना।
[26]धीः को, बुद्धि को घरमें मत रखना॥
लड़की घर में न जेब्र[*] देती है।

२२ पगलापन २३ बिना, बग़ैर २४ पेट भर कर रज जाना, २५ भोजन, खाना २६ बेटी–लड़की रूपी बुद्धि * अच्छी लगना

धन पराया फरेब देती है ॥
ब्रह्म विद्या का दान अब कर दो ।
वरना .इज्जत से हाथ धो बैठो ॥
वक़्त देखो, समय को संभालो ।
ज़ात क़ायम हो, काँया पलटा लो ॥
नंगो नामूस अब इसी में है ।
बचना ज़िल्लत से बस इसी में है ॥
डूबा तारा तुम्हारा पूरब को ।
ब्रह्म विद्या चली है यूरप को ॥
हिंद मजनू बना है दीवानाः ।
तलमलाता है मिसले परवानाः ॥
मुयदहे वसल अब सुना देना ।
खुशो खुर्रम अदा से गा देना ॥

२७ शरीर २८ पागल २९ पतंग की तरह ३० मुलाकात (आत्म साक्षात्कार) की खुशखबरी ३१ प्रसन्न मुखड़े

वेद का फर्ज़ यह चुका देना।
फर्ज़ अपना यह कर अदा देना॥

---

(४) गुनाह.

पाप क्या है? गुनाह कितने है?।
दा[1]खले जेहल सारे फितने हैं॥
आत्मा जिस्म ही को ठेहराना।
बूटा पापों का यह है लगवाना॥
आत्मा पा[2]क, हैस्[3]त, बरतर है।
.इल्म वाँ[4]हद, सरू[5]रो अकॅबर है॥
जिस्म को शाने आत्मा देना।
रात को आफताव कह देना॥
किज़्[6]बो बुँत[7]लां यही है पाप की जड़।

१ अज्ञान में दाखल २ शुद्धि ३ सत्ता मात्र, वास्तव वस्तु ४ अकेला ५ धनानन्द ६ झूठ ७ बेअसल

एक ही जेहल तीन ताप की जड़ ॥
क्या तकब्बर है ? किबरयाई-ए-ज़ात (को)।
बेच देना द्रोग़ जिस्म के हात ॥
क्रोध क्या है ? जलोले वाहदे .जात (को)।
बेच देना द्रोग़ जिस्म के हात ॥
क्या है शहवत ? सरूरे पाके .जात।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
क्या .अदावत है ? पाक वहदते ज़ात।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
*हिर्स क्या ? सब पै कब्ज़ा-ए-कुल्ली-ए-ज़ात।
बेच देना हक़ीर जिस्म के हात ॥
मोह क्या है ? .क्यामे यकसां ज़ात।

८ अहंकार ९ स्वरूप की बड़ाई १० झूठा ११ एकता (स्वरूप) की रौनक़ १२ हाथ, कर १३ विषयानन्द १४ शुद्ध स्वरूप का आनन्द १५ दुशमनी १६ नाचीज़ १७ सर्व व्यापक की मल्कीयत (सर्वव्यापकता) १८ एक रस स्वरूप की स्थिरता * लालच

बेच देना हक़ीर जिस्म के दाम ॥

बस गुनाह क्या है? आत्मा का हक़ ।

जैहल को छीन देना हक़-नाहक़ ॥

हस्ते मुतल्क़ का जैहल में संसर्ग ।

तोख़्म है पाप का, गुनाह का बर्ग ॥

१९ सतस्वरूप २० दाखिल २१ भार, असबाब, ज़खीरा २२ पत्ता. फल

---

(८) कलियुग.

अपने दिल मे विचार कर देखो ।

तुम ने पैदा कीया है कलियुग को ॥

"मैं नहीं हूं खुदा" यह कलियुग है ।

"जिस्म ही हूं" यक़ीन यह कलियुग है ॥

"जिस्म है आत्मा" यह कलियुग है ।

चार वाकों का मत, यह कलियुग है ॥

खाऊं पीवूं मज़े उड़ाउंगा ।

हां विरोचन[1] का मत, यह कलियुग है ॥
बंदाः-ए-जिस्म[2] ही बने रहना ।
सब गुनाहों का घर, यह कलियुग है ॥
जिस्म से कर नशिस्त[3] अपनी दूर ।
*हूजीये आत्मा में खुद मसरूर[4] ॥
जिस्म में गर निवास रक्खोगे ।
ज्ञान से गर हिरास[5] रक्खोगे ॥
पाप हरगज़ न छोड़ेंगे हरगज़ ।
ताप हरगज़ न छोड़ेंगे हरगज़ ॥
दूर कलियुग अभी से कीजेगा ।
दान दीजेगा, दान दीजेगा ॥
ठीक कर जुग है, यह नहीं कलियुग ।
दान कर दूर, कीजीये कलियुग ॥

१ विरोचन नाम है, जो केवल शरीर को आत्मा कर के मानता और पूजता था २ शरीर के गुलाम बने रहना ३ बैठक स्थिति ४ आनन्द ५ भय * हो जाइये, या हो बैठीये

हिंद पर गैहन[6] लग गया काला ।
दान देने से खोल हो वाला ॥

६ ग्रहण

---

(६) दान

दान होता है तीन क़िस्मों का ।
अन्न का, .इल्म का, व .इर्फ़ान[1] का ॥
अन्न का दान एक दिन के लीये ।
जिस्म बेरूं[2] को तक़्वीयत[3] देवे ॥
.इल्म का दान, .उमर भर के लीये ।
जिस्म *दोयम को कर धनी[4] देवे ॥
दान .इर्फ़ां का तो अबद[5] दायम ।
कर सरूरे[6] अज़ल में दे क़ायम ॥

१ आत्म ज्ञान (ब्रह्मविद्या) २ बाह्य (स्थूल शरीर) ३ पुष्टि ४ धनवान ५ नित्य, हमेशा के लीये ६ अनादि निजानन्द *यहां मुराद सूक्ष्म शरीर से है ॥

सब से बढ़ कर तो तीसरा है दान।
दान इर्फ़ां का, ज्ञान ही का दान॥
पंडितो! ज्ञान दान दीजेगा।
हिंद में आम दान दीजेगा॥
गिर्यां कलियुग का, गहन है बाकी।
कसर है ज्ञानदान देने की॥
लो बला टल गयी है, वाह वाह वा।
हिंद रौशन हुआ है, आहाहा हा॥
जाओ कलियुग, यहां से जाओ तुम।
भागो भारत से, फिर न आओ तुम॥
हुक्म नातक़ है राम का तुम पर।
बंधिये बिस्तर को, अब उठाओ तुम॥
हिंद ही रह गया है, क्या तुम को।
आग में, जलमें, सिर छुपाओ तुम॥

७ रोना ८ ग्रहण ९ सख्त हुक्म—न टूटने वाला

(७) नै

खाली बिलकुल है बांस की यह नै[1] ।
चन्द सूराखदार बेशक है ॥
बोसा[2] देता है उस को जब नाई[3] ।
निकस उस नै से सात सुर आई ॥
रागनी राग सब हुये जाहर ।
मुखतलिफ भाग सब हुये बाहर ॥
एक ही दम ने यह सितम ढाया ।
कलेजा अब बैलीयों उछल आया[4] ॥
सब सुरों में जो मौज मारे है ।
दम वह तेरा ही कृष्ण प्यारे है ॥
दम तो फूंके था एक मुरलीधर ।
मुखतलिफ जमजमे[5] बने क्योंकर? ॥

१ बांसरी २ चुमी, चूमना ३ बांसरी बजानेवाला ४ कलेजा आनन्द से इसकदर अजहद लैहराने लगा कि खुशी अन्दर न समा सकी ५ राग, गीत, सुरें

सामियः[6] बासिराः[7], ख्यालो अक़्ल।
सब में वासिल[8] हुवा, करे है नक़ल॥
मर्द, औरत, गदा[9] में, शाहों में।
कैहक़हों चैहचहों में आहों में॥
कु़तब[10] तारे में, मिहर[11] में, माह[12] में।
झोंपड़े में, महलसरा, राह में॥
एक ही दम का यह पसारा है।
सब में वासल है, सब से न्यारा है॥
दारे दुन्या[13] की इक तेही[14] नै में।
प्राण तेरे ने राग फूंके हैं॥
तू ही नाई है, कृष्ण प्यारा है।
सारी दुन्या तेरा पसारा है॥

६ सुनने की शक्ति ७ देखने की शक्ति ८ मिला हुवा ९ साधू, फ़कीर १० ध्रुव ११ सूरज १२ चांद १२ दुन्या का घर (धाम) १४ खाली (खोखली) बांसरी

---

(८) शीश मन्दर.

शीश मंदर में इक दफा बुल डाग ।
आ फंसा तो हुवा वगोला आग ॥
जौके दर जौक पल्टनें सगे थे ।
ठट के ठट लग रहे थे कुत्तों के ॥
सख्त झुंजलाया यह, वह झुंजलाये ।
चार जानब से तैश में आये ॥
बिगड़ा मुंह उस का, वह भी सब बिगड़े ।
जब यह उछला, वह सब के सब कूदे ॥
जब यह भौंका, सदाये गुम्बज़ से ।
क्या ही औसां खता हुये इस के ॥
"मैं मरा, मैं मरा" समझ कर बाये ! ।
मर गया डाग, सिर को धुन कर बाये ! ॥

१ एक कुत्ते का नाम है २ गरोह के गरोह ३ कुत्ते ४ झुंड ५ गुस्सा ६ गुम्बज़ की आवाज़ ७ आश्चर्यमय, घबराहट युक्त चित्त

शीश मंदर में आ के दुन्या के ।
जाहिले गैर दान मरा भौंके ॥
वेहम में क्यों भरमता जाता है ।
अपने आपे में क्यों न आता है ॥

(२) दार्ष्टान्त

गौड मालक मकान का आया ।
मर्दे दाना ने जल्वा फरमाया ॥
रूये ज़ेबा को हर तरफ पाया ।
फुर्ते शादी में मीना भर आया ॥
फर्शे अतलस नफ़ीस झालरदार ।
अतरो अंबर लतीफ़ खुशबूदार ॥
तख़्ते *ज़र्रीं पे रेशमी तकिये हैं ।
गद्दे मखमल के ज़ेब देते हैं ॥

८ द्वैत देखने वाला बेवकूफ ९ ईश्वर १० सजा हुवा मुंह ११ आनन्द की अधिकता *सुनहरी तख़्त.

बैठा उसमें से जीनते खाना ।
गुद गुदी दिल में, भ्रमता शाना ॥
जब नज़र चार सू उठा देखा ।
कुछ न अपने से मासवा देखा ॥
अगरचि बेहद था पर हज़ारों जाँ ।
जल्वा अफगन रूये सफा देखा ॥
गाह मूछों को ताओ दे दे के ।
मूरते वीर रस में आ देखा ॥
करके शृंगार कंघी पट्टी का ।
पान होंटों तले दबा देखा ॥
तेग़ मिसरी की देखने के लीये ।
प्यारी प्यारी भवें चढ़ा देखा ॥
खंदा-ए-गुल की दीद की खातर ।

१२ घर को रौनक देने वाला १३ कंधे १४ तरफ १५ अद्वैत १६ स्थान १७ प्रकाशमान १८ कभी १९ तल्वार २० खिला हुवा पुष्प (फूल) २१ निगाह, नज़र, दृष्टि

क्या तेः दिल[22] से खिलखिला देखा ॥
अब्रे नैसां[23] का लुत्फ लेने को ।
तार आंसू का भी लगा देखा ॥
गैर देखे हैं जैसे इस तन को ।
इस तरह इस से हो जुदा देखा ॥
अक्स[24] इक छोड़ असल को आये ।
सब वजूदों[25] में फिर समा देखा ॥
गोलीयां पीली काली सुर्ख और सब्ज़ ।
मुंह से अपने नकाले बाज़ीगर ॥
आप ही देखता है अपने रंग ।
आप ही हो रहा है मुतहय्यैर[26] ॥
बैठ हर तरह शीश मंदर में ।
ठाठी पट्ठे ने बन बना देखा ॥

२२ दिल भर कर २३ वर्षा ऋतु का बादल २४ प्रतिबिम्ब २५. वस्तुओं (शरीरों) में २६ आश्चर्य, हैरान

(सुषुप्ति) मस्त कारण शरीर बन बैठा।
चार कूटों में लेटता देखा॥ (व्यष्टि)
(स्वप्न में) खुद जो जिस्मे ख्याल को धारा।
जुमलेँ[27] आलम ख्याल का देखा॥ (समष्टि)
(जाग्रत में) जागी सूरत क़बूल की जब खुद।
सब को फिर जागता हुवा देखा॥
तुझ से बढ़ कर हूं, तेरा अपना आप।
मुझ को अपने से क्यों जुदा देखा?॥
एक ही एक ज़ाते[28] बेहद रॉम[29]।
जुमला सूरत में जा बजा देखा॥
गद्दी तकिये से मैं नहीं हिलता।
हिलता किस ने सुना है या देखा॥
क्यों खुशामद की बात करते हो।
शीशे मसनद[30] मकान ही कब था॥

२७ कुल समस्त २८ अद्वैत तत्त्व २९ कवि का नाम और ईश्वर से भी मुराद है ३० गद्दी, तखत

यह तो सब इक ख्याली लीला थी ।

मौज में अपनी आप ज़ाहर था ॥

मौज भी आप, लीला वीलें आप ।

लाल नुत्क़ो जुबां, यां पर था ॥

नुत्क़ में और शब्द में मौजूद ।

एक वाहद सफोट रौशन था ॥

३१ खेल इत्यादि ३२ अकल, समझ, हैरान था

---

(१०) कोहे नूर का खोना

ज़ेरे नादर हुआ महम्मद शाह ।

देहली उजड़ी ज़लील अबतरे आह ॥

गरचि नादर ने खूब ही ढूंडा ।

न मिला कोहे नूर का हीरा ॥

कह दीया इक हरीस लौंडी ने ।

१ हीरे का नाम २ नादर बादशाह के नीचे तले ३ बहुत बुरा ४ लालची

है छुपाया कहां मुहम्मद ने ॥

"उस को पगड़ी में सी के रखता था।

जुदा उस को कभी न करता था" ॥

फिर तो बेहद तपाक से आकर।

बोला नर्मी से, प्यार से नादर ॥

"ऐ शाहे मिहर्बान महम्मद शाह!।

यार भाई है तेरा नादर शाह ॥

पगड़ियां आज तो बदल लेंगे।

दिल महब्बत से खूब भर लेंगे ॥

रसमे उल्फत अदा करो हम से।

यह महब्बत वफा करो हमसे" ॥

छूट गयीं गो हवाइयां मुंह पर।

जाहिर खंदाः से बोला "हां हां" कर ॥

"शौक़ से पगड़ी बदलियेगा शाह"!।

मारा बेबस रंगीला देहली शाह ॥

५. प्रेम की रसम ऊपर से हंस कर

थी मुहम्मद को .जाहरी .इज़्ज़त ।
यह तवद्दुल[6] था असल में ज़िल्लत[7] ॥
क़ीमते ममलिकत[8] से बढ़ कर था ।
हीरा पगड़ी में उस को खो बैठा ॥
ऐ .अज़ीज़ों! यह .इज़्ज़तो दौलत ।
नफ़स नादर है, बर सरे उलफ़त ॥
दामे तज़वीर[9] में न आजाना ।
जाँ! न भँरें में फंस फंसाजाना ॥
खिलअते फ़ाखिरह[10] से हो खुर्सन्द[11] ।
खो के हीरा बने हो दौलतमंद ॥
चैन पड़ने को है नहीं हरगिज़ ।
अमन हीरे बिना नहीं हरगिज़ ॥

६ बदलना ७ ख़ुवारी ८ कुल राज्य की क़ीमत ९ दग़ा फ़रेब का जाल १० फ़ख़र करने वाला लबास, पुशाक का .इनाम ११ ख़ुश

जाती[12] जौहर से .जाती .इज्ज़त है ।
बाक़ी मा-[13]ओ-मनी की .इ[14]ल्लत है ॥
जब तू फखरे[15] खताब लेता है ।
आत्मा को .अतांब देता है ॥
तू क़ीमे[16] जहां है, दाता है ।
छोटा अपने को क्यों मनाता है ॥
सब को रौनक़ है तेरे जल्वे[17] से ।
तुझ को .इज्ज़त भला मिले किस से ॥
सनद सर्टीफिकिट डिगरी की ।
आर्जू में है क़ैदे ग़म तन की ॥
तू तो मा[18]बूद है .जमाने का ।
क़ैद मत हो किसी बहाने का ॥

१२ असली रत्न १३ अहंकार और धन इत्यादि १४ सबब, कारण १५ खफगी, गुस्सा, क्रोध १६ जहां का सखी (बखशने वाला) १७ प्रकाश १८ पूजने योग्य, पूजनीय

(११) खताब नपोलीयन को

वाह रे नपोलीयन! नडर शह मर्द।
टिड्डी दल फौज तेरे आगे गर्द॥
"हाल्ट!" कह कर स्पाहे दुशमन को।
लर्जां कर दे अकेला लशकर को॥
जां बाज़ी में शेर मर्दी में।
खुश खुशां दशते ग़मनवर्दी में॥
*ग़ेब मे और ग़ज़ब की सौलत से।
तू बराबर था हिन्द औरत के॥
राजपूतों की औरतों का दिल।
न हिले, गरचि कोह जाये हिल॥
उन की जानब से शेर को चैलंज।
लेक शोहरत के नाम से है रंज॥

१ नपोलीयन बादशाह का नाम है उस के नाम यह खतबा २ खड़े हो जाओ ३ कम्पा देना ४ ग़म दूर करने के जंगलमें ५ दबदबा, डर ६ पर्बत ७ बुलावा मुकाबल करने वास्ते *गुस्सा

पुशते कुश्तों के कर दीये हर सू ।
खूं के जूएं भर दीये हर सू ॥
मुल्क पर मुल्क तू ने मारलीया ।
पर कहो, उस से क्या संवार लीया ? ॥
देनी चाहता था राज को वुसअत ।
पर मिली हिर्सो आज़ को वुसअत ॥
दिल तो वैसा ही रह गया पियासा ।
जैसा जंगो जदल से पैहले था ॥

८ मरे हुवों के ढेर ९ हरतरफ १० नदीयें, नैहरें ११ विस्तार विशालता १२ लालच, तमा १३ लड़ाई

---

(१२) सीज़र

ऐ शहनशाहे जूल्यस सीज़र! ।
सारी दुन्या का तू बना अफसर ॥
इतना क़िस्से को तूल क्यों खैंचा ।

१ रूम के बादशाह का नाम

दिल ज़मीं में फ़ज़ूल क्यों खैंचा ॥

मैल्न दिल में रहा तअ़ज्जुब खेज़ ।

खदशा: पैहलू में, मौजे दर्द अंगेज़ ॥

आ ! तेरी मंज़लत को बढ़ायें ।

हिन्दू-ए-कैवान् से भी परे जायें ॥

क्यों न इतना भी तुम को सूझ पड़ा ।

जिस में शै आये वह है शै से बड़ा ॥

जुज़व कुल से हमेशा छोटा है ।

छोटा कमरे से बक्स-व-लोटा है ॥

जबकि तुझ में जहान् आता है ।

आंख में बेहरो बर समाता है ॥

कोहो दरया-ओ-शैहरो स्वहरा बाग़ ।

बादशाहो गदा-ओ-बुलबुलो ज़ाग़ ॥

२ अश्चर्य बढ़ाने वाला ३ डर ४ दर्द देने वाली लहर ५ मरतबा ६ शनी तारे के सिरे से भी दूर ७ वस्तु ८ टुकड़ा (हिस्सा) ९ पृथ्वि और समुद्र १० जंगल ११ कौवा

इल्म में और शऊर[12] में तेरे।
ज़र्रे से चमकते हैं बहुतेरे ॥
खुद को महदूद[13] क्यों बनाते हो।
मंज़ल अपनी पड़े घटाते हो? ॥
तुझ में छोटे बड़े समाये हैं।
तू बड़ा है, यह जिस में आये हैं ॥
मुल्के सर्सब्ज़ और ज़मीन् शादाब[14]।
हैं शुआओं[15] में तेरी सुराब[16] ओ-आब ॥
शमस मर्कज़[17] नज़ामें शमसी[18] का।
है नहीं, तू है आश्रा सब का ॥
नूर तेरे ही से ज़ियां[19] लेकर।
मिहर[20] आता है, रोज़ चढ़ बढ़ कर ॥
अपनी किर्णों के आब में खुद ही।

१२ समझ, ज्ञान १३ परिछिन्न १४ खुश, आनन्ददायक पृथ्वि १५ किरण १६ मृग तृष्णा का जल १७ केन्द्र १८ आकाश के तारे आदि का इन्तज़ाम १९ प्रकाश २० सूरज

इत्र मत मर, शुराब में खुद ही ॥
जान अपने को गर लीया होता।
क़ब्ज़ा आलम पै झट कीया होता ॥
सल्तनत में [21] मेंती चरिन्द व परिन्द ।
राजे माहराजे होते ज़ाहिदे[22]-व-रिंद ॥
ज़ात में हल्ले[23] दिल क्या होता।
हल्ल .उक़्दाः को यूं कीया होता ॥
हाथ में खड्ग हो कि खंडा हो।
क़लम हो या बलन्द झंडा हो ॥
जुदा अपने को इन मे जानते हैं।
इन के टूटे रंज न मानते हैं ॥
आप को शूर वीर इस तन से।
जुदा माने हैं जैसे आहने से ॥
गर बला मे यह जिस्म छूट गया।

२१ सेवक, ताबियादार २२ परहेज़गार (कर्म कांडी) २३ मैंदक्व एकाग्र, लीन गुह्य भेद २४ लोहा

क्या हुआ गर क़लम यह टूट गया ॥
तू है आज़ाद, है सदा आज़ाद।
रंजो ग़म कैसा? अमल को कर याद ॥
ऐ ज़मां! क्या यह तुम में ताक़त है।
ऐ मकां! तुझ ही में लयाक़त है?॥
कर सको क़ैद मुझ को. मुझ को क़ैद, ।
पल्क से तुम हो कलअदम नापैद ॥
फ़िकर के पाप के उड़ें धूयें।
गर कभी हम से आन कर उलझें ॥
पुर्ज़े पुर्ज़े अलग हुये डर के।
धज्जीयां जैहल की उड़ीं डर से ॥

२५ काल २६ देश २७ नाश २८ झूठा २९ अज्ञान

(१३) शाहे ज़मान को वरदान.

कैसरे हिन्द! बादशाह दावरं।

१ ज़माने के बादशाहों को वर्दान २ मुनसफ हाकम

जागता है सदा शाहे खावँर[3] ॥
राज पर तेरे मग़रबो मशरक़ ।
चमकता है सदा शाहे मशरक़[4] ॥
शाहे मशरक़ की ब्रह्म विद्या है ।
रानी विद्याओं की यह विद्या है ॥
जाह[5] ज़ाती रहे क़रीब तुम्हें ।
शाह इल्मों का हो नसीब तुम्हें ॥
नूर[6] का[8] कोह दमाग़ में दमके ।
हिंद का नूर ताज पर चमके ॥
तेरे फ़िक्रो ख़ियाल के पीछे ।
शीरीं[7] चशमा अ़जीब बैहता है ॥
यह ही चशमा था व्यास के अन्दर ।
ईसा अहमद इसी में रहता है ॥
इस ही चशमे सें वेद निकले हैं ।

३ पूरब का बादशाह अर्थात सूरज ४ सूरज ५ स्वस्वरूपकी विभूति ६ प्रकाश ७ मीठा ८ पर्वत यहां कोहनूर है (ज्ञान के हीरे से मुराद है)

इस ही चशमे में कृष्ण कहता है ॥
चलिये आबे शाफ़ि वां पीजे।
दुःख काहे को यार सेहता है ! ॥
पिछले ऋषीयों ने इसी चशमे में।
घड़े भर भर के आब के रक्खे ॥
दुन्या पलटे, ज़माना बदलेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
मिहर डूबेगा, क़ुतब टूटेगा।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
रस्मो मिल्लत तो होंगे मलिया मेट।
पर यह चशमा सदा हरा होगा ॥
ऐसे चशमे से भागते फिरना।
बासी पानी को ताकते फिरना ॥
तिश्ना रखेगा बेहरे खातरे आब।

८ अमृत ९ पानी, यहां अमृत से मुराद है १० ध्रुव तारा
११ रस्म रिवाज १२ प्यासा

जा बजा आग तापते फिरना ॥

राम को मानना नहीं काफ़ी ।

जानना उस का है फ़क़त शाफ़ी[13] ॥

(बर्कले कैण्ट मिल हैमिल्टन[14]) ।

जुस्तजू[15] में तिरी हैं सरगर्दान[16] ॥

बाईबल, वेद, शास्त्र, क़ुरान ।

भाट तेरे हैं, ऐ शाहे रहमान[17] ! ॥

अपनी अपनी लियाक़तें ले कर ।

तर ज़बान[18] गा रहे हैं तेरी शान ॥

मद्दाह[19] क्यों शायरों को दो इलज़ाम ।

बल्कि दरबारे खासो जलसा-ए-आम ॥

१३ आराम देने वाला, शफ़ा देने वाला १४ यह तमाम यूरप के फ़लासफ़रों के नाम हैं १५ तलाश १६ भटकते फिरते १७ कृपालु महाराजा १८ मीठी बोली से १९ तारीफ़ करने वाले

(१४) आनन्द अन्दर है.

संग ने हड्डी कहीं से इक पाई।
शेरे नर देख फिकर यह आई॥
कि कहीं मुझ से शेर छीन न ले.
हड्डी इक दम से शेर छीन न ले॥
लेके मुंह में उसे छुपा कर वह।
भागा खांई को दुम दबा कर वह॥
अज़ीम चुभती थी मुंह में जब रग को।
खूं लगता लज़ीज़ था सग को॥
मज़ा अपने लहू का आता था।
पर वह समझा मज़ा है हड्डी का॥
शेरे नर, बादशाहे तन्हा रौ।
हड्डी मुर्दे हों हर तरफ सौ सौ॥
वह तो न आंख भरके तकता है।

१ कुत्ता २ खंदक ३ हड्डी ४ अकेला चलने वाला राजा

मगर नादान का दिल धड़कता है ॥
स्वर्ग की नेमतें हों दुन्या की ।
हैं तो यह हड्डियां ही मुर्दों की ॥
इन में लज़्ज़त जो तुम को आती है ।
दर असल एक आत्मा की है ॥
ऐ शहनशाहे मुल्क! ऐ इन्दर! ।
छीनता वह नहीं यह ज़रो गौहर[1] ॥
राज दुन्या का और स्वर्गो बहिश्त ।
बागो गुल्ज़ारो संगे मर मर ख़िश्त[2] ॥
नेमतें यह तुम्हें मुबारक हों ।
बारे राम[3], यह तुम्हें मुबारक हों ॥
देखना यह तुम्हारे मक़बूज़ात ।
कब्ज़ा करते हैं क्या तुम्हारी ज़ात ॥
जाने मन! नूरे ज़ात ही का नाथ[4] ।

१ सोना (धन) और मोती २ संगमरमर की ईंटें ३ राम का बोझ ४ मालिक

फ़ौज रखता नहीं है सूरज साथ ॥

जो ग़नी ज़ात में हैं हीरो [10]वीर।

जल्वागर दर वजूदे नर ना पीर ॥

सब देहानों से वह ही खाता है।

स्वाद खाने भी वन के आता है ॥

"यह हूं मैं", "यह हो तुम", यह असनीयत।

मोजेज़ा है तिरा, न असलीयत ॥

सुवरो अशकालें सब करामत है।

मेरी .कुद्रत की यह .अलामत है ॥

९ अमीर १० बहादुर योधा ११ मूंहों १२ द्वैत १३ करामात १४ शकलें, सूरतें

---

(१८) सकन्दर को अवधूत के दर्शन.

क्या सकन्दर ने भी कमाल कीया।

.ग़ुलग़ुला शोरो[1] शर का डाल दीया ॥

१ शोर इत्यादि

बर लबे आब सिन्ध जब आया।
डट गया फौज लेके। झिलाया॥
उन दिनों एक सालको मालिक।
से मुलाक़ी हूवा, रहा हक दक॥
क्या .अजब था फकीर आलमगीर।
क़ल्ब साफी मिसालि गङ्गा नीर॥
उस की सूरत जमाले शुआँनी।
गुफ़्तगू में जलालि .उयाँनी॥
उस स्वामी ने कुछ न गिरदाना।
ज़ोरो ज़ारी-ओ-ज़र से फुसलाना॥
शीशा आयीनाः गर को दखलाया।
दंग जूं आयीनाः वह हो आया॥

२ दरया सिन्ध के किनारे ३ ईश्वर भक्त, आज़ादफ़क़ीर, मस्त पुरुष ४ मिला ५ शुद्ध अन्तःकरण ६ मानन्द गंगा जल के ७ अत्यन्त सुन्दरता ८ जलाल ज़ाहर प्रकाशमान ९ समझा १० ज़बरदस्ती और रोना और धन का लालच ११ सकन्दर का खताब है

रह के शशदर वह बादशाहे जहां।
बोला साधू से सूरते हैरान॥
हिंद में *क़दर न परखते हैं।
हीरे को लीथड़ों में रखते हैं॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान को।
क़दम रंजा करो मेरे हां को॥

१२ देश का नाम * तशरीफ ले चलिये

(१६) अवधूत का जवाब.

क्या ही मीठी .जुबान से बोला।
१रास्ती पर कलाम को तोला॥
कोई मुझ से नहीं है खाला *जा:।
पूर पूरण, ज़रा नहीं हिलता॥
जाऊं आऊं कहां किधर को मैं?।
हर मकां मुझ में, हर मकां में मैं॥

१ सचाई २ देश * जगह, स्थान

यह जो लाहूत से निदा आई।
यवन बेचारे को नहीं भाई॥
फिर लगा सिर झुका के यूं कहने।
इस के समझा नहीं है मैं मैंने॥
“मुश्को काफ़ूर, .अतरो .अम्बर बू।
अस्पो गुल्ज़ार, नाज़नीं खुशरू॥
सीमो ज़र, खिलअतो मसाँ-ओ-खोद।
मेवे हर नौ के, आबशारो रवंद॥
यह मैं सब दूंगा आप को दौलत।
हर तरह होगी आप की खिदमत॥
चलियेगा साथ मेरे यूनान को।
चल मुबारक करो मेरे हां को॥”

३ ब्रह्म धाम, सत स्वरूप ४ आवाज़ ५ सिकन्दर से मुराद है ६ घोड़े और बाग़ ७ सुन्दर स्त्री, प्रिया ८ चांदी सोना ९ उत्तम लबास १० राग रंग ११ किस्म १२ बहती हुई नदी।

मस्ते मौला से तब यह नूर झड़ा।
आस्मान् से सतारह टूट पड़ा॥
" झूठ झूठों ही को मुबारक हो।
जेहल नीचे दबे जो तारक हो॥
मैं तो गुलशन हूं, आप खुद गुलरेज़।
खुद ही काफूर, खुद ही अम्बर रेज़॥
सोने चांदी की आबो ताब हूं मैं।
गुल की बू मस्ती-ए-शराब हूं मैं॥
राग की मीठी मीठी सुर मैं हूं।
दमक हीरे की, आबे दुर मैं हूं॥
खुश मज़ा सब तुआम हैं मुझ मे।
अस्प की खुश खिराम हैं मुझ से॥

१३ मस्त फक़ीर फिर यूं बोला १४ अज्ञान, अविद्या १५ अन्धकार अथवा अन्धा १६ फुल झड़ी, पुष्पों के गिराने वाला १७ अंबर झाड़ने वाला अर्थात खुशबू वाला १८ मोती की चमक १९ खुराक, भोजन २० उत्तम चाल

रक़्स[21] है आबशार[22] का मेरा ।
नाज़ो ईश्वा[23] है यार का मेरा ॥
ज़र्क़ बर्क़ सुनैहरी ताज तेरा ।
मेरा मोहताज है, मोहताज मेरा ॥
चान्दनी मुस्तार[24] है मुझ से ।
सोना सूरज उधार ले मुझ से ॥
कोई थी शै[25] जो तेरे मन भाई ।
मैं ने इज़्ज़त अता[26] है फ़रमाई ॥
दे दीया जब फिर उस का लेना क्या ।
शाहे शाहां को यह नहीं ज़ेबाँ[27] ॥
करके बख़्शश मैं बाज़[28] क्यों लूंगा ।
फैंक कर थूक चाट क्यों लूंगा ॥
प्रकृति को तो *ईद मुझ से है ।

२१ नृत्य २२ पानी का झरना २३ नाज़ नखरे २४ मांगी हुई २५ वस्तु २६ बख़्शी २७ फबना, लायक़ २८ फिर वापस *आनन्द मंगल

मांगू अब मैं, वईदे[29] मुझ से है ॥
खुद खुदा हूं, सुरूरे[30] पाक हूं मैं ।
खुद खुदा हूं, गुरूरे[31] पाक हूं मैं ॥"
ऐसा वैसा जवाब यह सुन कर ।
भड़क उठा ग़ज़ब से असकन्दर ॥
चेहरा .गुस्से से तम तमा आया ।
खूने रग जोश मारता आया ॥
खैंच तलवार तान ली झट पट ।
"जान्ता है मुझे तू ऐ नट खट!" ॥
(शाहे[32] जी जाहे मुल्के दारा जम ।)
मैं हूं शाहासकन्दरे आज़म[33] ॥
मुझ से गुस्ताखी गुफतगू करना ।
भूल बैठा है क्यों अभि मरना ॥

२९ दूर (नावाजब) ३० शुद्ध आनन्द ३१ शुद्ध अहंकार ३२ जमशेद और दारा बादशाह के मुल्कोंका बड़े भारी मरतबा वाला बादशाह ३३ सबसे बड़ा

काट डालूंगा सिर तेरा तन से।
ज़रब समशेर से अभी दम से
देख कर हाल यह सकन्दर का।
साहदू आज़ाद खिलखला के हंसा॥
"किज़्ब[34] ऐसा तू ऐ शहनशाह!।
उमर भर में कभी न बोला था॥
मुझ को काटे! कहां है वह तलवार?।
दाग़ दे मुझ को! है कहां वह नार[35]॥
हां गलायेगा मुझे! कहां पानी?
बाद[36] मुखा ही ले। मरे नानी॥
मौत को मौत आ न जायेगी।
क़सद[37] मेरा जो करके आयेगी॥
बैठ बालू में बच्चे गंगा तीर।
घर बनाते हैं शाद या दिलगीर॥

३४ झूठ ३५ अग्नि ३६ वायू ३७ इरादा

फर्ज़ करते हैं रेत में खुद घर।
यह रहा गुम्बज़-व-इधर है दर[३८] ॥
खुद तसव्वर[३९] को फिर मटाते हैं।
*खानाः आपना वह आप ढाते हैं ॥
वैहम का घर बना था वैहम मिटा।
बालू था बाँद में जो पैहिले था ॥
रेग सुथरा था, नै खराब हुवा।
फर्ज़ पैदा हुवा था खुद बिगड़ा ॥
रास्त तू उस ज़बान से सुनता है।
पर पड़ा आप जाल बुनता है ॥
तू जो समझा यह जिस्म मेरा है।
फर्ज़ तेरा है, फर्ज़ तेरा है ॥
सिर यह तन से अगर उड़ादेगा।
फ़र्ज़ अपने ही को गिरादेगा ॥

३८ दरवाज़ा ३९ कल्पित ४० पीछे * घर

रेत का कुछ न तो बुरा होगा।
ख़ानः[41] तेरा ख़राब ही होगा॥
मेरी वुसअत[42] को कौन पाता है।
मुझ में अर्ज़ों समा[43] समाता है॥
ताज जूते के दरम्यान वाक़या।
मैं नहीं हूं, न तू है जां! वाक़या॥
इतना थोड़ा नहीं हद्द अर्ज़ः।
पगड़ी जोड़ा नहीं हद्दे[44] अर्ज़ः॥
अपनी हत्तक यह क्यों करी तुमने।
बात मानी मेरी बुरी तू ने॥
क्यों तुनक[45] कर दीया है आलम को।
एक जौहर बनाया कुलज़ुम[46] को॥
खुद तो मग़्लूब[47] तुम ग़ज़ब के हो।

४१ घर ४२ विशालता (फैलाओ) सीमा ४३ पृथ्वि आकाश ४४ सीमा ४५ छोटा, नाचीज़ ४६ समुद्र ४७ वशमें आये हुये, क़ाबू हुवे २

शाहे जज़्बात से भी अच्छे हो ॥

.गुस्सा मेरा .गुलाम तुम उस के ।

बन्दाः-ऐ-बन्दगां रहो बचके ॥ ”

गिर पड़ी शाह के हाथ से शमशेर ।

निगाः आरफ़ से हो गया वह ज़ेर ॥

क्या .अजब ! यह तो ज़ेर आँख़ताः तेग़ ।

गर्जता था मसाले बारां मेघ ॥

शाह के ग़ैज़ो ग़ज़ब को जूं मादर ।

नाज़ तिफ़्लक का जानता था गर ॥

और वह शाह सकन्दरे रूमी ।

बात छोटी से होगया ज़ख़मी ॥

पास उस वक़्त अपनी .इज़्ज़त का ।

हर दो जानब को एक जैसा था ॥

४८ काम क्रोधादि पर हुक्म करने वाला बादशाह ४९ नौकरों के नौकर ५० नीचे, शर्मिन्दाः ५१ खैंची हुई तल्वार ५२ .गुस्से, क्रोधको ५३ बच्चे का खेल, नख़रा

लेक[54] शाह को थी जिस्म में आनर[55]।
शाहे शाँह[56] का था आत्मा में घर॥
क़िल्ा मज़बूत उस का ऐसा था।
ऊंचे सूरज से भी परे ही था॥
कर सके कुच्छ न तीर की बुछार।
खाली जाये बन्दूक़ की भर मार॥
इस जगह गैर[57] आ नहीं सकता।
यहां से कोई भी जा नहीं सकता॥
इस बलन्दी से सर्फराज़ी से।
क़िल्ा-ए-मज़बूत शेरे ग़ाज़ी से॥
यह ज़मीन और इस के सब शाहान।
तारा: सां, ज़र्रह[58] सां, कि नुक़ता: सां॥
नुक़ता मौहूमे[59] बन, हूये नाबूद।
एक वहदत[60] हूं, हस्तो बाशदो[61] बूद॥

५४ परन्तु, लेकिन ५५ इज्ज़त ५६ यहां मुराद है फ़क़ीर से ५७ अन्य, दूसरा ५८ प्रमाणु ५९ कल्पित ६० एक ६१ है, होगा, था, वर्तमान, भविष्यत्, भूत

रुद्द गये जूं सपाहे [६२]तारीकी ।
ताब किस को है एक झांकी की ? ॥
रूये [६३]आलम पै जम गया सिक्का ।
शाहे शाहां हूं, शाहे शाहां शाह ॥
एहले [६४]हैयत ने भी पढ़ा होगा ।
नुक़ता क्या खूब यह रियाज़ी का ॥
जबकि [६५]लॉज़ुंब एक सतारे का ।
वैह्म में हो हसाब या लेखा ॥
सिफ़र सां यह ज़मीने पेचां[६६] पेच ।
हेच[६७] गिन्ते हैं, हेच मुतलक़ हेच ॥
अब कहां जाते वैहत के होते ।
क्यों ना अजसाम जान को रोते ?

६२ अन्धकार की फौज ६३ तमाम पृथ्वि ६४ नजूम, ज्योतिश के जानने वाले ६५ अचल ६६ पेचदार पृथ्वि ६७ कुछ नहीं ६८ स्वरूप के खालस अर्थात शुद्धि स्वरूप

---

(१७) जिस्म से बेतऽल्लुक़ी

(देहाध्यासरहित)

बादशाह इक कहीं को जाता था ।
उस तर्फ़ से फ़क़ीर आता था ॥
बादशाह को घुमंड ताज का था ।
मस्त को अपनी ज़ात का था ॥
मस्त चलता था चाल मस्ती की ।
राह न छोड़ा सलाम तक न की ॥
बादशाह तुर्श[1] हो के यूं बोला ।
" सख़्त मग़रूर शोख़ गुस्ताख़ा ! ॥
बादशाह हूं, तुझे सज़ा दूंगा ।
जिस्म तेरा अभि जला दूंगा " ॥
तिस पै मौला कबीर[2] आलीजाह[3] ।
शाहे शाहान् फ़क़ीर लापरवाह ॥

१ कड़वा होकर २ महान् ३ बड़े रुतबे वाला

जिस का मुब्दा-ओ-मुन्तहा आत्म था।

महवरे गुफ्तगू भी आत्म था॥

जिस्म पेवन्द से कुछ न करता था।

आत्मा ही था, नूर झरता था॥

पास धक धक जले थी इक भट्टी।

टांग उस में फ़कीरने धर दी॥

तब मुख़ातब हो शाह से बोला।

नक़शे तस्वीर! शेरे क़िर्तासा!

मैं हूं क़िर्तास। उस पे तू तस्वीर।

ज़ाते असली हूं। फ़र्ज़ है तस्वीर॥

नक़्श दावा करे तकब्बर है।

किबराई मेरी तो अज़हर है॥

जिस्म के इतबार ही से सही।

४ शुरु और धुरां (आदि औ अन्त) ५ धुरां अर्थात वाणि का आधार ६ शरीर के लिहाज़ से ७ ऐ कागज़ के शेर! ८ कागज़ ९ अहंकार १० बड़ाई ११ ज़ाहर, विद्यमान

मैं हूं आज़ाद इस तरह से भी ॥
क़तल करने का क़द्र है तेरा ।
झिड़कना इख्तियार है मेरा ॥
क़तलो धमकी का गर्म है बाज़ार ।
सौदा मेरा है, मैं हूं खुदमुख्तार ॥
जान लेना नहीं तेरे बस में ।
तेरी तम्बीह[12] है मेरे बस में ॥
तू जलायेगा दर्द क्या होगा? ।
देख ले, पैर जल गया सारा ॥
इस से बढ़ कर तू सज़ा क्या देगा ।
मेरा इक बाल भी न हो बींका ॥
आग में डाल दे, तू इस[13] तन को ।
ख्वाह शोलों में डाल उस[14] तन को ॥
दोनों हालत में मुझ को यक्सान् है ।

१२ सज़ा देना, क़ैद करना १३ फ़क़ीर के शरीर से मुराद है १४ बादशाह के शरीर से मुराद है

कुच्छ न बिगड़ा न बिगड सकता है ॥
तुम से बढ़ कर तुम्हारा अपना आप।
मैं ही तुम हूं, न तुम हो अपना आप ॥
आग मेरा ही एक तजेल्ला[15] है ;
रोब[16] तेरा भी ज़ोर मेरा है ॥
मुझ में सब जिस्म बुलबुले से हैं।
एक टूटेगा और क़ायम[17] हैं ॥
साधू जब कर रहा था यह तक़रीर।
शाह का दिल होगया वहीं नख़चीर[18] ॥
दस्त बस्ता[19] खड़ा हुवा आगे।
सायीं ! आरिफ़[20] हैं आप अल्लाः के ॥
तर्क दुन्या की, आख़िरत[21] की तर्क।
तर्क मौला को, तर्क की भी तर्क ॥

१५ रौशनी, प्रकाश १६ डर १७ स्थिर १८ शिकार गाह
१९ हाथ जोड कर २० आत्मवित २१ परलोक

दर्जा अव्वल के आप त्यागी हैं।
और दर्शन के हम भी भागी हैं॥

२२ एक दफ़ा

---

(१८) फ़क़ीर का कलाम.

क़दम बोसी को शाह झुका ही था।
कल्मा बेसाख़्ता[१] यह तब निकला॥
ऐ शहनशाह! तुम मुबारक हो।
तुम ही सब से बड़े तो तारक[२] हो॥
अपनी कीजीयेगा क़दम बोसी ख़ुद।
तुम ही त्यागी हो, तुम ही जोगी ख़ुद॥
कुछ नहीं इस फ़क़ीर ने त्यागा।
ज़ात के राज पाट में जागा॥
ख़ाक[३] ऊपर से जब हटा बैठा।

१ फ़ौरन, लावड़क २ त्यागी ३ यहां जिस्म (शरीर) से मुराद है.

मादने बेबहा को पा बैठा ॥
कूड़ा करकट उठा दीया इस ने ।
महल सुथरा बना लीया इस ने ॥
जहल को त्याग आप हो बैठा ।
ज्ञान तेरी तरह न खो बैठा ॥
लैक तुम ने स्वराज्य छोड़ा है ।
कूड़ा रक्खा है, महल छोड़ा है ॥
खाक को तुम अज़ीज़ रखते हो ।
असल मादिन को तुम न तकते हो ॥
खाक सारे लपेट ली तुम ने ।
क्या रमाई भभुत है तुम ने ॥
जुड़ गये हो अविद्या से आप ।
जोगी कैसे जुड़े बला के आप ॥
तुम ही जोगी हो, मैं न जोगी हूं ॥

४ अनन्त क़ीमत की कान (खज़ाना) (आत्मस्वरूप)
५ अज्ञान, अविद्या ६ लेकिन, किन्तु ७ खान, चशमा: खज़ाना

ज़ाते तन्हा हूं, मैं वियोगी हूं ॥
सुन के शाह, यह फ़क़ीर की तक़रीर।
सकता गश कर गया बना तस्वीर ॥

८ अद्वैत सत्ता ९ अलग, जुदा रहने वाला १० बेहोश आश्चर्यमय

---

(१९) गार्गी.

जनक राजा की हुक्मरानी में।
उन वैदेहों की राजधानी में ॥
नंगी फिरती थी गार्गी लड़की।
नूर चितवन में था जलाल भरी ॥
चिहरे से रोब दाब बरसे था।
हुसन को माहताब तरसे था ॥
ज्ञान की असल ज़ात की खूबी।

१ जीवनमुक्त २ चांद

उस के हर रोम से चमकती थी ॥
तक सके आंख भर के उस रुख़ को।
मारे दहशत से ताब थी किस को?
पाकबाज़ी का वह मुजस्सम नूर।
*शप्पर चशम को भगाना दूर॥
एक दफ़ा मार्फ़त की पुतली पर।
करती शक थी नगाहे ऐबं निगर॥
दफ़ातन गार्गी यह भांप गयी।
जान क़ालब में सब की कांप गयी॥
ऐब बीनों का कुफर तोड़ दीया।
रूए अजसाम बीन को मोड़ दीया॥
ज्ञान से पुर दहान यूं खोला।

२ मुख ४ ताकत ५ पवित्रता ६ पूरा पूरा अर्थात प्रकाश का शरीर ७ बुराई देखने वाले की दृष्टि, चमगिदड़ दृष्टि ८ ताड़ गयी, समझ गयी ९ पृथ्वि के पदार्थ (शरीर) देखने वाले १० मुंह * चमगिदड़, प्रकाश में न देखनेवाला

नाफ़ा तातार था, कि अग्नि था ॥
मैं वह ख़ंजर हूं, तेज़ दम ज़ालम! ।
कोहा माले है मिहरो[11] माह अंजुम[12] ॥
तीन जामो[13] में, या मियानों[14] में ।
छिप के बैठी हूं तीन ख़ानों में ॥
दूर गर पर्दा हया करदूं ।
फ़ित्ना[15] मेहशर अभी बपा करदूं ॥
शमश[16] कब ताब झलक की लाये ।
चकाचूंदी सी आंख में आये ॥
देख मुझ को फ़लक के सब अजराम[17] ।
मिस्ल[18] शबनम उड़ें, करें आराम ॥
*कोहर ऐसे यह दुन्या उड़ जाये ।
देखने को मुझे सज़ा पाये ॥

11 सूरज चान्द 12 तारे 13 पर्दों (कपड़ों) में 14 कोश ढकने 15 क़ियामत (प्रलय) का समय अभि पैदा कर दूं 16 सूरज 17 आकाश के तारे इत्यादि 18 मानन्द तरह * शबनम

काश[19]! देखो मुझे, मुझे देखो।
हर सरे[20] मू से चशमे हैरत[21] हो॥
मैं ब्रह्मा थी तुम ने समझा क्यों?।
खाक इस समझ पर, यह समझा क्यों?॥
जिस्म मैं हूं, यह कैसे मान लीया?।
हाय! कपड़ों को जान ठान लीया॥
खप गया जिस के दिल में हुसन मेरा।
ढंग संकेत[22] का एक आलम[23] था॥
जान जब होचुकी हो नोछावर।
बोलो, वह फिर कहां रहा नाज़र?॥
नाज़रो नज़र[24] आप खुद मंज़ूर[25]।
वसल कैसे कहां हुवा महजूर[26]॥
टूटे पड़ता है, हाय हुसन मिरा।

१९ ईश्वर चाहे २० बाल के सिरे से २१ हैरानी की निगाह २२ अर्थ २३ अवस्था २४ द्रष्टा और दृष्टि २५ दृश्य २६ जुदा किया हुवा

पर न गाहक कोई मिला उस का ॥
खुद ही माशूक़ आप आशक़ हूं ।
नें[27] ग़लत ! मैं तो .इश्के[28] सादिक़ हूं ॥
तारे कब नूर से नियारे[29] हैं ।
तुम हमारे हो हम तुम्हारे हैं ॥
ऐ अदू[30] ! ऐंठ ले, बिगड़ तन ले ।
सख़्त कह दे, कि सुस्त ही कहले ॥
जोशे .ग़ुस्सा निकाल ले दिल से ।
ताक़ते तैश[31] आज़मा तू ले ॥
मुझे भी इन तेरी बातों मे रोक थाम नहीं ।
जिगर में थाम न कर लूं तो राम नाम नहीं ॥

२७ नहीं (यह ग़लत है) २८ सच्चा असली .इश्क़ अथवा प्रेम मैं हूं २९ जुदा ३० दुश्मन ३१ .ग़ुस्से का बल

२० गार्गी से दो दो बातें.

राम भी एक बात जड़ता है।
खंजर तेज़ दम से लड़ता है
हुसन की बैहर[1] ग़ैरते खूबी[2], ! ।
इक नज़र हो ज़री इधर तो भी ॥
माना दीदों[3] में है तेरे लाली ।
जोत आंखों में है कपल[4] वाली ॥
भसम करती है तू हज़ारों को ।
कौन रोके भला अंगारों को ॥
लैकं[5] मैं एक हूं हज़ार नहीं ।
राम पर तिरा इखत्यार नहीं ॥
झांक आयीने[6] में दिल के देख ले ।
तू ज़रा गर्दन झुका कर पेक्ष ले ॥

१ समुद्र २ दूसरे को लजा देने वाली सुंदता ३ चक्षू कपल मुनी का नाम ५ किन्तु ६ शीशा

क़ल्ब[७] किस से तेरा मुनव्वर[८] है।
जल्वागर[९] कौन उस के अन्दर है॥
चीं जबीं हो के क़त्ल कर भृकुटि।
तिर्छे चितवन नज़र कीये टेढ़ी॥
क्यों ग़ज़ब तीर पास रखता है।
राम भृकुटि में वास रखता है॥
छोड़ दो घूर कर दिखानी आंख।
राम बैठा है तेरी दाहनी आंख॥
तल्ख़[१०] कामी से किस को दी दुशनाम?।
शाह[११] रग और कंठ में है राम॥
चल करो गर दमाग़ में तकरार।
राम बैठा है तेरे दसवें द्वार॥
हर तरह राम से [१२]गुरेज़ नहीं।

७ अन्तःकरण ८ प्रकाशित ९ प्रकाश देने वाला, चमकाने वाला १० गुस्से होकर बुरी खराब बोली बोलना ११ गले के अन्दर बड़ी रग (नाड़ी) १२ भागना

जुदा आहन[13] से तेग़[14] तेज़ नहीं ॥

ऐ मुहीते[15] किनार ना पैदा ! ।

हुसनो खूबी पे तेरी खुदा शैदा[16] ॥

वैहरे मव्वाज[17] है तलातुम[18] में ।

हुसन तूफ़ां है तेरा आलम में ॥

"मैं ब्रैहना[19] नहीं" यह क्यों बोला ।

साह्मने मेरे कुफर क्यों तोला ? ॥

पैहन कर आज मौज की चादर ।

नखरे टखरे हमीं से यह नादर ! ॥

"मैं ब्रैहना नहीं" यह क्या माने* ? ।

बुर्क़ा[20] ओढ़ा हुबाब[22] लायानि[21] ! ॥

तिनका भर किशती भर जहाज़ सही.

१३ लोहा १४ तल्वार १५ ऐ बेहद (अत्यन्त) अहाता (विशालता) रखने वाली ! १६ .कुर्बान १७ लैहरों वाला समुद्र १८ तूफ़ान (लैहरों में) १९ नंगा २० पर्दा २१ बग़ैर मतलब के (बेफायदा:) २२ बुलबुला * मतलब

कोह[२३] भर बैहर भर यह नाज़ सही ॥

हाय तुम ने तो क्या सितम ढाया ।
जुमैला[२४] आलम द्रोग़[२५] वह आया ॥

नून आंखो में कर दीया तुम ने ।
झूठ सच कर दिखा दीया तुम ने ॥

तेरे पर्दे सभी उठा दूंगा ।
झूठ बोले की मैं सज़ा दूंगा ॥

नाम रूपों की नू उठा दूंगा ।
हू[२६] ही हू हूबहू दिखादूंगा ॥

हाय! अज़हार[२७] आज लूं किस से? ।
रू बरू हो खड़ा बने किस से? ॥

आप ही गार्गी हूं आप हूं राम ।
कुच्छ नहीं काम, रात दिन आराम ॥

२३ पर्वत सम २४ कुल जहान २५ झूठा (असत्य) २६ ईश्वर ही ईश्वर यह सब है (सर्वं खल्विदं ब्रह्म) २७ बियान

२१ गंगा पूजा.

गंगा ! तेथों सदे वलहारे जाऊं (टेक)
हाड चाम सब वार के फैंकूं ।
यही फूल पताशे लाऊं ॥१॥ गंगा०
मन तेरे वन्दरन को दे दूं ।
बुद्धि धारा में वहाऊं ॥२॥ गंगा०
चित्त तेरी मच्छली चब जावें ।
अहङ्ग गिरि गुहा में दबाऊं ॥३॥ गंगा०
पाप पुण्य सभी सुलगा कर ।
यह तेरी जोत जगाऊं ॥४॥ गंगा०
तुझ में पड़ूं तो तू वन जाऊं ।
ऐसी डुबकी लगाऊं ॥५॥ गंगा०
रमण करूं सुत धारा मांहि ।
नहीं तो नाम न राम धराऊं ॥६॥ गंगा०

१ सौ वार क़ुर्बान जाऊं २ अहंकार ३ पर्वत की गुफा

२२ गंगा स्तुति.

नदीयां दी सरदार! गंगा रानी !।
ठंडे जल दे देन वहार. गङ्गा रानी ! ॥
सानूं रब्ब जिन्दड़ी दे नाल. गङ्गा रानी !।
कदे वार कदे पार. गङ्गा रानी ! ॥
सौ सौ गोते गिन गिन मार. गङ्गा रानी !।
तेरीयां लैहरां राम अस्वार. गंगा रानी ! ॥

१ प्राण. जान २ कर्मी

---

२३ अमर नाथ की यात्रा का हाल.

१. पहाड़ों की सैर.

राग पहाड़ी ताल कव्वाली.

पहाड़ों का यूं लम्बी तानें वह सोना।
वह गुंजान दरख़्तों का दोशाले होना॥

१ घने २ पोशाक ओढ़े हुवे अर्थात दरख़्त

वह दामन में सब्ज़ाः का मखमल बछौना ।
नदी का बछौने की झालर परोना ॥
यह राहत मुजस्सम यह आराम मैं हूं ।
कहां कोहो दरया, यहां मैं ही मैं हूं ॥१॥
यह पर्वत की छाती पै बादल का फिरना ।
वह दम भर में अब्रों से परबत का घिरना ॥
गरजना, चमकना, कड़कना, नखिरना ।
छमा छम, छमा छम, यह बूंदों का गिरना ॥
अरूसे फ़लक का वह हसना, यह रोना ।
मेरे ही लिये है फक़त जान खोना ॥२॥
यह वादी का रंगीं गुलों से लहकना ।
फ़िज़ा का यह बू से सेरापा महकना ॥

३ आनन्द, आराम से भरे हुवे ४ पर्वत अरु दरया ५ बादल ६ फैलना, ७ आकाश रूपी दुल्हन, मुराद इन्द्र से है ८ घाटी, ९ पुष्पों १० खुला मैदान ११ अति सुंदर सुगंधि देना

यह बुलबुल सां[१२] खंदां लबों का चहकना।
वह आवाजे नै[१३] का बेहर सू[१४] लपकना॥
गुलों की यह कसरत, इरम[१५] रश्क[१६] है।
यह मेरी ही रंगत है, मेरी ही बू है॥३॥
जो जू और चश्मा: है, नग़मा: सरा[१७] है।
किस अन्दाज़ से *आब बल खा रहा है॥
यह तक्यों पे तक्ये हैं रेशम बिछा है।
सुहाना[१८] समा मन लुभाना[१९] समा है॥
जिधर देखता हूं, जहां देखता हूं।
मैं अपनी ही तांब[२०] और शां देखाता हूं॥४॥

१२ हंसते हुये, खिले हुये १३ बन्सरी १४ सर्व तरफ १५ स्वर्ग का बाग़ १६ [illegible] १७ आवाज़ दे रहा है, बोलता है १८ दिल पसंद १९ मन को मोह लेने वाला २० चमक, प्रकाश, तेज * पानी

२ आबशारों की बहार.

नहीं चादरें, नाचती सीमें तन हैं।
यह आवाज़? पाज़ेब हैं नारह ज़न हैं॥
पुहारों के दाने ज़मुर्रद फिगन हैं।
सफ़ाई आहा! रूये मह पुर शिकन हैं॥
भँवा हूं मैं गुल चूमता बोसा लेता।
मैं शमशाद हूं, झूम कर दाद देता॥८॥
मेरे साह्मने एक मैहफ़ल मजी है।
हैं सब सीमें सर पीर, पुर सब्ज़ जी है॥

१ चांदी के बदन वाली (अर्थात यह पानी की चादरें बल्कि सफ़ेद चांदी के शरीर वाली चादरें हैं जो नाच कर रही हैं) २ पाओं का एक ज़ेवर होता है जो चलते समय सुन्दर आवाज़ देता है ३ शोर कर रही हैं ४ एक प्रकार का मोती है मुराद यह है कि पुहारें जो अपनी बूंदें बाहर फेंक रही हैं वह मानो अति सुंदर मोती बाहर डाल रही हैं ५ चांद का मुंह ६ बल डाले हुवे है (अर्थात चांद भी इस सफाई से ईर्शा कर रहा है ७ प्रातःकाल की आनन्दित वायू ८ सरू वृक्ष को कहते हैं ९ चांदी के सिर वाले अर्थात सफेद बाल या सिर वाले

शजर क्या हैं, मीना पै मीना धरी है ।
न झरनों का झरना है, कुलकुल लगी है ॥
लुंढाये यह शीशे कि मै है निकलीं नहरें ।
है मस्ती मुजस्सम यह, या अपनी लहरें ॥८॥

१० दरख्त ११ चिदानन्द से भरपूर

---

३ श्रीनगर से अनन्त नाग को किश्ती में जाना.

रवाँ आबे दरया है, कश्ती दैवान है ।
सबा तुन्दरू आगी, मुबश्शर-ए-जानाँ है ॥
यह लहरों पै सूरज का जल्वा अयाँ है ।
चमन्दी पै बर्फ इक नगड़ी फंसा है ॥

१ दरया का पानी चल रहा है २ नाच रही है अर्थात् बैह रही है ३ खुशी से भरी, तुन्द वायु ४ सुंदर गाने वाली चिड़िया ५ प्रातःकाल में बांग देती है अर्थात् (प्रातःकाल की शुद्ध वायु सुंदर गानेवाले पक्षी की तरह सुबह के समय ईश्वर आराधन करने के लिये बांग देती है) ६ प्रकाश साक्षात्, ७ चमक मारने वाली.

ज़हूर[8] अपने ही नूर का तूर[9] पर है।
पदीद[10] अपनी ही दीद[11] कुल[12] बैहरो बर है ॥७॥
झलकता है झील[13] दीदाए मह लक़ा[14] सा।
धड़कता है दिल आयीनाः[15] पुर सफा का ॥
हिलाता है कोहों[16] को सदमाः[17] हवा का।
खिले हैं कंवल फूल, है इक बला का ॥
यह सूरज की किरणों के चप्पे लगे हैं।
अजब नाओ भी हम हैं, खुद[18] खे रहे हैं ॥८॥

८ नज़र आना, जाहर होना ९ पर्वत से मुराद है १० ज़ाहर ११ दृष्टि १२ कुल पृथ्वि और समुद्र १३ सरोवर का नाम है १४ चांद से खूबसूरत की आंख जैसा १५ शुद्धः दिल साफ शीशे की तरह १६ पर्वत १७ चोट, टक्कर १८ चला रहे हैं, ठेल रहे हैं.

---

४ अमर नाथ की चढ़ाई, पूर्णिमा रात्री

चढ़ाई मुसीबत, उतरना यह मुशकल।

फिसलनी बरफ तिस पै आफत यह बादल ॥
क़्यामत यह सरदी कि बचना है कातिल।
यह बू बूटीयों की कि घबरा गया दिल ॥
यह दिल लेना जां लेना किसकी अदा है ? ।
मेरी जां की जां, जिस पै शोखी फिदा है ॥९॥
अजब लुत्फ़ है कोह पर चांदनी का ।
यह नेचर ने ओढ़ा है जाली दुपट्टा ॥
दिखाता है आधा, छुपाता है आधा ।
दुपट्टे ने जोबन कीया है दोबाला ॥
नशे में जवानी के माशूके नेचर।
है लिपटी हुई राम से मस्त हो कर ॥ १० ॥

१ प्रलय, आखर की २ झूठ ३ नखरा, काम ४ .कुर्बान, सदके हैं ५ .कुदरत ६ सुंदरता ७ प्रकृति (कुदरत) रूपी प्यारी प्रिया

---

(९) अमर नाथ का अज़हद विशाल खुदाई हाल (जिसे लोग गुफा कहते हैं)

बरफ जिस में सुस्ती है जड़ता, ला शै है।
अमर लिंग एस्तादः चेतन की जाः है ॥
मिले यार, हुवा वस्ल, सब फासला तै।
यही रूप दायम अमर नाथ का है ॥
वह आये उपासक, तअय्युन मिटा सब।
रहा रामे ही राम, मैं तूं हटा जब ॥

१ खुला, लम्बा चौड़ा २ कुच्छ चीज़ नहीं ३ खड़ा हुवा २ ४ स्थान, जगह ५ मलाप, मेल मुलाक़ात ६ सब फर्क़ दूर हुवा, मिट गया ७ नित्य, सर्वदा रहने वाला ८ भेद भाव, फर्क़, क़ैद, परिच्छिन्नता. ९ ईश्वर, कवि के नाम से भी मुराद है

---

(२४) उत्तरा खंड में निवास स्थान का वर्णन.

रात का वक़्त है बियाबां है।

खुश वज़ा पर्वतों में मैदां है ॥
"आस्मान का बतायें क्या हम हाल।
मोतियों से भरा हुआ है थाल ॥
चांद है मोतियों में लाल धरा।
अंबर है थाल पर रुमाल पड़ा ॥
सिर पर अपने उठा के ऐसा थाल।
रक्स करती है नेचरे खुशहाल ॥
बाद को क्या मजे की सूझी है।
राम के दिल की बात बूझी है ॥
पास जो बेह रही है गंगा जी।
अबख़रे उस के लद लदाते ही ॥
ला रही है लपक कर राम के पास।
क्या ही ठंडक भरी है गंगा बास? ॥

१ तरीका २ बादल ३ ढंग नाच ४ खुश (आनन्द रूप) प्रकृति ५ हवा ६ जल के प्रमाणू * आकाश

फव्वारे खिदमत में बाद है खुरसंद।
जा मिली बादलों में हो के बलन्द॥
अब तो अटखेलियां ही करती है।
दामने अब्र को लो उल्टती है॥
लो उड़ाया वह पर्दा-ओ-रूमाल।
आस्मां दिखाया है माला माल॥
शाद नेचर है जगमगाती है।
आंख हर चार सूं फिराती है॥
क्या कहूं चांदनी में गंगा है।
दूध हीरों के रंग रंगा है॥
वाह! जंगल में आज है मंगल।
सैर कर इस तरफ की चल! चल! चल!

७ सेवाके गुमान ८ खुश ९ बादल का पल्ला. १० खुश ११ प्रकृति १२ तरफ १३ आनन्द

---

२५ चांन्द की करतूत.

अजब घूमते घूमते राम को।
मिला एक तालाब सर शाम को॥
जुलाहे की थी पास में झोंपड़ी।
थी लड़की वहां खेलती इक पड़ी॥
हवा चुपके से सरसराने लगी।
इधर चांदनी दम दमाने लगी॥
मैं क्या देखता हूं कि लड़की वहीं।
है बुत बन रही और हिलती नहीं॥
खुला मुंह है भोले से मुसका रही।
है आंखों से क्या चांद को खा रही॥
उतर आंख से दिल में दाखल हुवा।
दिल साफ में चांद सब घुल गया॥
कहो तो अरे चांद! क्या बात है?।

१ हस रही

यह क्या कर रहे हो, यह क्या घात है ॥

पड़ा अक्स[2] ही तेरा तालाब पर ।

पै लड़की के दिल में कीया तू ने घर ॥

दीया आलमों[3] को न जिस राज़ को,

दिखाया न जो दूरबीं बाज़ को ॥

रियाज़ी का माहर न जो पा सका ।

न हैयत[6] से जो भेद कुछ आ सका ॥

जुलाहे के घर में दीया सब बता ।

अरे चांद ! क्योंजी ! हूवा तुझ को क्या ?

वह नन्हे[7] से दिल में यह आराम क्या ।

गरीबों के घर में तेरा काम क्या ? ॥

२ साया, प्रतिबिम्ब ३ बुद्धिमानों, दाना लोगों को ४ भेद गुह्य बात ५ गणित में लायक़ ६ शकल का इल्म, तस्वीर, नजूम ७ छोटे से

२६ आरसी.

दुलहन को जान से बढ़ कर भाती है आरसी।
मुख साफ़ चांद का सा दिखाती है आरसी॥
हस्ती इल्म सरूर का मज़हर तो ख़ूब है।
हां इस में आबरू को सजाती है आरसी।
हम को बुरी बला से यह लगती है इसलीये।
वाहद को क़ैदे दूई में लाती है आरसी॥
अज़ बस ग़नी है हुसन में वह अपने माहरू।
हैरत है उस के सामने आती है आरसी॥
ख़ूबी है रूये ख़ूब में, शीशे में कुच्छ नहीं।
हाथों में रूनमाई को जाती है आरसी॥

१ अंगूठे में डालने का ज़ेवर जिस में शीशा लगा होता है २ सच्चिदानन्द ३ ज़ाहर होने का स्थान ४ शान, इज़्ज़त ५ एकता ६ द्वैत ७ बेहद दौलतमंद (अर्थात हुसन में ज़्यादः) ८ चांद के मुखड़े वाला (माशूक़) ९ चेहरे १० चहरे को दिखाने को

ज़ाहर में भोली भाली, हैरां शकल वले[11] ।
क्या झूठ को यह रास्त[12] बताती है आरसी ॥
गैहनों में टुकड़ा आयीना का है हक़ीर[13] तर ।
रुतबा[14] चले सफाई से पाती है आरसी ॥
देखूं मैं या न देखूं, हूं आफ़ताब[15] रू ।
ताहम हमारे दिल को लुभाती[16] है आरसी ॥
गंगा ममेरू[17] अब्र[18] सही, मिहर[19]-ओ-मांह[20] सही ।
मुखड़े का अपने दर्स[21] कराती है आरसी ॥
है शौक़े दीद[22] चेहरः-ए[23]-ताबां का राम को ।
यकसू[24] दिली हरआन[25] बनाती है आरसी ॥

११ लेकिन १२ सच १३ तुच्छ १४ दरजा १५ सूरज के मुंह वाल (प्रकाश वाले चेहरे वाला) १६ मोह लेती है १७ पर्वत १८ बादल १९ सूरज २० और चांद २१ दर्शण २२ देखने का शौक़ २३ प्रकाशस्स्वरूप (प्रकाशवाले चेहरे का) २४ एकाग्रता एकागर २५ हर वक़्त

---

२७ तस्वीरे यार.

इस लिये तस्वीरे जांना हम ने खिचवाई नहीं (टेक)
बात थी जो असल में, वह नक़ल में पाई नहीं। इस० १
पहिले तो यहां जान की तन से शनासाई नहीं॥ इस० २
तन से जाँ जब मिल गयी, तो उस में दो ताई नहीं॥ इस० ३
एक से जब दो हूए, तो लुतफे यकताई नहीं॥ इस० ४
हम हैं मुशताके सखुन, और उस में गोयाई नहीं॥ इस० ५
पाओं लंगड़ा हाथ लुंझा, आंख बीनाई नहीं॥ इस० ६
यार का खाका उड़ाना, यह भी दानाई नहीं॥ इस० ७

१ प्यारा यार (जान की जो जान उस की तस्वीर) अर्थात अपने स्वरूप की मूरत २ पेहचान अर्थात (तन) शरीर से तो असली अन्दरूनी जाँ पैहचानी (देखी) नहीं जाती इसवास्ते तन की तस्वीर से क्या हासल ३ दो होना (अर्थात जब शरीर के साथ प्राण मिलकर बिलकुल एक हो गये तो उन को फिर अलग अलग दो कर ही नहीं सकते, तो फिर तस्वीर कैसे ४ एकता का आनन्द ५ बातों के सुनने के शौक़ वाले ६ मगर तस्वीर में बोलने की शक्ति नहीं ७ (तस्वीर में) आंख देख नहीं सकती, पाओं चल नहीं सकते, हाथ हिल नहीं सकते ८ नक़शा

कागज़ और पैरहन, यह दिल को भाई नहीं ॥ इस० ८
दिल में डर है कि मुसव्वर ही न बन बैठे रकीब ॥ इस० ९
दाम मांगे था मुसव्वर, पास इक पाई नहीं ॥ इस० १०
असल की खूबी किसी नक़ल में पाई नहीं ॥ इस० ११

९ कागज़ का लबास १० तस्वीर खैंचने वाला ११ शत्रू, दुसरा आशक़, सम् प्रीतम

---

२८ ख्याल दुन्या दार का

जे न मिलदा धन मिलीयां अमीर दे।
जे न मिले मुराद मिलियां फक़ीर दे॥
जे न जावे पीड़ मिलियां पीर दे।
तीनों दयो रुढ़ा विच वगदे नीर दे ॥ १ ॥

जवाब मस्त आत्मवित (फक़ीर) का

दुन्या दी मुराद जो कहन फक़ीर नूं।
दुन्या कारण मनन मुर्शद पीर नूं॥

छड के हीर फड़न जो लीड़ कचीर नूं ।
रोन्दे ढाई मार सदा तक़दीर नूं ॥ २ ॥

मतलब:--(१) दुन्यादार कहता है:---कि यदि अमीर के मिलने पर धनकी प्राप्ति न हो, और अगर फकीर के मिलने पर सर्व कामनायें और दुन्यावी मुरादें पूरी न हों, और अगर मुर्शद (गुरु) के मिलने से दुःख दूर न हों तो इन तीनों (मिलने वालों) को बहते पानी में बहादो अर्थात पानीमें डुबादो (संगत छोड़ दो).

(२) ज्ञानवान जवाब देता है:---जो साधू को दुन्याकी मुराद की खातर मानते हैं (और किसी सबब से नहीं) या जो गुरु को दुन्या की खातर (दुन्यावी आनन्द के लिये) मानते हैं, और जो आत्मज्ञान, निजानन्द रूपी अमृत को छोड़ कर लीड़ और चीथड़े मांगते रहते हैं वह सर्वदा ढाई मार मार कर अपनी प्रारब्ध को रोते रहते हैं.

---

२९ राम का एक प्यारे के नाम खत.

आ देख ले बहार कि कैसी बहार है ॥ (टेक)
गंगा का है किनार[1], अजब सबज़ा ज़ार है ।

1 कनारा, तट

बादल की है बहार, हवा खुशगवार है ॥
क्या खुशनमा पहाड़ पै वह चशमा सार है।
गंगा ध्वनी सुरीली है, क्या लुतफ दार है ॥ आ० १

बाहर निगह कीजीये तो गुल्ज़ार है खिला।
अंदर सरूर की तो भला हद कहां दिला ॥
कालिज क़दीम का यह मेरे मू नहीं हिला।
पढ़ाता मारफत का सबक़ मेरा यार है ॥ आ० २

वक़ते सुबाहे ईद तमाशा सार है।
गलगूना मुंह पै मल के खड़ा गुलऽज़ार है ॥
शाहे फ़लक से या जो हुई आंख चार हैं।
मारे शरम के चेहरा बना सुरख़ नार ॥ आ० ३

२ खुश करने (लगने) वाली ३ धारा बहती है ४ आनन्द ५. ऐ दिल ६ बाल बाँका नहीं हूवा (अर्थात पढ़ाना बन्द नहीं हुवा) ७ आनन्द की प्रातःकाल ८ उबटना, (उगाल) ९ फूल जैसी गालों (कपोलों) वाला (स्वरूप) १० सूरज ११ आग-की तरह लाल

क़तरे हैं ओस के कि दुर्रों[12] की क़तार है।
किरनो की उन में, वल्ले, नज़ाकत[13] यह तार है ॥
मुर्गाने खुश[14] नवां, तुम्हें काहे की आर[15] है।
गाओ बजाओ, शब का मिटा दिल से वैर[16] है॥ आ०४
माशूक़ क़द दरख़्तों पे बेलों का हार है।
नै[17] नै ग़लत है, ज़ुल्फ़[18] का पेचां यह मार है ॥
वाह वा ! सजे सजाये हैं कैसा श्रृङ्गार है।
अशजार में चमकता है, खुश आबशार[21] है॥ आ०५
अशजार सिर हिलाते हैं, क्या मस्त वार है।
हर रंग के गुलों से चमन लाला ज़ार[22] है ॥
भंवरे जो गूंजते हैं, पड़े ज़र नैगार[23] हैं।

१२ मोती १३ नाज़ुक सा धागा १४ खुश (अच्छा) गाने वाले पक्षी १५ शरम १६ वैर (अर्थात रात गयी और प्रातः-काल हुवा) १७ नहीं नहीं १८ पेचदार ज़ुल्फ (लटला) १९ सांप २० दरख़्तों २१ झरना २२ सुरख़ रंग २३ सुनहरी रंग जिन के परों पर होते हैं

आनन्द से भरी यह सदा[२४] ओङ्कार है ॥ आ० ६

गंगा के रू[२५] सफा से फिसलती न गर नज़र ।

लैहरों पे .अक्स[२६] मिहर[२७] का क्यों बेक़रार है ॥

विश्नू के शिव के घर का असासा यह गंग है ।

यहां मौसमे खिजां[२८] में भी फसले बहार[२९] है ॥ आ० ७

साकी[३०] वह मै[३१] पिलाता है, तुर्शी[३२] को हार है ।

वाह क्या मजे़ से खाने को ग़म का शकार है ॥

दिलदार खुश[३३] अदा तो सदा हमकनार[३४] है ।

दर्शन शराबे[३५] नावे सखुन दिलके पार है ॥ आ० ८

मस्ती मुदाम[३६] कार, यही रोज़गार है ।

गुलवीनू[३७] निगाह[३८] पड़ते ही फिर किस का खार[३९] है ॥

२४ आवाज़ २५ शुद्ध रूप २६ प्रतिबिम्ब, साया, २७ सूरज २८ श्रावन भादों की ऋतू जब पत्ते झरने लगते हैं २९ बसन्त ऋतु ३० आनन्द रूपी शराब पिलाने वाला ३१ शराब ३२ खटाई ३३ अच्छे नखरे करने वाला ३४ साथ ३५ अंगूर की शराब ३६ हमेशः (नित) ३७ फूल (नेकी) देखने वाली ३८ दृष्टि ३९ कांटा (बदी)

क्यों राम से नज़ार[40] है तू दिलफ़िगार[41] है।
जब राम .क़ल्ब[42] में तेरे खुद यारे ग़ार[43] है॥ आ०॰

४० दुबला, पतला ४१ ज़ख़मी दिल ४२ अन्तःकरण
४३ घर का यार, अर्थात पक्का यार

---

३० बदले है कोई आन में अब रंगे .ज़माना[1]। (टेक)
आता है अमन[2] जाता है अब जंगे .ज़माना[3]॥
ऐ जेहल[4]! चलो, दर्द उड़ो, दूर हटो हसद[5]।
कमज़ोरी मरो डूब, बस ऐ नंगे .ज़माना[6]!
ग़म दूर! मिटा रश्क[7], न .गुस्सा, न तमन्ना[8]।
पलटेगा घड़ी पल में नया ढंगे .ज़माना[9]॥
आज़ाद है, आज़ाद है, आज़ाद है हर एक।
दिल शाद[10] है क्या खूब उड़ा तंगे .ज़माना[11]॥

१. ज़माने का रंग २ आराम ३ लड़ाई का समय ४ अविद्या
५. ईर्षा ६ शरम का समय ७ द्वेश ८ इच्छा, ख्वाहश ९ समय का
ढंग १० खुश दिल ११ समय की तंगी, मुसीबत

(लो काठ की हंडिया मे निभे भी तो कहां तक।
अग्नि तो जला ज्ञान की दे संग .ज़माना)॥
आती है जहां में शाहे मशरिक़ की सवारी।
मिटता है सियाहि का अभि .ज़ंग .ज़माना॥
वह ही जो इधर ख़ार, उधर है गुले ख़ंदां।
हो दंग जो यूं जान ले नैरंगे .ज़माना॥
देता है तुम्हें राम, भरा जाम यह पी लो।
सुनवायेगा आहंग नये चंगे .ज़माना॥

१२ काठ की हांडी को अग्नि पर रखने से क्या हाथ लगेगा अगर कुछ जलाना चाहते हो तो ज्ञानाग्नि पर समय का ग़म रूपी पत्थर रख कर फूंक दो १३ सूर्य अर्थात ज्ञान का सूर्य उदय होनेवाला है १४ धब्बा, अंधकार १५ समय का ज़ंगार (दाग़) १६ कांटा १७ खिला हुआ फूल १८ समय का जादू, खेल १९ निजानंद की मस्ती का प्याला २० ज़माने के बाजे का नया राग.

माया और उस की हक़ीकत.

१ माया (शाम).

(यह सब कविता कलकत्ते के हाल की है और माया का विस्तार करके राम दर्शाते हैं).

गंगा की ठंडी छाती से आती है खुश हवा ।
है भीने भीने बाग़ का सांस, इस में मिल रहा ॥
गंगा के रोम रोम में रचने लगा वह वैहर ।
आया जुवार ज़ोर का लैहरों पे लेके लैहर ॥
देखो तो कैसे शौक़ से आते जहाज़ हैं ॥
मारे खुशी के सीटी बजाते जहाज़ हैं ।
शादी ज़मीं की ऐ लो! फ़लक से हुई हुई ।
वह सायवान क़नात है जब ही तनी हुई ॥
दुल्हा के सिर पर तारों का सिहरा खिला खिला ।

१ समद्र २ समुद्र में तुफान ३ आकाश

दुल्हन के बेकें दिल ने चरागां खिला दिया ॥

४ बिजली दिल में रहने वाली अर्थात पृथ्वी (इस जगह मुराद है) ५ बिजली की रौशनी फैल गयी

---

२ मुकाम (कलकत्ते का ईडन बाग़)

है क्या सुहाना बाग़ में मैदाने दिलकुशा[1]।
और हाशिया: है बेञ्चों का सञ्ज़ा: पे वाह वा ॥
मजमा हजूम लोगों का भर कर लगा है यह।
मैदान आदमी से लबालब भरा है यह ॥
बेञ्चों पे बाज़ बैठे हैं, अक्सर खुश खड़े।
बांके जवान बाग़ में हैं टैहलते पड़े ॥
मैदान पार सड़क पर है बग्गीयों की भीड़।
घोड़ों की सरकशी है, लगामों की दे नपीड़ ॥
शौक़ीन कलकत्ता के हैं मौजूद सब यहां।
हर रंग ढंग वज़ा के मिलते हैं अब यहां ॥

१ दिलको अच्छा लगने वाला २ खुले दिलवाला अर्थात विशाल ३ किनारा ४ गरोह ५ सिर हिलाना.

३ काम.

अर्थात (कलकत्त के बाग़ में लोगों का काम क्या है)

हम सब को देखते हैं, यह देखते कहां ?।
आंखे तनी हुई हैं, क्या पीर क्या जवान ॥
मर्कज़[1] सब निगाहों का उजला[2] चबूत्रा ।
खुश बैंड[3] बाजा गोरों का है जिस में बज रहा।
गाते फुला फुला के हैं वह गालें गोरियां ।
क्या रौशनी में सुरख दमकती हैं कुरतियां ! ॥
ऐ लोगो ! तुम को क्या है ? जो हिलते ज़रा नहीं।
क्या तुम ने लाल कुरती को देखा कभी नहीं ? ॥

१ केन्द्र २ रौशन, चमकीला ३ अंग्रेज़ी बाजे का नाम है.

---

४ परदा.

इसरार[1] इस में क्या है, करो ग़ौर तो सही।

१ भेद, गुह्य

ठैहरा रहा है पर्दा मा सब की निगाह पर।
इस पर्दे से परोई है हर एक की नज़र ॥
यह पर्दा तन रहा है, .अजब ठाठ बाट का।
जिस में ज़मीनो ज़मानो मकान है समा रहा ॥
पर्दा बला है, छेद कि सियो कहीं नहीं।
लेकिन मोटाई जो पूछो, तो असलां नहीं नहीं ॥
पर्दा सितम है. सैहर के नक़शो नगार हैं।
हर आंख के लीये यां अलैहदा ही कारें हैं ॥
सब सामईन के साम्हने पर्दा है यह पड़ा।
हर एक की नगाह में नक़शा बना दीया ॥
पर्दों से राग का है यह पर्दा .अजब पड़ा।
गंधर्व शैहर का है कि फ़िरौज का मज़ा ॥

२ देश काल वस्तू ३ सीया हुवा ४ बिलकुल ५ .ज़ुलम, ग़ज़ब ६ जादू ७ काम ८ सुनने वाले, श्रोतागण ९ चढ़ाई, तरक्की, बलंदी (यहां मुराद स्वर्ग लोक से भी हो सकती है)

जादू है पियानोटिज़्म[10] है, पर्दा सुराब[11] है।
क्या सच है रंग ढंग, यह सब नक़्शे आब[12] है?
रमीये तो यार पर्दे में देखें तो कैफीयत[13]।
आंखें खिली हैं पर्दा से क्यों? क्या है माहीयत[14]?॥
[15]दीदों में और रंगों में क्या है मुनास्बत?

१० पियानो बाजे के बजाने का नाम है ११ रेत का मैदान जो पानी की तरह नज़र आवे (मृग तृष्णा का जल) १२ पानी के नक़्श १३ हाल १४ असलीयत १५ चक्षु

---

५ विवाह.

वह नौजवां के रूबरू नूरी लिबास[1] में।
दुल्हन खिली है फूल सी फूलों की बास में॥
शादी के राग रंग में बाजा बदल गया।
ऐ लो! बात बैठी है, जलसा बदल गया॥
दुल्हन का रंग है वह गोया गुलाब है।

१ प्रकाश की पोशाक

और चश्मे नीम मैस्त से झड़ता शराब है ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो, तो जड़ जायें न आंखें ॥

२ आंखें ३ आधीमस्त

---

६ यूनीवर्स्टी कौन्वोकेशन.

.ऐनक लगाये लड़के को वह इस ही पर्दे पर ।
हरकारह दौड़ता हुवा लाया है क्या खबर ॥
लेते ही तार हाथ में लड़का उछल पड़ा ।
"मैं पास हो गया हूं, लो मैं पास हो गया"
"बी-ए-के इमतहान में बढ़ कर रहा हूं मैं ।
इंगलिश में और हसाब में अव्वल रहा हूं मैं" ॥
है चांस्लर से जलसा में .इनाम पा रहा ।
और फैलो साहवान से है इंकराम पा रहा ॥

१ यूनीवर्स्टी के हालमें प्रधान पुरुष (प्रेज़ीडेंट) २ यूनीवर्स्टी के मैम्बर व मददगार ३ खताब इत्यादि

क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तो जुड़ जायें न आंखें ॥

---

७ बच्चा पैदा हुवा.

वह देखना किसी के लीये इस ही परदे पर ।
पूरी हुई है आर्ज़ू पैदा हुवा पिसर ॥
मंगल है शादियाना है खुशियां मना रहा ।
दरवाज़े पर है भाट खड़ा गीत गा रहा ॥
नन्हा है गोल मोल, कि इक कंवल फूल है ।
नाज़ुक है लाल लाल, अचंबा अमूल है ॥
अब तो वहू की चांदी है घर भर में बन गयी ।
सास भी जो रूठी थी सो आज मन गयी ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें ।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखें ॥

१ बेटा २ खुशी के बाजे बज रहे हैं ३ छोटा सा बच्चा
४ बेशुमार क़ीमत वाला

नैशनल कांग्रैस.

वह देखना! किसी के लीये इसी परदे पर।
मण्डप है कांग्रैस का। ग़ज़ब धूम कर्रोफ़र! ॥
लैकचर वह दे रहा है धूवां धार सिहरकार।
जो चीर शक्को शुभाः को है जाता जिगर के पार ॥
हक़्-ओ-दक सकुत में हैं पड़े हाज़रीन तमाम।
वह मोतियों से आंख का छलके पडा है जाम ॥
"गो आन"; गो आन"! कहते हैं सब अहले जिन्दगी।
हड्डी से खून से लिखेंगे तारीख हिन्द की ॥
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।
जब रंग ही ऐसा हो तु जुड़ जायें न आंखे ॥
इस पर्दे पर है, ठेका में है, इक लाख की बचत।
इस पर्दे पर है, सेठ को, दो लाख की बचत ॥

१ शान शौकत २ जादू की तरह असर करने वाला ३ हक दक अश्चर्य हैरान ४ चुप चाप ५ श्रोतागण ६ उच्छल पड़ना ७ प्याला (मोतियों का) ८ आगे बढ़ो, आगे बढ़ो ९ जान्दार

इस पर्दे पर है सिंह जवान् खूब लड़ रहा।
तन्हा है एक फौज मे क्या डट के अड़ रहा॥
इस पर्दे पर जहाज़ हैं आते खुशी खुशी।
मक़्सद मुराद दिल की हैं लाते खुशी खुशी॥
इस पर्दे पर तरक्की है रुतवा वड़ा वढ़ा।
यक दम है मेरे यार का दर्जा चढ़ा हुवा॥
इस पर्दे पर हैं सैरो तमाशे जहान् के।
इस पर्दे पर हैं नक़्शे वहिश्तो जुनां के॥
बिछड़े हुये मिले हैं मुर्दे भी उठ खड़े हैं।
क्यों दायें से और वायें से मुड़ जायें न आंखें॥
जब रंग हों दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें।

१० मुराद ११ सैर और तमाशा १२ स्वर्ग नर्क १४ दिल पसन्द, स्वेच्छा १५ दिल पसन्द, स्वेच्छा

---

९ हक़ीकी (अवधूत का राज्य)

वाह! क्या ही प्यारा नक़्शा है, आंखों का फल मिला!!

उस मोहने नौजवान का जीना सफल हुवा।
महल उसका, जिस की छत पे हैं हीरे जड़े हुए![1]।
कौसे क़ज़ाह-व-अब्र के पर्दे तने हुए ॥[1][2]
मसनद बलन्द तख़्त है पर्वत हरा भरा।[3]
और शजरे देवदार का है चंवर झुल रहा ॥[4]
नग़्मे सुरीले "ओम" के हैं उस से आ रहे।[5]
नदियां, पिन्दे, वाद हैं, वह सुर मिला रहे ॥[6][7]
बेहोशो हिस है गर्चिह पड़ा खाल की तरह।
दुन्या है उस के पैर को फुट बाल की तरह ॥[8]
कैसी यह सल्तनत है, अदू का निशान नहीं![11][9]
जिस जाः न राज मेरा हो ऐसा मकान नहीं ॥[10]
क्यों दायें से और बायें से मुड़ जायें न आंखें।

१ इन्द्र धनुष २ बादल ३ बैठने की जगह ऊंची ४ देवदार के वृक्ष ५ आवाज़ शब्द ६ पक्षी ७ वायू ८ पाओंसे खेलने का गेंद ९ दुशमन १० जगह ११ बादशाहत राज्य १२ असली वास्तव

जब रंग हो दिलख्वाह तो जुड़ जायें न आंखें।

---

१० माया सर्व रूप.

माया का पर्दा फैला है क्या रंग रंग में।
और क्या ही फड़ फड़ाता है हर आबो संग में॥
इस पर्दे पर हैं झील जज़ीरे खलीजो बेहर।
इस पर्दे पर हैं कोह-ओ-बियाबां दियारो शहर॥
सब पीर सब जवान इसी पर्दे पर तो हैं।
बाशिन्दे और मकान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पैगम्बर और कताब इसी पर्दे पर तो हैं।
सब खाको आस्मान इसी पर्दे पर तो हैं॥
पील अस्प और गुलाम इसी पर्दे पर तो हैं।
शाहंशाहों के शाह इसी पर्दे पर तो हैं॥

१ पानी, पत्थर में २ सरोवर ३ द्वीप ४ खाड़ी (कोल) और समुद्र ५ पर्वत ६ जंगल ७ मुल्क और शहर ८ हाथी ९ घोड़े

क्या ज़िल्मल्लाना पर्दा है यह अनक़बूत का ।
है है ख्याल (उगला हुआ) काम मुंह का ॥

१० मकड़ी जो तन्तु अपने मुंह से निकाल कर जाला तनती है

---

११ नक़्शो निगार और पर्दा एक हैं.

यह दो नहीं हैं एक हैं. पर्दा कहो कि नक़्श ।
नक़्शो नगार पर्दा हैं, पर्दा ही तो है नक़्श ॥
यह इस्तओरा था, कि यह माया के रूप हैं ।
माया कहो कि यूं कहो यह नाम रूप हैं ॥
"इस्मो शकल" ही माया है, माया है इस्म शकल ।
हमम्पानी माया के हैं. यह सब रंग रूप शकल ॥

१ नाना प्रकार के रंग रूप २ मुबालगा, दृष्टान्त, तमसील ३ नाम रूप ४ एक जैसे माने (अर्थ) वाला.

---

१२ फ़िलसफ़ा.

पर्दा खड़ा है माया का यह किस मुक़ाम पर।
है यह सर्व ऊपर कि हवासे आम पर॥
है भी कहीं कि मबनी है, यह वेह्मे ख़ाम पर।
क्या सच है, एस्तादाः है, यह मेरे राम पर॥

शास्त्र, युक्ति २ आम इन्द्र थे अर्थात इन्द्रिय मय ३ सहारा लिये हुवे ४ कच्चा वेह्म अर्थात आरोप भरम ५ सीधा खड़ा हुवा.

---

१३ महले पर्दाः (दृष्टान्त)

है इस तरफ़ तो शोर नग़मोंदो सभा का।
और उस तरफ़ है ज़ोर शुनीदन की चाह का॥
इन दोनों ताक़तों का वह टकराना देखिये।
पुर ज़ोर शोर लेहरों का चकराना देखिये!
लैहरें मिलीं मिटीं। ऐलो! पैदा हुवे हुबाब।

१ राग रंग (आवाज़) २ सुनना ३ बुलबुला या बुदबुदे

यह बुलबुले ही बुर्क़ा हैं, पर्दा बरूए[5] आब ॥
मौजों ही का मुक़ाबला पर्दा का है महल[*] ।
मौजें है आब, कहते नहीं क्यों महल है जल? ॥
हां यह तो रास्त[6] है कि सरोद[7] और सामयीं[8] !
दोनो मिले मिटे हैं वह जल रूपे राम[9] में ॥
और राम ही में पर्दा है नक़शो नगार हैं ।
यह सब उसी की लैहरों के [10]मौजों के कार[11] हैं ॥

४ पर्दा ५ पानी के चेहरेपर अर्थात पानी की सताह (तैह) पर ६ सच ७ राग ८ सुनने वाले ९ जल रूपी राम में या राम जो जलरूप है उस में १० लैहरें ११ काम * पर्दे का अधिष्टान या आधार

---

१४ अहसासे आम. (दार्ष्टान्त)

महसूस[1] करने वाली इधर से आई लैहर ।
महसूस होने वाली उधर से आई लैहर ॥

१ इन्द्रिगोचर पदार्थों को अनुभव करने वाली वृत्ति

दोनो के अक़्द शादी से पैदा हुये हुबाब।
यानी नमूद "शै" हुई पानी में झट शताब॥
लहरें भी और बुल्बुले सब एक आब हैं।
इन सब में राम आप ही रमते जनाब हैं॥
माया तमाम इस की है हर फ़ेलो-ओ-क़ौल में।
मफ़ऊल फ़ेलो फ़ाइल है हर डील डौल में।
आबशारों और फव्वारों की फुहारों की बहार।
चश्मासारों मर्ग़ज़ारों गुलइज़ारों की बहार॥
बहरो दरिया के झकोले और सबा का ख़ुश ख़राम॥
मुझ में मुसव्वर हैं यह सब "ओम" में जैसे कलाम॥
पसर कर लेटा हूं जग में सुबह में और शाम में।

२ विवाह शादी अर्थात मेल ३ बुलबुला ४ दृश्य (व्यक्त) ५ वस्तु शकल (रूप) ६ जल ७ काम और इक़रार ८ कर्म कर्ण कर्ता ९ बाग़ इत्यादि १० पुष्प के रुख़सार (कपोल) वाले स्थान ११ समुद्र अरु दर्या १२ प्रातःकाल की वायु १३ मटक कर चलना १४ फ़र्ज़ी, आरोपित हैं १५ शब्द १६ फैलकर १७ सर्व का इन्द्रिय गोचर स्पर्श वा जानना

चान्दनी में रौशनी में कृष्ण में और राम में

---

(१८) राम मुबर्रा से (शुद्ध स्वरूप राम)

यह तो सब दुरुस्त है, बल्के अज़ रूये ज़ात भी ।
देखो तो पर्दा नक़्श वग़ैरा ना थे कभी ॥
है मौजें ही में रहो बदल जिस के बावजूद ।
क़ायम है ज्यूं का त्यूं सदा इक आब का वजूद ॥
अज़ ऐतबारे ज़ात यह कहना पड़ा है अब ।
पैदा ही कब हुवे थे वह अमवाज और हबाब ॥
अज़ रूये राम पूछो तो फिर वह नगारो नक़्श ।
माया वग़ैराः का कहीं नामो नशानो नक़्श ॥
हर्कत सकून और तग़य्युर का काम क्या ? ।
नुत्क़[13] ज़ुबां को दख़ल सिफ़ातों[14] का नाम क्या ॥

१ राम पाक (शुद्ध) २ सच ३ किन्तु ४ वस्तुता से भी ५ लेहर ६ बदलना इत्यादि ७ जल ८ लेहरें ९ वस्तु के लिहाज़से कहना पड़ा १० बुलबुला ११ स्थिरता १२ तबदीली १३ वाणि १४ गुण

अँकवाल कहां अँदवार कहां यां वेशी कमी को बार कहां।
यां पुण्य कहां अरु पाप कहां अरु मुझ में जीतो हार कहां॥
इक़रार कहां इनकार कहां नकार कहां अँमरार कहां।
महसूस हवास अहनाम कहां, ग्याक आब अरु बादो
नार कहां॥
सब मर्कज़ मर्कज़ मर्कज़ है इंकनार कहां पंरकार कहां।

१५ त्रिमूर्ति १६ बोझ १७ हद, निह १८ स्पर्श, इन्द्रिय, पदार्थ
वायू १९ अग्नि २० पंक्तियें २१ पंक्तिये डालने वाला औज़ार

१.६ नतीजा.

गलतां है मुहीत वे पायां यहां वार कहां अरु पार कहां?।
गंगा है कहां अरु बाग कहां है मुल्क कहां पैकार कहां?
यां नाम कहां अरु रूप कहां अर्जफा कहां अज़ार कहां?।
नहीं एक जहां दो चार कहां अरु मुझ में सोच विचार कहां?॥

१ पेच खाना हुआ (गर्क हुवा २) २ बेहद (अनन्त) कहाना
३ उजाड़ जंग ४ पोशीदगी (भेद) ५ जाहर करना

मां वाप कहां उस्ताद कहां? गुरु चेले का यां कार कहां?।
इहसान कहां आज़ार[6] कहां? यां खादिम[7] और सरदार कहां?॥
न ज़मां[8] न मकां[9] का कभी था नशां, इल्लत[10] मालूल[11] अज़्कार[12]
कहां।
नहीं ज़ेर[13] ज़बर[14] पेश[15] कहां? तक़्ती[16] और शेर अशआर[17]
कहां॥
इक नूर[18] ही नूर हूं शोले[19] फशां, गुलज़ार[20] कहां और
खार[21] कहां॥
लैकचर तक़रीर उपदेश कहां? तहरीर[22] कहां प्रचार
कहां?।
तप दान और ज्ञान और ध्यान कहां? दिल वेत्रस सीना
फ़िगार[23] कहां॥

६ दुःख ७ नौकर ८ काल ९ देश १० कारण ११ कार्य १२ ज़िकर १३ नीचे १४ ऊंचे १५ पीछे आगे १६ टुकड़े करना, वज़न कविता का वनाना १७ कविता, नज़्में १८ प्रकाश १९ दमकने वाला, यां दमक मार रहा है २० वाग़ २१ कांटा २२ लिखित (लिखना) २३ सीना फाड़ने वाला या ज़ख्मी दिल [.आशक़)

नहीं शेखी शोखी और कहां? सिर टोपी या दस्तार[25] कहां ?।

नहीं बोली ताना: धमकी यहां, सूफार[26] कहां और दार[27] कहां ॥

इक मैं ही मैं ही मैं ही हूं. शैय[28] गैर का दारो मदार कहां।

आलायशे[29] कैदो नजात कहां? अहवामे[30] रसन[31] और मार[32] कहां ॥

घर बार कहां कोहसार[33] कहां मैदान कहां और गार[34] कहां।

मेह[35] अंजुम[36] फर्श[37] और अर्श[38] कहां? यां ख्वाब[39] कहां बेदार[40] कहां ॥

२४ शरम हया २५ पगड़ी २६ तीर का मुंह २७ सुली २८ दूसरी वस्तु, भिन्न वस्तु २९ आलूदगी [अलेप] ३० वैहम भ्रान्ति ३१ रस्सी ३२ सांप ३३ पर्वत ३४ कन्दरा, गुफा ३५ चांद ३६ तारे ३७ पृथ्वि ३८ आकाश ३९ स्वप्न ४० जाग्रत

जब ग़ैर[41] नहीं डर खौफ़ कहां, उम्मेद से हालते ज़ार[42] कहां? ॥
मैं इक तूफ़ाने वहदत[43] हूं कहो मुझ में इस्तफ़सार[44] कहां।
इक मैं ही, मैं ही, मैं ही हूं, यां बन्दे[45] और सिरकार[46] कहां ॥

४१ अन्य, ४२ रोने की अवस्था ४३ एकता का तूफ़ान ४४ पूछना ४५ गुलाम, प्रजा ४६ बादशाह, राजा

तीन शरीर और वर्ण.

१. तीनों अजसाम.

ग़ज़ल

जाने मन[2]! जिस्म[1] एक खिलअत[3] है।
इस के उतरे न कुछ बिगड़ता है॥
याद रख, तू नहीं यह जिस्मे कसीफ़[4]।

१ शरीर २ ऐ मेरी जान! ऐ मेरे प्यारे! ३ चोगा कोट है ४ स्थूल शरीर

और हरगिज़ नहीं तू जिस्मे लतीफ़[5] ॥
जिस्म तेरा कसीफ़[6] ओवर कोट[7] ।
जिस्म तेरा लतीफ अंडर[8] कोट ॥
जिस्म बेरूनी[9] झट बदलता है ।
जिस्म अन्दर का देरपा[10] सा है ॥
देह स्थूल मर गया जिस वक्त ।
देह सूक्ष्म चला गया उस वक्त ॥
देह सूक्ष्म फिरे है आवागवन ।
तू तो हर जाँ[11] है, आना जाना कौन ? ॥
पक्की मट्टी के बेशुमार घड़े ।
भर के पानी से धूप में धर दे ॥
जितने बर्तन हैं, अक्स[12] भी उतने ।
मुख्तलिफ से नज़र आयेंगे ॥

५ सूक्ष्म शरीर ६ स्थूल ७ कोट के ऊपर का कोट ८ कोट के नीचे का कोट ९ बाह्य (अर्थात ओवर कोट) १० देर तक रहने वाला ११ हर जगह हैं १२ प्रतिबिम्ब

लैक सूरज तो एक है सब में।
और जो सायंस पढ़ा हो मकतब में॥
तब तो जानोगे तुम, कि यह साया।
आँब[13] अन्दर कभी नहीं आया॥
नूर[14] बाहर है, लैक धोके से।
बीच पानी के लोग थे समझे॥
अब यह पानी घड़े बदलता है।
टूटते हैं सबू[15], यह रहता है॥
पानी जिस्मे लतीफ को जानो।
मट्टी जिस्मे कसीफ पेहचानो॥
जाने मन! तू तो मिहरे तांबां[16] है।
एक जैसा सदा दरख्शां[17] है॥
जैहल[18] से है तू कैद कालब[19] में।

१३ पानी, जल १४ प्रकाश १५ घड़े, ठलिया १६ प्रकाश करने वाला सूर्य १७ चमकने वाला, प्रकाशस्वरूप १८ अविद्या, अज्ञान १९ शरीर

तुझ में सब कुछ है, तू ही है सब में ॥
गो यह जिस्मे लतीफ़ पानी सां ।
बदलता है हमेशा ही अबंदान[२०] ॥
पर तेरी ज़ाते .कुदसे[२१] वाला का ।
बाल हरगिज़ न हो सका वीक़ाँ[२२] ॥
मेरे प्यारे ! तू आफ़ताब ही है।
.अक्स मुतलक़ नहीं, तू आप ही है ॥
रूये अनवर[२३] ज़रा दिखा तू दे।
पानी उड़ता है, .अक्स हो कैसे ? ॥
कैसा पानी, कहां तनासुख[२४] हो ? ।
मैं खुदा हूं, यक़ीन रासिख[२५] हो ॥
.इल्मे ऑपटिक्स[२६] से गर करो कुछ ग़ौर ।

२० बहुत शरीर, देह २१ तेरे शुद्ध स्वरूप (आत्मा) २२ टेढ़ा २३ प्रकाश वाला मुख (अपना स्वरूप) २४ आवागमन (मरना और फिर जीना) २५ पक्का, मजबूत २६ नज़र, दृष्टि का शास्त्र

तो सुबू, आब मिहर[27] से नहीं और ॥
यह ज़मीन् और सारे सय्यारे[28] ।
चशमा-ऐ[29]-नूर से नहीं न्यारे[30] ॥
नैबूलैर[31] मसले को जाने दो ।
एक सीधी सी बात यूं देखो ॥
यह जो आबो सुबू-ओ-सैहरा[32] है ।
रात काली में किस ने देखा है ॥
चशम जब आफताब ने डाली ।
पानी बर्तन दखाये बनमाली ॥
आप बर्तन है, आप पानी है ।
क्या अजब राम की कहानी है ॥
आप मज़हर[33] है, साया अफगन[34] आप ।

२७ पानी और सूरज २८ आकाश के तारे इत्यादि २९ प्रकाश के धाम, खज़ाने से ३० जुदा ३१ आकाश के तारे इत्यादि की विद्या के भेद ३२ जंगल ३३ जगह ज़ाहर होने की ३४ प्रतिबिम्ब डालने वाला

साया मज़हर कहां ? है आप ही आप ॥
क्या तहय्युर[35] है, हाये हैरत है।
ग़ैर से क्या ग़ज़ब की ग़ैरत है ॥
कैसी माया, यह कैसा तलिस्म[36] है।
दुन्या तो हैरते मुजस्सम[37] है ॥
अब ज़रा और ग़ौर[38] कीजेगा।
यह अचंबा अजीब है माया ॥
कहिये आश्चर्य क्या कहाता है।
इन्तहा का मज़ा जो आता है ॥
इन्तहा का मज़ा है आनन्द घन।
यैनी ख़ुद राम सच्चिदानन्द घन ॥
पस यह माया भी आप ही है ब्रह्म।
नाम रूप हैं कहां ? है ख़ुद ही ब्रह्म ॥
उमंड आयी हो गर स्पैाहे[39] वैहम।

३५ आश्चर्य ३६ जादू ३७ आश्चर्यरूप ३८ विचार, सोच
३९ भ्रमकी फौज (लशकर)

फिर भगा दो उसे, न जाना सैहम[40] ॥
माया माया की कूछ नहीं दरअसल ।
वसल कैसे हो, अहद[41] में कब फसल ॥
इस को देखें बइतबारे .अब्द[42] ।
तब तो माया यह जैहल[43] है बेदर्द ॥
प्राण, अव्यक्त[44] और अविद्या भी ।
.इल्लत[45] .औला हैं नाम इस के ही ॥
ख्वाब[46] ग़फलत है घन सषुप्ती है ।
बीद कारण भी यह कहलाती है ॥
.आलमे ख्वाब और बेदारी[47] ।
इसही चशमे से होगये जारी ॥

४० डर, भय ४१ अद्वैत, एक ४२ जीव के लिहाज़से, जीव दृष्टिसे ४३ अविद्या, अज्ञान ४४ अप्रकट कारण, अमूर्तीमान ४५ सबसे पैहिला कारण, इत्यादि ४६ स्वप्न ४७ जाग्रत

२. कारण शरीर.

जॉग्रफ़ी में नक़्शा दरया का।
जूं शजर सरनगूं है दखलाया॥
गरचिः निमग्वल शजर से रखता है।
जड़ को ऊञ्चा तने से रखता है॥
(ऊर्ध्व मूल मधः शाखा, गीता)
बेर्श दरया की बरफ़ जड़ क़ायम।
रहती कैलास पर ही है दायम॥
मुर्तफ़ा बेख़ की तरह कारण।
मुंजमिद सर्द ठोस ज़रीं तन॥
सख़्त मस्ती गरूर से भर्पूर।
नेसती, लाशरीक, हर्कत दूर॥

१ भूगोल २ वृक्ष ३ शिर के बल, उलटा मुंह ४ जड़ ५ निम्न ६ ऊंचे उठी हुई अर्थात ऊंची जड़ वाले की तरह ७ जमा हुवा ८ सुनैहरी तन वाली ९ अव्यक्त

२ सूक्ष्म शरीर.

इस ही कारण शरीर से पैदा ।
यह लतीफो कसीफ[10] जिस्म हुवा ॥
ऊञ्चे [11]कोहों पै बर्फ सारे है ।
सोने चान्दी की झल्क मारे है ॥
पिघलते पिघलते वर्फ यही ।
पर्वतों पर बनी है गंगा जी ॥
इस से शफ्फाफ नदीयां वैहती हैं ।
खेलती जिन में लैहरें रहती हैं ॥
कोह का, फूल फल का, पत्तों का ।
साया लैहरों पै लुत्फ है देता ॥
नन्हे, [12]नन्हे यह सब नदी नाले ।
वर्फ ऊञ्ची के बालके वाले ॥
देनी निसवत इन्हें मुनासब है ।

१० सूक्ष्म और स्थूल ११ पर्वत १२ छोटे·छोटे

देह सूक्ष्म से । अैन वाजव है ॥
देह सूक्ष्म है "फ़िकरो .अक़लो होश ।
इमसाजो खियालो गुफ़तो नोश[१३]" ॥
.आलमें ख्वाव में यही सूक्ष्म ।
चलता पुरज़ा बना है क्या चम खम ॥
टेढ़े तिर्छे कलोल करता है ।
चोहल पोहलों में क्या लचकता है ॥
वर्फ़ जड़ जो शरीर कारण है ।
ज़ेरे अन्वारे[१४] मिहरे रौशन है ॥
देह सूक्ष्म इसी से ढलता है ।
जूं पहाड़ी नदी निकलता है ॥

१३ .अक़ल होश तमीज़ ख्याल, वाणी और श्रोत्रादि इन्द्रिय यह सब अन्तःकरण सूक्ष्म शरीर कहलाता है .१४ प्रकाशस्स्वरूप सूर्य (आत्मा) के तले है

---

४ स्थूल शरीर.

ख्वाब गुज़रा तो जाग्रत आई ।
नदी मैदान में उतर आई ॥
जूहीं सूक्ष्म ने क़दम यहां रक्खा ।
गदला खाकी कसीफ़ जिस्म लीया ॥
या कहो यूं कि जिस्मे नाज़ुक ने ।
सूफ़ मोटे के कपड़े पेहने ॥
शब को शीरीं बदन जो सोता है ।
जामा तन से उतार देता है ॥
जब ज़मिस्तां की रात आती है ।
नंगा दरया को कर सुलाती है ॥
दरया करके मुशाहदा देखा ।
खिर्क़ा हर साल में नया ही था ॥
ठीक इस तौर पर ही, जिस्मे लतीफ़ ।

१५ मोटा, स्थूल १६ सूक्ष्म शरीर १७ कपड़ा, लबास १८ शरद ऋतु, शीत काल १९ दृष्टि, नज़र करना २० लबास

बदलता पैरहन[21] है जिस्मे कसीफ ॥
यूं तो हर शब लबासे ज़ाहर को
दूर करता है बदने *दरबर को ॥
इल्ला[22] फिर सुबह पैहन लेता है।
स्थूल देह में फिर आन रहता है ॥

२१ पोशाक २२ किन्तु, लेकिन * अपने ऊपर के शरीरको

---

९. आवागमन.

लैक मरते समय यह जिस्मे लतीफ ।
बदलता मुतलैकन[23] है जिस्मे कसीफ ॥
जब पुरानी यह हो गयी पोशाक ।
दे उतारी यह फैंक दी पोशाक ॥
कैंचली चोला को उतार दीया ।
और ही जिस्म फिर तो धार लीया ॥

२३ बिलकुल

इस को कहते हैं हिंदू आवागवन।
बदलना जिस्म का है आवागवन॥

---

६ आत्मा.

मिहर जो वर्फ़ पर दरख़्शां था।
साफ नालों पे नूर अफ़शां था॥
वही स्थूल ख़्वदे मैदान पर।
जल्वा अफ़ॅगन था, आबे हैरान पर॥
एक दरया के तीन मौक़ों पर।
मिहर है एक हाज़रो नाज़र॥
बलकि दुन्या के जितने दरया हैं।
तैहते परतौ सभों के सेहँ जा हैं॥
आत्मा एक तीन जिस्मों पर।

१ सूरज २ चमकीला ३ प्रकाश छिड़कता था ४ मैदान की नदी (दरया) ५ प्रकाश डालने वाला ६ प्रकाश के तले ७ तीनों स्थान

जल्वा अफ़गन है, हाज़िरो नाज़िर ॥
सारी दुन्या के तीन जिस्मों पर।
एक आत्म है बातनो ज़ाहर [८] ॥
आना जाना नहीं आत्म में।
यह तो मफ़रूज़ [९] सब हूये तन में॥
आत्मा में कहां की आवागवन।
आये किस जा : को ? और जाये कौन ? ॥

८ अन्दर और बाहर ९ कल्पित, फ़र्ज़ कीये गये

---

७ तीन वर्ण.

असल को अपने भूल कर इन्सान।
भूला भटका फिरे है, हो हैरान ॥
मरता खरगोश जबकि जाता है।
झाड़ी झाड़ी में सिर छुपाता है ॥
है तअक़्क़ुब [१] में वैहम का सय्याद [२]।

१ पीछे जाना, भागे हुवे का पीछा करना २ शिकारी

छोड़ता ही नहीं ज़रा जल्लाद[3] ॥
गाह[4] वदने कसीफ में आया ।
गाह जिस्मे लतीफ में धाया ॥
कभी कारण में है पनाहं[5] गज़ी ।
वैहम से वन गया है वाख्तः[6] दीन ॥

३ मारने वाला या पोस्त उतारने वाला ज़ालम ४ कभी
५ पनाह (आश्चर्य) लेने वाला ६ हारा हुवा, थका मान्दा

---

८ शूदर (क्षुद्र)

जिस ने स्थूल में निशस्त करी ।
"जिस्म[1] वेरूं हूं" ठान *जी में ली ॥
नक़दे उलफत को वदन में रक्खा ।
.ऐशो .इशरत हवास[2] में चक्खा ॥
करलीया जिस्म अपना पाया-ए-तख्त ।
खाने पीने में समझ रक्खा वख्त[3] ॥

१ बाह्यदेह २ इन्द्रिय ३ नसीवा * दिल

न रक्खी इल्मो फ़ज़ल से कुछ गर्ज़।
एक तन परवरी[4] ही समझा फ़र्ज़॥
गर्ज़ यह थी, चला जो चाल कहीं।
कि न हो जिस्म को ज़वाल[5] कहीं॥
जिसको परवाह नहीं है इज़्ज़त की।
है फ़क़त आर्ज़ू[6] तो लज़्ज़त की॥
डाल कर लङ्गरे अनानीयत[7]।
समझा दरया[8] कसीफ़ जमीयत॥
वे दरम[9] देह कसीफ़ का चाकर।
इस को कहना ही चाहिये शूदर॥

४ केवल प्राण रक्षा या देहका पालन पोषन ५ गिरना, घटना ६ इच्छा, ख्वाहश ७ अहङ्कार का लंगर ८ कट्ठा किया हुवा खज़ाना ९ एक पैसा भी जो दाम न रखता हो, एक कौड़ी क़ीमत वाला भी नहीं जो हो

९ वैश्य.

डेरा जिस ने लतीफ़ में रक्खा।
राजधानी उसे बना बैठा॥
कह रहा है ज़ुबाने हाल से वह।
"देह सूक्ष्म हूं मैं" जो हो सो हो॥
जो ठटोली से क़ाबू आता है।
ताना खंजर सा चीर जाता है॥
भूका काटेगा नंगा रैह लेगा।
ज़ाहरी पीड़ दुःख सैह लेगा॥
मौक़्या शादी का हो, कि मरने का।
मर मिटेगा नहीं वह डरनेका॥
घर गिरौ रख के खर्च करदेगा।
चोटी क़र्ज़े से भी जकड़ देगा॥
कोई मेरे को बोली मार न दे।

१ अपनी वाणी अर्थात वाणी और अमल से

जिस्म मुक्ष्म को गोली मार न दे ॥
फ़िकर हर दम जिसे यह रहती है।
देखूं क्या खल्क़ मुझ को कहती है ॥
जान जिस की है निन्दा उस्तति में।
हमनशीनों से बढ़ के इज़्ज़त में ॥
पल में तोला, घड़ी में माशा है।
पैण्डूलम की तरह तमाशा है ॥
राये लोगों की मिसले चौगां है।
गेन्द सां दौड़ता हरासां है ॥
रात दिन पेचो ताब है जिस को।
नंग का इज़तराब है जिस को ॥
रहता इसी उधेड़ बुन में है।
पासे नामूस ही की धुन में है ॥

२ खल्क़त, लोग ३ बराबर वाले साथीयां से ४ घड़ी के नीचे जो एक धातु का टुकड़ा लटकता रहता है ५ गुल्ली डंडा के खेल की तरह ६ घबराहट, बेक़रारी ७ इज़्ज़त का खियाल, डर

जीता औरों की राये पर जो है।
ख्याले वेहशर्त फ़ज़ाये पर जो है॥
क़ियास में जिस के टेढ़ा वेढ़ापन।
तेवा जिस की सदा है मुतलव्वन॥
गाह चढ़ती है, गाह घटती है।
रुख पहाड़ी नदी वदलती है॥
ऐसा वेहमी मज़ाज है जिस का।
देह सूक्ष्म से काज है जिस का॥
वैश्य कहना वजा है ऐसे को।
शकलो सूरत में ख्वाह कैसे हो॥

८ नफ़रत बढ़ानेवाले ख्याल ९ प्रकृति (तबीयत) १० नाना रंग बदलने वाली

---

१० क्षत्रिय.

जिस की निष्ठा है देह कारण में।

है, अचल बज़्म में हो या रण में ॥
दुन्या हिल जाये पर ना हिलता है।
मुस्तक़िल अज़्म क़ौल पक्का है ॥
ख्वाह तारीफ़ ख्वाह मुज़म्मत हो।
शादी और ग़म पै जिस की क़ुदरत हो ॥
लाज से भै जिसे ना असला हो।
दो दिली से न काम पतला हो ॥
जो नहीं देखता है ख़ल्क़ को।
मर्द नज़र वाले मुबारक हो ॥
राये पर और की न चलता है।
क़ौम को आप जो चलाता है ॥
लोग दुन्या के बन मुख़ालफ़ सब।
जान लेने को आयें उस की जब ॥

१ सभा २ मज़बूत इरादा ३ निन्दा, हक़ारत ४ ताक़त ५ बिलकुल ६ ख़लक़त, लोग

ज़ेहर सूली सलीबें या फांसी ।
हंस के सैहता है जैसे हो खांसी ॥
जिस को तारीफ की नहीं परवाह ।
खाली तारीफ से ही वह होगा ॥
पैर पूजेंगे, नाम पूजेंगे ।
लोग सब उस की बात बूझेंगे ॥
उस को अवतार करके मानेंगे ।
लोग जब उस की बात जानेंगे ॥
धर्म क्षत्रिय है, यह मुबारक धर्म ।
बरतर अज़ ज़ोफो नंगो आरो शरमे ॥
आज इस धर्म की ज़रूरत है ।
धर्म यह बरतर अज़ कुदूरत है ॥
नाम को ब्राह्मण हो, क्षत्रिय हो ।

७ सूली ८ समझेंगे ९ लज्जा और शर्म १० मलिनता, गदला पन

नाम को वैश्य हो कि शूदर (क्षुद्र) हो ॥
सब को दर्कार है, यह क्षत्रिय धर्म ।
जान नेशन[11] की है, यह क्षत्रिय धर्म ॥
इस को कहते हैं लोग कैरैक्टर[12] ।
देह कारण को जान, इस का घर ॥
उस तलेटी पै रहता है क्षत्रिय ।
राना पर्ताप और सेवा जी ॥
जिस से नादियां तमाम आती हैं ।
बज ब्योपार को सजाती हैं ॥
है चमक दमक और आबो ताब ।
यह बलन्दी है गोया आलम[13] ताब ॥
इस ज़मीन पर यह है बलन्द[14] तरीं ।
मसनद[15] शाही को है .जेब यहीं ॥

११ क़ौम १२ श्रेष्ट प्रकृति, उत्तम चालचलन १३ कुल जगत को रौशन करने वाली (प्रकाश देने वाली) १४ बहुत ऊंची १५ गद्दी, तखत

चशमा व्यवहार का है सम्भाला।
राज है उस का, मरतवा .आला॥
जोश है और खरोश है जिस में।
शूर्मा पन की होश है जिस में॥
शेरे नर को न लाये खातर में।
तेहलका डाले फौजो लशकर में॥
गरज से कोह को हलाता है।
दिल बब्बर[16] का भी दैहल जाता है॥
जाक़[17] दरजौक़, फौज दल बादल।
मिथ्या लाशै[18] है, हेच और बातल[19]॥
धर्म की आन पर है जान .कुर्बान।
[20]गीदी बन कर न हो कभी हैरान॥
वही क्षत्रिय है, राम का प्यारा।

१६ बड़ा भारी शेर १७ झुण्ड के झुण्ड १८ कुच्छ चीज़ नहीं, तुच्छ १९ झूठी २० कमज़ोर दिल

देश पर जिस ने जान को वारा ॥
मस्त फिरता है ज़ोर में, वल में।
कौन्द जाता है बिजली बन, पल में ॥
तोप बंदूक की सदों[21] बलन्द से डर।
उङ्गली लेता नहीं वह कान में धर ॥
कपकपी में नहीं कभी आता।
लाले जान के पड़ें, नहीं डरता ॥
गरचिः घायल हो, फिर भी सीनासपरं[22]।
शोक करता नहीं, ना कुच्छ डर ॥
तीरो तल्वार की दना दन में।
अभिमन्यू[23] सा जा पडे रण में ॥
जां वाज़ी ही जिस की राहत[24] हो।
जंगो ज़ोरावरी ही फरहत[25] हो ॥

२१ आवाज़ २२ हौंसला कीये हुवे (छाती मज़बूत कीये तय्यार) २३ अरजन के बेटे का नाम २४ आराम २५ खुशी

रण हो, घमसान का क़यामत हो।
बला का हंगामा[26], और शामत हो॥
ज़ख़म ज़ख़मों पै ख़ूब खाता है।
पैर पीछे नहीं हटाता है॥
सख़्त से सख़्त कारज़ारो रज़म[27]।
शान्ति दिल में हो, अज़म हो विलजज़म[28]॥
जिस्म हर्कत में, चित्त सौकन[29] हो।
दिल तो फ़ारग़ हो, कारकुन तन हो॥
हर दो जानब समा भयङ्कर था।
तुन्द मोरो मलख[30] सा लशकर था॥
हाथी घोड़ों का, शूर वीरों का।
शंख बाजे का, और तीरों का॥
शोर था आसमां को चीर रहा।

२६ युद्ध, लड़ाई २७ महाभारत २८ बड़े मज़बूत (पक्के) इरादे वाला २९ स्थिर, अचल ३० अनगिनत, बेशुमार, अगणेय

गर्द से मिहर बन फकीर रहा ॥
अफरा तफरी में और गड़बड़ में ।
वह दलावर कमाल की जड़ में ॥
क्या दखाता जवान् मर्दी है ।
क्या ही मज़बूत दिल है, मर्दी है ॥
गीत ठण्डक भरा सुनाता है ।
फिलसफी[31] क्या अजब बताता है ॥
३३ { जिस के नुक़तों को ता अबद[32] कामल ।
सोचा चाहेंगे ग़ौर से मिल मिल ॥ }
सख्त शोरों[34] में शान्त यह सुर है ।
सच्चा यह मन चला बहादुर है ॥

३१ शास्त्र (ज्ञान) ३२ हमेशा तक ३३ इस जगह कृष्ण से मुराद है ३४ शोरों में

---

११. ब्राह्मण.

कोई पर शिव नज़र जो आता है ।

१ पर्वत

बर्फ़ को आब कर बहाता है ॥
जिस से कैलास ही न तावां है ।
रौनक़े बेहर और बियाबां है ॥
वैश्य क्षत्रिय को और शूदर को ।
दे है प्रकाश किह-ओ मिहतर को ॥
ओम आनन्द आत्मा चैतन्य ।
तीनों देहों में है जो नूर अफ़गन ॥
निष्ठा इस में है जिस की कि "यह मैं हूं"
"शिव हूं, सूरज हूं, खास शङ्कर हूं"
रूये आलम पै नूर अफ़गन है ।
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥
मुक्त खुद, दर्शनों से मुक्त करे ।
नूर और ज़िन्दगी से चुस्त करे ॥

२ जल ३ चमकीला ४ छोटे और बड़े को ५ प्रकाश, (तेज) डालने वाला ६ कुल जहान पर

तीन गुण से परे है, पर सब को ।
नूर देता है, ख्वाह क्या कुच्छ हो ॥
जिस को फरहत न दे कभी पैसा ।
ब्राह्मण है वोही जो हो ऐसा ॥
खड़ा करता है नहीं दस्ते दुआ ।
है ग़नी, ज़ात ही में वह धनी हुवा ॥
मांगता ख्वाब में भी कुछ न है ।
उस की दृष्टि से काञ्च कुंदन है ॥
(विष्णु को लात मार देता है।)[10]
वह ब्राह्मण है, वह ब्राह्मण है ॥
तीनों अजसाम से गुज़र कर पार ।
[11]यां अदू[12] है नहीं, न कोई यार ॥
हुसन में अपने खुद दरख्शां[13] हूं ।

७ मांगने के लीये हाथ पिसारना ८ अमीर बड़ा ९ स्वस्वरूप १० भृगू से यहां मुराद है ११ यहां से मुराद है १२ दुशमन, शत्रू १३ रौशन

मिहरे तॉबां हूं, मिहरे ताबां हूं ॥
मिह्नतें क्या मजे़ से खाता हूं।
मौत चटनी मिर्च लगाता हूं ॥
मेरी किरणों में हो गया धोका।
आब का था सुराबे दुन्या का ॥
क़िला दुःखों का सर कीया, ढ़ाया।
राज अफ़लाको मिहर पर पाया ॥
हस्ते मुतलक़, सरूरे मुतलक़ पर।
झंडा गाड़ा, फुरेरा लेहराया ॥
कुच्छ न बिगड़ा था, कुच्छ न सुधरा अब।
कुच्छ गया था न, कुच्छ नहीं आया ॥

१४ चमकीला सूर्य १५ पानी १६ मृग तृष्णा के जल का
१७ आकाश और सूर्य १८ सत्य स्वरूप, १९ आनन्द स्वरूप

---

१२ दुन्या की हक़ीक़त

क्या हैं यह? किस तरह हूये मौजूद? ।

इक निगाह पर सब की हस्ती-ओ-बूद[1] ॥
हां जगत है, सबूत दीजेगा ।
इन्द्रियों पर यक़ीन न कीजेगा ॥

(१) बेशक आती नज़र है दुन्या पर ।
है कहां आप ही न देखें गर ॥
माहो माही-व-शाहो ज़र्रीन[2] ताज ।
अपनी हस्ती को हैं तेरे मोहताज ॥
बर्क़[3] मौजूद है सभी शै में ।
गो हवासों के हो न हलके[4] में ॥
वक़्ते अज़हार, बर्क़े शोखीबाज़ ।
खुद ही मुसब्बत है, खुद ही मनफी नाज़ ॥
तेरी माया है बर्क़ *वश चञ्चल ।
यारों आगे कहां चलें छल बल ॥

१ स्थिती और होना २ चान्द सूर्य (अथवा मछली पर्यन्त सब जीव जन्तु) ३ बिजली ४ घेरा, हद ५ दृश्य, ज़ाहर होने के समय * बिजली की तरह

तू इधर देखता है आंख उठा।
तू उद्धर बन गया कोहो सहरा[6] ॥

(२) ख्वाब में हैं ख्याल की दो शान।
जुज़्वी[7] कुल्ली[8] "यह एक मैं" "यह जहान"
"मैं हूं इक मर्द" शाने जुज़्वी है।
"जुमला आलम," यह शाने कुल्ली है॥
ख्वाबे पुख़्ता शुदा है वेदारी।
जाग! सारे तिरी है गुलकारी[9] ॥
तूही शाहिद[10] बना है, तू मशहूद[11] ।
शान तेरी है आस्माने कबूद[12] ॥
ख्वाब तेरा, खियाल तेरा है।
जो ज़मीन-ओ-ज़मान ने घेरा है॥
जल्वा तेरा यह, अम्बसाती[13] है।

६ पर्वत और जंगल ७ व्यष्टिः ८ समष्टिः ९ बाग़ बूटा १० गवाह, साक्षी ११ हाज़र कीया गया, देखा गया १२ नीला आकाश १३ अज्ञान अथवा माया की विक्षेप शक्ति

वीज माया ही फैल जाती है ॥
क्या यह दुन्या खियाल मात्र है ।
क्या यह सच मुच खियाले खातर[14] है ॥
अगर तूझे इसमें शक नज़र आवे ।
कुछ भी विन खियाल के दिखा तो दे ॥

(मन वृत्ति (खियाल) के फुरने वगैर कोई भी शै महसूस[15] नहीं होसकती)

हां यह ख्वावो खियाल माया है ॥
'एक' कैसरत[16] में आ समाया है ॥
(३) मरना जीना यह आना जाना सब ।
ठैहरना चलना फिरना गाना सब ॥
सब यह करतूत जान माया की ।
मिहरे तावां की एक छाया की ॥
पुरं[17] जिया आफतावे रौशन राये ।

१४ दिल (मन) का ख्याल १५ भान १६ नानत्व १७ प्रकाश से भरपूर

गंग लेहरों पे नाचना है आये ॥
साक्षी सूरज कहीं न हिलता है।
आब बेहता है, यूं वह फिरता है ॥
छोटी बूंदों पे नूर सूरज का।
क्या धनुष बन गया है अचरज सा ॥
शीश मंदर में शमा[18] जो रक्खा।
क्या समां हो गया चरागां का ॥
फितनेगर[19] आयीना में चश्मे निगार।
झूठ है, गो हैं यार से दो चार ॥
यह अविद्या में जो पड़ा आभास।
ब्रह्म कहलाया इस से जीव और दास ॥
यूं जो संसर्ग से हुवा अध्यास[20]।
सानी[21] यकता का ला बढ़ाया पास ॥
माया आयीनाः कैसी खुर्सन्द[22] है।

· १८ दीपक १९ फसाद डालने वाला २० अन्दर परवेश
२१ दूसरा २२ खुश

मज़्हरे[२३] राम सच्चिदानन्द है ॥
कुच्छ नहीं काम रात दिन आराम ।
काम करता है फिर भी सब में राम ॥
क्यों जी जब आप ही की माया है ।
दिल पे अन्दोह[२४] क्यों यह छाया है ॥
हेच[२५] दुन्या के वास्ते फिर क्यों ।
भाई भाई से तीरह ख़ातर[२६] हों ? ॥
खटका कैसा ? झजक खतर क्या है ?।
बीमो[२७] उम्मेद कैसी ? डर क्या है ? ॥
बादशाह का बुरा जो चाहता है।
सख्त जुरमे कबीरह[२८] करता है ॥
देखियेगा हक़ीक़ी शाहंशाह ।
राज जिस का है काह[२९] से ता माह ॥

२३ दिखाने वाली, ज़ाहर होने का स्थान २४ ग़म, फिकर २५ नाचीज़, तुच्छ २६ खराब दिल २७ डर २८ बड़ा भारा पाप २९ तृणसे चान्द तक

तेरे नस में रगों में नाड़ों में।
ऐहले[30] सौदागरी हैं राहों में॥
जिस का ऐहदे हकूमते बर्कत।
चैन है सिर में अक़्ल की हर्कत॥
ऐसा सुलतान अज़ीमे आली जाह।
तेरा ही आत्मा है जाये पनाह॥
ऐसे सुलतां से जो हुवा ग़ाफ़ल।
हाये ख़ुदकुश[31] है शाहकुश[32] क़ातल॥
क्यों जी कुच्छ शर्मो[33] और भी है तुम्हें।
क्यों यह कङ्गलों से दान्त लिलके हैं?॥
रींगना क्यों? कमर यह टूटी क्यों?
वाये क़िस्मत तुम्हारी फूटी क्यों?॥
रास्ती के गले छुरी क्यों है?।

३० खून दम इत्यादि ३१ आत्मघात करने वाला ३२ आत्म स्वरूप रूपी बादशाहको मारने वाला ३३ शर्म, हया

इं३४ ही जीतेगा, सत की है जे ॥
क्यों ग़ुलामी क़बूल की तुम ने।
दर बदर ख्वार भीक ली तुम ने?॥
थी यह लीला रची अनोखे ढब।
खेल में भूल क्यों गये मनसॅब३५?॥
ताजे नूरी को सिर से फेंक दीया।
टोकरा रंजो ग़म का सिर पे लीया॥
अब जलालो जमाले ज़ात सम्भाल।
उठो, शब सा हों सब विषय पामाल॥
नैय्यरे आ३६ज़म हो, तुम तो नूर फि३७गॅन।
खिदमते माया में न ढूंडो धन॥
वैहम का मा३८र आस्तीन से खोल।
मत फिरो मारे मारे डाँवाँ डोल॥

३४ सत्य ३५ मर्त्तबा, दर्जा ३६ सूरज ३७ प्रकाश डालने वाले ३८ सांप

१३ ज़ाते बारी[1].

लैक माया यह आ गयी क्योंकर ?
रूये .आलम[2] सजा गयी क्योंकर ?
ज़ाते बेहद[3] को क्यों शरीक लगी ?
बे बदल हुसन को क्यों यह लीक लगी ?
बदर[4] को गैहन[5] यह लगा कैसे ?
ऐसा ज़ल्ले ज़मीन्[6] पड़ा कैसे ?

१ ईश्वर, असली स्वरूप २ जहान्, दुन्या ३ एक अद्वितीय
४ चौदश का चन्द्रमा ५ ग्रहण ६ साया, परछाईं पृथिव की

---

१४ जवाब.

(१) ऐ ज़मीन्[1] दोज़ चशमे दुन्या बीं ! ।
तू ही खुद है बनी ख़सूफ़[2] यहीं ॥
चान्द राहू ने जा न पकड़ा है ।

१ पृथिव के साथ एकसार रहने वाली २ ग्रहण की छाया,

वैह्म तेरे ने तुझ को जकड़ा है॥
ज़ाते [3]बेहद सदा है जूं की तूं।
उस में रहो [4]बदल है यां न [5]सूं॥
दायें बायें इधर उधर हर सूं।
आप ही आप एक रस है [6]हू॥
[7]ईनूं [8]आनूं, [9]चूं [10]चुनूं, [11]चुनीं-ओ [12]चुनां।
लौट आते हैं वहां से हो हैरान॥
[13]बरतर अज़ फ़ह्मो अक़्लो होशो गुमां।
[14]लामकां [15]लाज़मां [16]नशां बेमकान॥
(२) रूये [17]खुर्शीद पर [18]नक़ाब नहीं।
दुपैहर को कोई [19]हिजाब नहीं॥

३ अद्वैत स्वरूप ४ विकार ५ तरफ ६ ईश्वर, ब्रह्म ७ यह ८ वह ९ क्यों १० किस तरह ११ ऐसा १२ और वैसा १३ समझ होश और अक़्ल से भी दूर १४ देश रहित १५ काल रहित १६ चिन्ह रहित, निराकार १७ सूरज के मुख पर १८ पर्दा १९ पर्दा

आब[20] हायल नहीं सहाब[21] नहीं ।
देखने की किसी को ताब नहीं ॥
मौजज़न[22] हो रही है उरयानी[23] ।
तिस पे पर्दा है तुर्रह हैरानी ॥

(३) जूं रसन[24] में पदीदे सूरते[25] मार ।
मुझ में माया-नमूद है तूमार[26] ॥
यह स्वरूपाख्यात[27] है अज़हार ।
जान मुझको, रहे न यह पिंदार[28] ॥
और संसर्ग[29] को जो माना था ।
तब तलक ही था, जब न जाना था ॥
मारे[30] मोहूम में मोटाई तूल[31] ।
तो वही है जो थी रसन में मूल ॥

२० चमक ढांपे हुये नहीं २१-बादल, पर्दा २२ लैहरें मार रही है २३ नंगा पन २४ रस्सी २५ सांप की सूरत नज़र आती है २६ ढेर, लम्बी गाथा, बैहस २७ अपने स्वरूप का भ्रम २८ ग़रूर, समझ २९ आवेश ३० कल्पित सांप ३१ लम्बाई

यह हक़ीक़ी रसन का तूलो अ़र्ज़[३२] ।
मारे मौहूम में हो आया फ़र्ज़ ॥
इस तरह गरचिः माया मिथ्या है ।
उस में संसर्ग सत्त ही का है ॥
दूर रहते हैं मारे देहशत[३३] के ।
नागनी काली से सभी हट के ॥
पर जो आकर क़रीब[३४] तर देखा ।
बेख़तर[३५] हो गये, मिटा खटका ॥
माहीयत[३६] पर निगाह गर डालो ।
असले हस्ती को खूब सम्भालो ॥
कैसी माया, कहां हुवा संसर्ग? ।
कब थी पैदायश-व-कहां है मर्ग[३७]? ॥
काल वस्तु का देश का मुझ में ।

३२ लम्बाई, चौड़ाई ३३ डर, भय ३४ बहुत नज़दीक ३५ निडर, निर्भय ३६ असल वस्तु, हक़ीक़त ३७ मृत्यु

नाम होगा न, है, हुवा मुझ में ॥
कौन तालिब[38] हुआ था, मुर्शिद[39] कौन? ।
किस ने उपदेश करा, पढ़ाया कौन? ॥
किस को संशय शकूक उठे थे? ।
कब दलायल से हल फिर तै[40] हूये? ॥
हस्ती-ओ-नेस्ती नहीं दोनों ।
रुस्तगारी[41]-ओ-क़ैद क्योंकर हो? ॥
क्या .गुलामी कहां की शाही है? ।
.आली जाही कहां? तुवाही है ॥
मैं कहां? तू कहां सग़ीर[42]-ओ-कबीर? ।
किस का सैय्यादो[43] दाम दाना असीर[44]? ॥
किस की वहदत[45] और उस में कसरत क्या? ।
क्या खुदाई वहां .अिबादत[46] क्या? ॥

३८ जिज्ञासु ३९ गुरू ४० साफ हल हूये ४१ आज़ादि, मुक्ति ४२ छोटा, बड़ा ४३ शिकारी और जाल ४४ क़ैद ४५ एकता ४६ बन्दगी

किस की तँशबीह[47] और मुँशब्बाह[48] क्या?।
जेह्ल[49] क्या और .इल्म हो कैसा?॥
कैसी गंगा यहां पै राम कहां?।
.जाते मुतलक़ में मेरी नाम कहां?॥
कब खिली चान्दनी? है ख्वाब कहां?।
रात कैसी हो? आफ़ताब कहां?॥
कब रसन था? यहां पै मार नहीं।
कोई दुशमन हुवा न यार नहीं॥
अ.क्स इस जा नहीं है, .ऐन नहीं।
नुक़ता पैदा नहीं है, ग़ैन नहीं॥
कब जुदा थे? न पाई बीनाई[50]।
खुद खुदाई है, बल बे रँगनाई[51]॥
.कुछ बियान कीजेगा हाले .जात।

४७ हमशकल दृष्टान्त ४८ दृष्टान्त दीया हुवा, बराबरी वाला ४९ अज्ञान ५० चक्षु दृष्टि ५१ बे रंगी अथवा रंगामेज़ी

हाय कहने में आये क्यों कर बात? ॥
कब कंवारी के फ़ँहमें में आवे।
लज़्ज़ते वँसल कौन बतलावे? ॥
दस्पना पकड़ता है अँशया को।
कैसे पकड़े जो उङ्गली काँबज़ हो? ॥
अक़्ल बुद्धि हवास मन सारे।
मिस्ल चिमटा हैं, दुन्या अङ्गारे ॥
आत्मा अक़्ल बुद्धि मन सब को।
क़ाबू रखता है, हाथ चिमटे को ॥
दुन्यवी शै पे अक़्ल का वस है।
आगे शुद्ध आत्मा के खुद खस है ॥
अक़्ल से ब्रह्म चाहो पेहचाना।
हाथ चिमटे के बीच में लाना ॥

५२ समझ में आवे ५३ विषयानन्द ५४ चिमटा ५५ वस्तू
५६ जो उङ्गली चिमटा को खुद पकड़े हुवे हो

ग़ैर मुमकिन महाल ही तो है।
दम जो मारे मजाल किस को है? ॥
नुत्क़! मशहूर है तू कारआरा।
राम तक पहुंचने का है यारा? ॥
नुत्क़ ने ज़ोर जान तक मारा।
गिर पड़ा आख़िरश थका हारा ॥
आंख सीने से अपने बाहर आ।
ढूंड बैठी है बाग़ बन सैहरा ॥
छान मारा जहान को सारा।
कैसे देखियेगा आंख का तारा?
ऐ ज़ुबान! मोम तुझ से है संगा।
कुच्छ पता दे कहां पे है दारा? ॥
अपना सब कुछ ज़ुबान ने वारा।

५७ वाणि बोलने की शक्ति ५८ काम पूरा करने वाली ५९ थल ६० भूर ६१ जंगल ६२ पत्थर ६३ दारा बादशाह से भी मुराद है और अपने घर से या स्वरूप से भी मुराद है

चढ़ गया उड़ गया गले पारा ॥

क्यूं रोता क़लम है बेचारा ।

लिखते लिखते ग़रीब पे मारा ॥

ऐ क़लम, नुत्क़ ! ऐ ज़बान, दीदाः ! ।

ज़ुस्तजू में मरो, है निस्तारा ॥

आंख की आंख, जान की है जान ।

नुत्क़ का नुत्क़ प्राण के हैं प्राण ॥

कौन देखे यहां दिखाये कौन ? ।

कौन समझे यहां सुनाये कौन ? ॥

उड़ गया होश अक़्ल बनजारा ।

ओस सा कर सका न नज़्ज़ारा ॥

राम मीठा नहीं, नहीं खारा ।

राम खुद प्यार है, नहीं प्यारा ॥

६४ ढूंढ ६५ छुटकारा ६६ शबनम ६७ किसी वस्तु का देखना

राम हल्का नहीं, नहीं भारा।
राम मिलता नहीं, नहीं न्यारा॥
खंड टुकड़ा नहीं, नहीं कियारा।
खियाले तक़सीम पर चला आरा॥
राम है तेग़ तेज़ की धारा।
खेल ले जान पर तू आ यारा!॥
उस को आदिल रहीम ठहराना।
उससे दुन्या में बेहतरीं चाहना॥
ख्वाहशों का दिलों में भर लाना।
उन के बर आने की दुआ गाना॥
मतलबी यार उस का बन जाना।
चल परे हट! नहीं वह अंजाना॥
राम जारोब कश नहीं तेरा।

६८ बांटने के ख्याल पर ६९ ऐ प्यारे दोस्त! ७० मुंसफ, न्यायकारी ७१ झाड़ू देने वाला (भङ्गी)

सिर से गुज़रो, वैसाल[72] हो मेरा ॥
ख़्वाहशों को जिगर से धो डालो ।
हवसे दुन्या[73] को दिल से रो डालो ॥
आर्ज़ू को जला के ख़ाक करो ।
लज़्ज़तों को मिटा के पाक करो ॥
बहके फिरना भटक भटक मानिन्द[74] ।
छोड़ कर हूजीये अभी ख़ामन्द ॥
तू तो मॉबूद[75] है ज़माने का ।
देवताओं का देव तू ही था ॥
ऐहले अस्लाम[76] हिन्दु ईसाई ।
गिर्जा मन्दर मसीत, दोहाई ! ॥
दे के दोहाई राम कहता है ।
तू ही तो राम गौड[77] मौला है ॥

७२ मुलाक़ात, दर्शन ७३ दुन्या के पदार्थों का लालच ७४ शटमूठ ७५ पूजनीय, ७६ ऐ मुसलमानों ! ७७ God, ईश्वर

सब मज़ाहब में सब के ग्रोवंद में ।
पूजा तेरी है, नेक में बद में ॥
ऐ सदा मस्त राम मतवाला ! ।
रुतबा औसाफ़ से तिरा बाला ॥
ऐ सदा मस्त लाल मतवाला ! ।
अपनी महिमा में मौज कर वाला ॥
एकमेवाद्वितीय तेरी ज़ात ।
वाहदु लाशरीक मेरी ज़ात ॥
पास तेरे फड़क ले ग़ैरीयत ।
ग़ैरमुमकिन है, बल्कि बे मअ्नीयत ॥
एक ही एक, आप ही हूं आप ।
राम ही राम, किस की माला जाप? ॥

७८ मंदर ७९ सिफतों ८० एक, बग़ैर मिसाल के ८१ मैद्वत होना * सिर्फ एक ही है दो नहीं, लासानी

१.५ आदमी क्या है?

(१) दाना खशखश का एक बोया था।
बाबा आदम[1] ने इब्तदा में ला॥
एक दाना में ज़ोर यह देखा।
बढ़ गया इस क़दर, नहीं लेखा॥
इस क़दर बढ़ गया फला फैला।
जमा करने को न मिला थैला॥
कुठले कुठली भरे हुवे भरपूर।
बनीये सौदागरों के कोठे पूर॥
एक दाना हकीर[2] छोटा सा।
अपनी ताक़त में क्या बला निकला॥
आज बोने को दाना लाते हैं।
इस की ताक़त भी आज़माते हैं॥

१ हज़रत आदम जिसको ईसाई और मुसलमान अपना पैहला पैग़म्बर सृष्टि रचने वाला मानते हैं २ नाचीज़

यह भी खशखाश ही का दाना है ।
यह भी ताक़त में क्या यैगाना है ॥
हूबहू है वुही तो इस में भी ।
शक्ती आदम के बीज में जो थी ॥
सच बतायें, है यह वुही दाना ।
न यह फैला हुवा न *दोगाना ॥
खूब देखो विचार करके आप ।
माहीयत बीज को क़लील सा नाप ॥
ग़ौर से देखिये हक़ीक़त को ।
नज़र आता है बीज क्या तुम को? ॥
असल दाना नज़र न आता है।
न वह घटता है, बढ़ न जाता है॥
मेरे प्यारे! तू ज़ाते बाहद है।
तेरी क़ुदरत अगरचिः बेअद है॥

३ अकेला, बे मिसाल ४ असलीयत ५, थोड़ा सा ६ बे शुमार बग़ैर, गिन्ती के * दूसरी क़िस्म का

(२) जान नन्हीं को जबकि[7] सायंसदान[8]।
इम्तिहान को है काटता यकसान॥
जिस्म गो होगया हो दो टुकड़े।
लैक मरते नहीं वह यूं कीड़े॥
पेशतर काटने के एक ही था।
जब दीया काट दो हूवे पैदा॥
दोनों वैसा ही ज़ोर रखते हैं।
जैसे वह कीड़ा जिस से काटे हैं॥
दो को काटें तो चार बनते हैं।
चार से आठ बन निकलते हैं॥
क्या दिखाती है, खोल कर यह बात।
काटने में नहीं है आती ज़ात[9]॥
गो मनु का शरीर छूट गया।
पर करोड़ों हनूद हैं पैदा॥

७ छोटी सी ८ सायंस विद्या का जानने वाला ९ सत्य वस्तु

हर ऋषि की नस्लें में है वुही।
शक्ति आदि मनु में जो तब थी॥
हां अगर कुछ कसर है ज़ाहर में।
दुरें यक्ता पड़ा है कीचड़ में॥
झट नकालो यह हीरा साफ करो।
ज़िद न कीजीयेगा, बस मुआफ करो॥

(३) एक शीशे में एक ही रू था।
शीशा टूटा, अदद वढ़ा रू का॥
मुखतलिफ हो गये वहुत अंवदां।
इन में ज़ाहर है एक ही इन्सां॥
ज़ैद हो वकर हो उमर ही हो।
मंज़हरे आदमी है, कोई ही हो॥

१० औलाद ११ वेमसाल मोती १२ चेहरा, मुख १३ गिन्ती, नम्बर १४ देह, जिस्म १५ ज़ाहर होने का स्थान, जताने वाला

गो है नकरे[16] का मॉरफों[17] में ज़हूर ।
नाम रूपों में है, यही मामूर ॥
पर यह नकरा बज़ाते ख़ुद क्या है ?
इस में हिस्सों का दख़ल बेजा है ॥
इस्म फ़रज़ी, शकल बदलती है ।
पर जो तू है, सो एक रस ही है ॥
तू ही आदम बनाथा, तू है[18]व्वा ।
तू ही लाट साहब, तूही हौवा ॥
तू ही है राम, तू ही था रावण ।
तू ही था वह गइयाँ ब्रिन्द्रावन[19] ॥
झूट तुम को सनम[20]! न ज़ेबाँ[21] है ।
तूही मौला है, छोड़ दे है है ॥

१६ .आम शब्द जो बोलने वर्तने में आये १७ गुणवाचक अथवा नाम वाचक शब्द १८ आदम हव्वा मुसल्मानों के दो पैग़म्बर हैं जिन से यह पृथ्वि उत्पन्न हुई मानते हैं १९ कृष्ण से मुराद है २०. ऐ प्यारे! २१ वाजब, ठीक

सीमबर[22] का वह चांद सा मुखड़ा।
तेरा मज़हर है, नूर का टुकड़ा॥
दिल जिगर सब का हाथ में है तेरे।
नूरे मौफ़ूर[23] साथ में है तेरे॥
माहो ख़ुर्शीद[24], बर्क़ो अञ्जमो नार।
जान करते है राम पर ही निसार[25]॥

२२ चांदी वाला २३ बहुत ज़्यादा कीया हुवा प्रकाश, यानी प्रकाशस्वरूप २४ चांद, सूर्य, बिजली, तारे और अग्नि २५ क़ुर्बान्

नोट—(नम्बर १, २, ३ से मुराद तीन प्रकार की युक्तियों से है जिनसे लेखक ने सिद्धान्त को दर्शाया है)

भारत वर्ष.

१ भारत वर्ष की स्तुति.

सारे जहां से अच्छा हिन्दोस्तान हमारा।

हम बुलबुलें हैं उसकी, वह बोस्तां[1] हमारा ॥
गुर्बत[2] में हों अगर हम, रहता है दिल वतन[3] में।
समझो वुहीं हमें भी, हो दिल जहां हमारा ॥
पर्वत वह सब से ऊंचा, हमसाया आस्मां का।
वह सन्तरी हमारा, वह पास्बां[4] हमारा ॥
गोदी में खेलती हैं जिस के हज़ारों नदियां।
गुलशन है जिन के दम से रश्के जहां हमारा ॥
ऐ आबे रवदे गंगा[5]! वह दिन है याद तुझ को।
उतरा तेरे किनारे जब कार्वां[6] हमारा ॥
मज़हब नहीं सखाता आपस में वैर रखना।
हिंदी हैं हम, वतन है हिन्दोस्तान हमारा ॥
यूनानो मिसरो रूमा सब मिट गये जहां से।
बाक़ी है पर अभी तक नामो नशां हमारा ॥

१ बाग़ २ परदेश ३ अपने देश में ४ चौकीदार, मुहाफ़िज़
५ ऐ गंगा नदी के जल ६ क़ाफ़ला

कुच्छ बात है कि हँस्ति मिटती नहीं हमारी।
सदीयों से आस्मां है ना मिहरबान् हमारा॥
अक़्बाल अपना कोई मेहरम नहीं जहां में।
मालूम है हमीं को दर्दे निहां हमारा॥

७ मौजूदगी, वस्तुता ८ कवि का नाम है ९ वाक़फ १० छुपा हुवा दर्द

---

२ भारत वर्ष की महिमा.

चिशती[1] ने जिस ज़मीन् में पैग़ामे हक़[2] सुनाया।
नानक ने जिस क़लीम[3] में वेहदत[4] का गीत गाया॥
तातारियों ने जिस को अपना वतन बनाया।
जिसने हजाज़यों से दशते अरब[5] छुड़ाया॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है (टेक)
यूनानयों को जिस ने हैरान कर दीया था।

१ मुसलमानों का पैग़म्बर २ ईश्वर का हुक्म ३ मुलक ४ अद्वैत ५ अरब मुलक का जंगल, रेगस्तान्

सारे जहां को जिसने .इल्मो हुनर दीया था ॥
मिट्टी को जिस की [6]हक़ ने [7]ज़र का असर दीया था ।
तुर्कों का जिस ने [8]दामन हीरों से भर दीया था ॥
मेरा वतन वही है । मेरा वतन वही है ॥
फिर [9]ताव देके जिस ने चमकाये [10]कहकशां से ।
टूटे थे जो सतारे फारस के आस्मां से ॥
वहदत की [11]नै सुनी थी दुन्या ने जिस मकां से ।
[12]मीरे अरब को आई ठंडी हवा जहां से ॥
मेरा वतन वही है । मेरा वतन वही है ॥
[13]गौतम का जो वतन है, जापान का [14]हरम है ।
.ईसा के आशकों का छोटा [15]योरुशलम है ॥
[16]मेदफ़ून जिस ज़मीन में असलाम का चशम है ।

६ ईश्वर ७ स्वर्ग ८ चादर का पल्ला अर्थात जेब ९ ताकत १० आकाश में दूधीया रास्ता (milky path) ११ बांसरी यानी अद्वैत का राग १२ महम्मद १३ बुद्ध भगवान १४ तीर्थ का मुक़ाम, बड़ा मंदर १५ .ईसायों के पूजने का मंदर १६ दफन कीया गया

हर फूल जिस चमन का फ़िरदौस है, अरम है ॥
मेरा वतन वही है। मेरा वतन वही है ॥

१७ बहिश्त १८ स्वर्ग

---

३ हुब्बे वतन.

देखा है प्यारे ! मैं ने दुन्या का कारख़ाना।
सैरो सफ़र कीया है छाना है सब ज़माना ॥
अपने वतन से बेहतर कोई नहीं ठिकाना।
ख़ारे वतन को गुल से ख़ुशतर है सब ने माना ॥
ऐहले वतन से पूछो, तुम ख़ूबियां वतन की।
बुलबुल ही जानती है आज़ादियां चमन की ॥ १ ॥
खाओ हवा वतन की, कुछ और ही मज़ा है।
पानी पीयो वतन का, अमृत से भी खरा है ॥

१ अपने देश की महब्बत २ अपना देश ३ स्वदेश का कांटा अर्थात दुःख ४ बहतर ५ स्वदेश के लोग ६ बाग़ ७ अच्छा, स्वच्छ

खाके वतन न कहिये, इक्सीरो कीमीया है।
रुतबा तेरी ज़िमी का कुछ ऐ वतन! जुदा है॥
जो शै ग़रज़ यहां है दुन्या से है निराली।
नामे वतन ने इस में ताज़ाः है जान डाली ॥ २ ॥
बाग़ों में फिर के देखो कुछ और ही है नज़्हत[9]।
खेतों से यहां के आती है आंख में तरावत॥
रखते हैं यां के दरया कुछ और ही लताफत[10]।
यां के पहाड़ में है अर्शे बिरीं[11] की रफ़अत॥
दुन्या में फिर के देखा हरगज़ कहीं नहीं है।
बाग़े बहिश्त कहिये यां की ज़िमीन नहीं है ॥ ३ ॥
है धूप में वतन की कुछ और नूर तावां।
और चांदनी यहां की चांदी सी है दरख्शां॥

८ दुःखनाशक ९ दर्जा १० शुद्धताई ११ सबसे अति ऊंचा आकाश १२ मेहरबानी, बरकत १३ और सूरज चमक रहा है १४ चांदी सी है चमकीली

अन्वारे[15] की तजल्ली[16] बिजली से है नुमायां[17] ॥
रैहमत की वह झड़ी है कहिये न उस को वारां[18] ॥
मिस्ले ज़मीरे[19] रौशन मतलों[20] की है सफाई।
दिल में उठीं उमंगे, जिस दम घटा भर आई ॥ ४ ॥
देखे यहां के इन्सां अक्सर फरिश्ता[21] खो हैं।
सब औरतें हसीं[22] हैं सब मर्द ख़ूबरू[23] हैं ॥
रखते हैं यहां के हैवां कुछ और [24]खो-ओ-बू हैं।
और तांइरों[25] को देखो तो क्या ही खुशगुलू[26] हैं ॥
इन्सान और हैवान यूं तो हैं, देखे भाले।
लेकिन यहां हैं सब के अन्दाज़[27] कुछ निराले ॥ ५ ॥
जौहरे[28] वतन में आकर खुलता है आदमी का।

१५ अर्थात् चांद स्तारे इत्यादि १६ प्रकाश १७ ज़ाहर १८ वर्षा १९ रौशन (शुद्ध) चित्त (दिल) की तरह २० आकाश से मुराद है २१ देव स्वभाव रखने वाले २२ सुन्दर २३ सुंदर शकल २४ स्वभाव और मिज़ाज २५ पक्षी २६ उत्तम गले (सुर से गाने) वाले २७ माप, वज़न यहां क़द से मुराद है २८ गुण, खूबी

जब था वतन से बाहर, बेशक वह आदमी था ॥
यां आदमी नहीं वह है बाप या कि बेटा ।
कहता है कोई भाई कोई उसे भतीजा ॥
यां गोशंज़द हैं हरसू उलफ़त भरी सदायें ॥
बाहर वतन से हरगज़ जो कान में न आयें ॥ ६ ॥

है हम को जानो दिल से अपना वतन प्यारा ।
अच्छा वह दिन है उस की खिदमत में जो गुज़ारा ॥
कहते हैं हम वतन को आंखों का अपनी तारा ।
वह जान है हमारी, ईमान है हमारा ॥
हां मेहेर! यह सखुन है, दुन्या में सब ने माना ।
अपने वतन से बेहतर कोई नहीं ठिकाना ॥ ७ ॥

२९ कान भर रही या कानों को सुना रहीं ३० प्रेम भरी ३१ आवाज़ें ३२ कवि का नाम है ३३ बात, नसीहत है ३४ अच्छा, उत्तम

४ राग देश.

कभी हम भी वलन्द इक़वाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हर फन में रखते कमाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ १ ॥

पढ़ते थे जब हम वेद को, जानें थे सब के भेद को।
रखते न अपनी मसाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ २ ॥

पावन्द थे जब धर्म के, माहर थे अपने कर्मके।
रौशन सभी पुर जेलाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ३ ॥

जब से जेहालत आ गयी, तारीकी हर सूं छा गयी।
मुफलस हैं जो खुशहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥ ४ ॥

१ दबदबे वाले, बड़े तप वाले, २ अज्ञान ३ अन्धकार ४ तरफ

हाकम हैं जो महकूम थे, खादम हैं जो मखदूम थे।
शेर अब हुवे जो शृगाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ९ ॥

हालत दिगर गूं हो गयी, क़िसमत किशवर की सो गयी।
रोते हैं अब जो निहाल थे, तुम्हें याद हो कि न याद
हो ॥ ८ ॥

५. प्रजा, जिन पर हकूमत थी ६ नौकर ७ खिदमत कीया गया अर्थात मालक ८ दूसरी तरह ९ मुल्क १० खुश, आनन्द

---

८. भजन.

इक दिन राहे तरक्की में हम भी रहनमा थे।
अब लोग पूछते हैं नामो नशां हमारा ॥
यूनान मिसर रूमा इंगलैण्ड गाल जरमन।
शागिर्द इक ज़माने में था जहां हमारा।

१ लीडर, रास्ता दिखाने वाला २ मुल्कों के नाम हैं

दुन्या में हो रहा था भारत वर्ष का चर्चा।
सब की .ज़ुबान् पर था लुत्फ़े बियान् हमारा।
गोतम व्यास भीषम थे नामवर यहीं के।
अर्जुन सा तीर अफगन था इक जवान् हमारा॥
रौनक़ चमन की सारी फसले खज़ां ने लूटी।
वीरान हो गया है सब गुलिस्तान् हमारा॥
हां अहले हिन्द उठो, हालत ज़रा संभालो।
नक़शा हुवा दिगर गूं है वे गुमान् हमारा॥
राहत की गर तलब है, सब इत्तफाक़ करलो।
छोड़ो नफाक़ इसी में होगा ज़ियान् हमारा॥

३ हमारे ही ज़िकर के गीत अथाव महिमा ४ तीर फेंकने वाला ५ जवान मर्द, वहादर ५ वाग़ की वहार ६ भारत वर्षी ७ उलट, दूसरी तरह का ८ आराम, आनन्द ९ जिज्ञासा १० नुक़्सान

६. लौनी.

(टेक) आज्ञा में जिन की जहान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।

सात द्वीप नवखंड बीच में जिन का मान था हमीं तो हैं॥

(चौंक) चौदाः[1] विद्या जो निधाने[2] थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।

जिन से चतुर हैं पशू हैवान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

वेदों का मानें प्रमाण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।

बांचे है मिथ्या .कुरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

सब विद्याओं की जो खान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ १॥ सात द्वीप०

ब्रह्मण यहां पूरे गुणवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।

१ चौदह विद्यामें चतुर अर्थात चौंदह विद्या के खज़ाने वाले २ कान, मंबा, खज़ाना

मूर्ख हूये जाती अभिमान में, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
सब का जो चाहें कल्याण थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
ठग्गी की धरली दुकान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या का करते थे दान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ २ ॥ सात द्वीप०
ऋषी मुनी जहां ज्ञान वान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भंग चर्स में हैं गलतां[३] अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
जिन का देव सर्व शक्तिमान था, उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिन का इष्ट है विषय ध्यान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं।
संसकृत जिन की अपनी ज़बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं॥ ३ ॥ सात०
आकाश में चलते विमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
रेल देख हो गये हैरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

३ फंसे हुवे, डूबे हूवे

भीम सेन बाली बलवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
घुटनों पर रख उठें हाथ अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
कृष्ण, राम, भीषम समान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं
॥ ४ ॥ सात०

ब्रह्मचर्य की जिन को बान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं।
बल वीर्य खोय नातवाँ हुवे, ऐसे नादान हमीं तो हैं॥
लक्षसिंहारी जिन के बान थे उन की कुल में हमीं तो हैं।
चूहे का नहीं कटे कान अब, ऐसी सन्तान हमीं तो हैं॥
अंगद सुग्रीव हनूमान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
५ ॥ सात०

देश उन्नति का था ध्यान जिन्हें, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भारत में कर बैठे हान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
प्राणियों पर देते प्राण जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
मद मांस को करे पान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं॥

४ कमजोर ५ लक्ष सिंहों को मारने वाले

गौ जान पर जिनकी जान थी, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ६ ॥ सात०

आर्यावर्त जिन का स्थान था, उन की कुलमें हमीं तो हैं।
जिन का स्थान हिन्दुस्थान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
बड़े बड़े यहां धनवान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं।
भोजन बिन हो रहे विरान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
विद्या में करते शिनान थे, उन की कुल में हमीं तो हैं ॥ ७ ॥ सात०

सत उपदेश करते थे गान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
काक शास्त्र करें बिखान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
त असत लेते थे छान जो, उन की कुल में हमीं तो हैं।
सुन के सत जायें बुरा मान अब, उन की कुल में हमीं तो हैं॥
नँवलसिंह कहे वेद धर्म पर धरे ध्यान फिर हम ही तो हैं ॥ ८ ॥ सात द्वीप०

६ एक शास्त्र का नाम है जिसमें विषय भोग करने की नानाविधि लिखी हुई हैं अर्थात विषय भोग का शास्त्र ७ कवि का नाम है

७ भारत को सुना छोड़ के वह कहां गये महाराजे (टेक
(कली) गये राम लक्ष्मण कहां शूरवीर वलधारी
जिनके वल से पृथ्वि कांपे थी सारी
गये कहां युधिष्ठर भीम भीषम तपधारी
कहां परशुराम अरजन से शसत्र से खिलारी
कहां करण गये अभिमानी कहां गुरु गुविंद लासानी[1]
प्रताप सिंह वलवानी जिन की विख्यात[2] कहानी
(कीये काज उन्हों ने वडे, न मन में डरे।
युद्ध में लडे, नहीं मुंह मोड़ के ॥)
रण अन्दर हर दम गाजे, वह कहां गये महाराजे ॥१॥
कहां गये वसिष्ठ और व्यास से विद्याधर
कहां कनाद गोतम कपल जैमिनी मुनीवर
कहां पतंजल से ऋषी और पाराशर
जिन की कृपा से विद्या फैली घर घर

१ अद्वतीय, जिस की मानन्द कोई और न हो २ मशहूर, प्रसिद्ध

कहां गये पाणिनि भाई जिन रचदी अष्टाध्यायी
कहां गये कृष्ण सुखदाई, जो वेदक धर्मानुयायी
(गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बियान।
रहे नहीं यहां, वह नाता[२] तोड़ के ॥)
जा कर परलोक बिराजे ॥ वह कहां गये० ॥२॥
कहां हरिश्चंद्र से, राम गये सतवादी
दीये पुत्र स्त्री त्याग और राजादि
कहां गये दशरथ और जनक धर्मानुयायी
नहीं टरे वचन से प्यारी जान गंवाई
कहां शिव धधीज राजा नल, कहां मोर्ध्वज विक्रम शल
कहां दलीप अज रघू निर्मल, रहे बने धर्म में निश्चल
(अब क्या तदबीर बनायें, कहां से लायें।
मुफ्त चिल्लायें, मरें सिर फोड़ के ॥)
सब हो गये काज अकाजे ॥ कहां वह गये० ॥३॥

२ सम्बन्ध, रिश्ता: ४ धर्म के मुताबक़ चलने वाले ५ खराब बेकार, बुरे

क्षत्री कुल में होगये वेश्यागामी
दी डोर धर्म की छोड़ पाप की थामी
ब्रह्मण कुल जो ऋपी मुनीयों के नामी
वह होगये विद्या हीन और बहु दामी
संध्या और गुरुमंत्र विसारा, लगे अग्निहोत्र नहि पियारा
यूं भारत करे पुकारा, कुल डूबा सभी हमारा
(अब भी सोच मतहीन, बनो प्रवीर्ण।
गुरारी चीनं, दिलो जान जोड़ के ॥)
वेदों के बजाओ बाजे ॥ कहां वह गये० ॥४॥

६ कंचनी से विषय भोग करने वाले ७ भारे के टट्टू अर्थात बहुत दाम मज़दूरी ले कर काम करने वाले, या विद्या धन को छोड़ कर जड़ माया (दौलत) अर्थात रुपय अकट्ठा करने पर लगे हुवे ८ चतुर, चालाक ९ पाओ, अनुभव करो

---

८ राग—समा कैसा यह आया है (टेक)

न यारों सें रही यारी, न भाइयों में वफादारी।

महब्बत उठ गयी सारी, समां कैसा यह आया है॥ १ ॥
जिधर देखो भरी कुलफ़त, भुलादी सब ने है उल्फत।
बुरी सोबत बुरी संगत, समां कैसा यह आया है ॥ २ ॥
सभायें कीं बहुत जारी, बने खुद उन के अधिकारी।
न छोड़े कर्म बिभचारी, समां कैसा यह आया है ॥ ३ ॥
बहुत उमदाः कहें लैक्चर, मगर उलटा चलें उन पर।
अक़ल पर पड़ गये पत्थर, समां कैसा यह आया है ॥४॥
सचाई को छुपाते हैं, दिल औरों का दुःखाते हैं।
वृथा साचे कहाते हैं, समां कैसा यह आया है ॥५॥
नहीं व्यवहार की शुद्धि, विपर्यय हो रही बुद्धि।
विचारें मन नहीं कुछ भी, समां कैसा यह आया है ॥६॥
चढ़ा है पाप की छाई, उपद्रव होवें हर जाई।
है इक को इक दुःखदाई, समां कैसा यह आया है ॥७॥
न जानें देश के वासी, बनें कब सत्य विश्वासी।

१ द्वेष २ सच्चे पुरुष ३ उलटी ४ हर जगह, सब तरफ

मिटे अब कैसे उदासी, समां कैसा यह आया है ॥८॥

---

९ रेखता

सत्य धर्म को छिपा दिया, किसने? नफ़ाक़ ने।
लोगों में छल फैला दिया, किसने? नफ़ाक़ ने॥ } टेक

यह देश इक ज़माने में दुनिया की शान था
अब सब से अदना[1] कर दिया, किस ने?॥ नफ़ाक़ ने० १

द्विज[2] धर्म कर्म करने में रहते थे नित मगन
अब उन को पस्त[3] कर दिया, किस ने?॥ नफ़ाक़ ने० २

हर घर में शब्द सुनते थे वेदों पुराण के
उन सब को ही मिटा दिया, किस ने?॥ नफ़ाक़ ने० ३

महाबली रावण को तो जानते सभी यहां
सब नाश उस का कर दिया, किस ने?॥ नफ़ाक़ ने० ४

१ तुच्छ, नीचा २ ब्राह्मन, क्षत्री, वैश्य जाति ३ गिरा दीया

आया है वक़्त अब तो हितैशी[4] बनो सभी
घर घर में दख़्ल कर लिया, किस ने? ॥ नफ़ाक़ ने० ५

४ आपस में हित (प्यार) करने वाले

---

१० सदाये आसमानी (आकाशवाणी)

हाये चेचक ने वाये चेचक ने।
इस अविद्या के हाये चेचक ने॥
कर दिया आत्मा क़रीबुल मर्ग।
क़ैदे कसरत में हो गया संसर्ग॥
चेहरा रोशन था साफ़ शीशा सा।
हो गया दाग़ दाग़ यह कैसा॥
मिहरे तलअत पै दाग़ आन पड़े।

१ माता नाम बिमारी को कहते हैं (small pox), यहां द्वैत रूपी बिमारी से मुराद है २ मृत्यु के तुल्य ३ नानत्व प्रच्छेद (बहुल्य नानापने की क़ैद में) ४ आवेश्य, प्रवेश ५ सूरज जैसे सुन्दर मुख पै

तारे सूरज पै कैसे आन चढ़े ॥
एक रस साफ़ रुये ज़ेबा था ।
दाग़े कसरत का लग गया धब्बा ॥
होगया पुष्प माल मांता का ।
यानि वाहन यह सीतला का हुवा ॥
मर्ज़ ऐसा बढ़ा यह मुतअद्दी ।
हिन्द सारे की खबर इसने ली ॥
वह दवा जिस से मर्ज़ जायेगा ।
गौ मांता के थन से आयेगा ॥
पुर ज़रूरी है वैक्सी नेशन ।
वरना मरती है यह अभी नेशन ॥
छोड़ दो तुम ज़री तअस्सब को ।

६ सुन्दर रूप ७ सीतला देवी की स्वारी ८ सवारी अर्थात गधा क्योंकि माता का वाहन गधा होता है ९ चढ़ जाने वाला, फैल जाने वाला १० इस जगह उपनिषद् से मुराद है ११ (अर्हंत का) टीका लगाना १२ कुल नसल, कौम १३ तर्फ़दारी

टीका लगवायेगा अब सब को ॥
गाये के थन से अँलफ[14] की निशतर ।
ला रही है अ़लाज, लीजे कर ॥
शहर हर इक में हर गली घर घर ।
टीका अद्वैत का लगा देना ॥
बच्चे लड़के बड़े हों या छोटे ।
यह सॅरायत[15] भरा दवा देना ॥
गर न मानें तो पकड़ कर बाज़ू ।
टीका यह तीनें[16] जा लगा देना ॥
दर्द भी होगा पीड़ भी होगी ।
डर का नोटिस[17] न तुम ज़रा लेना ॥

१४ अलफ इस जगह उस रसाले से मुराद है जिस को स्वामी रामजी महाराज ने अपनी कलम से लिखकर छपवाया था और जिस रसाले के अन्त में यह कविता दर्ज है १५ जल्दी अन्दर घुस (दाखल हो) जाने वाला १६ तीन जगह (यहां तीन शरीरों से मुराद है, कारण सूक्ष्म स्थूल) १७ ख्याल, ध्यान

"शुद्ध तू है" "निरञ्जनोसि[18] त्वम्" ।
लौरी रोते समय यह गा देना ॥
फिर जो चेचक के ज़ख़्म भर आयें ।
सीतला भी खुदा मना देना ॥
ग़ैर[19] बीनी-ओ-ग़ैर[20] दानी को ।
मार कर फूंक इक उड़ा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम तत्सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
प्यारे हिन्दुस्तान ! फलो फैलो ।
पौद[21] पौदे को ब्रह्म विद्या दो ॥
यह है वह आबे गंग[22] मर्दुमे[23] खेज़ ।
बूटे बूटे को कर जो दे ज़ेर[24] रेज़ ॥
वन है या बाग़ ख़ूबसूरत है ।

१८ तू कल्याण रूप है १९ द्वैत दृष्टि भेद दृष्टि २० भेद ज्ञान २१ बूटे बूटे को २२ गंगा जल २३ आंख जगाने वाला अथवा आंख खोलने वाला या पुरुषों के जगाने वाला २४ माळदार, हरा भरा

सब को इस आँब[२५] की ज़रूरत है ॥
रौशनी यह सदा मुबारक है ।
जान सब की है, यह मुबारक है ॥
सैर्व[२६] हो गुल, ग्याँह[२७], गेन्दुम[२८] हो ।
रौशनी बिन तो नाक में दम हो ॥
सिफला पॅन[२९], दास पन, कमीना पन! ।
छोड़ दे हिंद और चलना बन ॥
काशी मक्का युरुशलम[३०] पैरस ।
रूस अफरीका अम्रिका फारस ॥
बैहरो बॅर[३१], तूॅल[३२] वल्दो अर्ज़[३३] बैल्द ।
और मरीखे[३४] सुंबों माहे ज़ंद[३५] ॥
कुॅतब[३६] तारा, फॅलक[३७] के कुल अंजम[३८] ।

२५ पानी २६ सरु वृक्ष का नाम है २७ घास २८ गेहूं अनाज २९ कमीना पन, कंजूसी ३० ईसायों का तीरथ ३१ खुश्की और तरी (पृथ्वि समुद्र) ३२ तमाम लम्बाई ३३ तमाम चौड़ाई ३४ मंगल तारा ३५ वसन्त ऋतु का मास ३६ ध्रुव ३७ आकाश ३८ तारे

काले अजराम जो न जानें हम ॥
यह जगह, वह जगह, कहीं, हर जा।
वह जो था, और है, कभी होगा ॥
मुझ में सब कुछ है, सब मुझी में है।
मैं ही सब कुछ हूं, ग़ैरे मन लाशै ॥
ऐ शिखर सीमें तन हिमालय की! ।
ब्रह्म विद्या की तू ही माता थी ॥
गोद तेरी हरी रहे हर दम।
गिरजा पैहलू में खेलती हर दम ॥
मौनसूनों को यह बता देना।
इन्द्र और वरुण को सुना देना ॥
वर्षा जब देश में करेंगे जा।

३९. आकाश के पदारथ ४० मेरे बिना सब नाचीज़ है अर्थात मेरे बग़ैर कुछ नहीं ४१ चान्दी के तन वाली अर्थात बर्फ से ढकी हुई हिमालय की चोटी ४२ पार्वती, ब्रह्म विद्या से मुराद है ४० ग्रीष्म ऋतु में जो तूफ़ान वायु का होता है (Mon soons)

नाज में यह असर खपा देना ॥
चाख भी ले जो नाज मेवों को ।
नशा वहदत[44] में मस्त फ़ौरन हो ॥
खुद बखुद उस से यह कहा देना ।
शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐ सँबा[45]! जा गुलों की मेहफ़ल में ।
शेर मर्दों के दल में बादल में ॥
चौंक उट्ठें जो तेरी आहट[46] से ।
कान में उन के सरसराहट से ॥
चुपके से राँज़[47] यह सुना देना ।
शक शुभाः एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।

४४ अद्वैत ४५ पर्वा की वायू (प्रातःकाल की वायू) ४६ आवाज़ ४७ गुह्य भेद

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥

बिजली ! जा कर जहान पर कौंदो।

तीराः[48] रवानो को जगमगा तुम दो ॥

दमक[49] कर फिर यह तुम दखा देना।

शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥

कूक कैलास से उठा है ओम् ।

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥

द्वैत के, पक्षपात के, भरम के ।

कड़क कर रौंदे ! दो छुड़ा छक्के ॥

गर्ज कर फिर यह तुम सुना देना ।

शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥

कूक कैलास से उठा है ओम् ।

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥

जाओ जुंग[50] जुग जीयोगी गंगा जी ।

४८ अंधेरी कोठी में रहनेवाले ४९ बीजली ५० युग से मुराद है.

ले अगर घूंट कोई जल का पी ॥
उस के हर रोम में घसा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गाओ वेदो ! मेना मेरी गाओ ।
जाओ जीते रहो, सदा जाओ ॥
ऐहले टिट बिट हो, कोई पंडित हो ।
भक्ति तुमरी सदा अखंडित हो ॥
खैंच कर कान यह पढ़ा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
ऐहले अख़बार ! अपने पेपर्ज़ पर ।
कूक कैलास की छपा देना ॥

५१ तारीफ़ ५२ वर्तमान काल का पढ़ा हुवा पर्चा ५३ अख़बारों में.

ऐहले तालीम![54] मदरस्सों में तुम ।
बच्चों कच्चों को यह पिला देना ॥
नौजवान! हिन्दुओं के जलसों पर ।
कूक से मन के सब जगा देना ॥
चौक, मन्दर में, रेल में जाकर ।
ऊंचे पञ्चम का सुर से गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
रिश्ता नाता क़रीबी सम्बंधी सब ।
शादी जलसे पै हों अकट्ठे जब ॥
शादी जोयां[55] हों, हेच दुन्या में ।
भूल बैठे हों यह कि "हूं क्या मैं" ॥
चोट नक़्क़ारे पर लगा देना ।
शक शुभाः एकदम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।

५४ ऐ देखनेवालो ५५ ब्याह करनेवाले, आनन्द ढूंढनेवाले.

ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
जाने मन ! वक्ते नज़ा, वाल्द को ।
पाठ गीता का यह सुना देना ॥
" तत्त्वमसि " फूंक कान में देना ।
" तू खुदाई " का दम लगा देना ॥
बैठ पैहलू में वार्अदब यह कूक ।
आह में खूब पिस पिसा देना ॥
ढल आंसू में करके फिर इस को ।
सीने पर बाप के गिरा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
मौत पर यह सबक़ सुना देना ।
मातमी मुर्दा दिल जला देना ॥
लाधड़क शंख यह बजा देना ।

५६ मृत्यु काल ५७ पिता ५८ तू वह यार खास है (तू ही वह मह है) ५९ तू खुदा है ६० .इज्ज़त के साथ

शक शुभा एक दम मिटा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
मरने लड़ने को फौज जाती हो ।
सामने मौत नज़र आती हो ॥
मिसल अर्जुन के दिल बढ़ा देना ।
मारू बाजे में गीत गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम तत् सत् है ओम तत् सत् ओम् ॥
घुर्की तुम को जो दे कभी नाफ़ैहम ।
तुम ने हरगीज़ भी छोड़ना मत रैहम ॥
धमकी गाली गलोच और अनबन ।
प्यारे ! खुद तू है, तू ही है दुशमन ॥
रमज़ आंखों से यह बता देना ।
हाथ में हाथ फिर मिला देना ॥

६१ ना समझदार, कमअक़ल.

कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
गर .अदालत में तुम को लेजायें ।
.ईसा सुक़ात तुम को ठेहरायें ॥
तुम तो खुद मस्तीये मुजस्सम[६२] हो ।
दावा अर्ज़ी क़सूर कैसे हो ॥
चीफ जस्टस का दिल हिलादेना ।
हां ! गला फाड़ कर यह गा देना ॥
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम् तत् सत् है ओम् तत् सत् ओम् ॥
नीज़ मक़तल[६३] में खुश खड़े होकर ।
हाज़िरीं[६४] के दिलों में घर कर कर ॥
उङ्गलियां उठ रहीं हों चारों तरफ ।
हर कोई रख रहा हो तुम पर हरफ़[६५] ॥

६२ आनन्द स्वरूप ६३ कतल (फांसी) की जगह ६४ मौजूद लोग ६५ नुक़्स अल्ज़ाम.

क़ातलों का भरम मिटा देना ।
"ग़ैर फ़ानी हूं मैं" दिखा देना ॥
काटा जाने को सिर झुकादेना ।
नारहे से गूंज इक उठा देना ॥
शक शुभाः एकदम मिटा देना
कूक कैलास से उठा है ओम् ।
ओम तत् सत् है ओम तत् सत् ओम् ॥

६६ न मरनेवाला, अमर ६७ गरज.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

इति रामवर्षा समाप्ताः

राम राम राम राम राम राम राम राम राम राम

भजनों की वर्णानुक्रमणिका.

अ

भजन. पृष्ठ.

भजन.	पृष्ठ.

ग

भजन. पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ

ज (ज्ञ)

भजन.	पृष्ठ.

द

भजन. पृष्ठ.

ध

न

भजन.	पृष्ठ

भजन.	पृष्ठ.

भजन.	पृष्ठ.

भजन. पृष्ठ.

ल

व

श

भजन	पृष्ठ

इति वर्णानुक्रमणिका समाप्तः